गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका

सितम्बर-2019

गुरुत्व ज्योतिष

गणेश चतुर्थी विशेष

NOT FOR SALE

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
सितम्बर 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ:
निर्विघ्नं कुरु मे देव: सर्वकार्येषु सर्वदा

हे लंबे शरीर और हाथी समान मुंख वाले गणेशजी, आप करोड़ों सूर्य के समान चमकीले हैं। कृपा कर मेरे सारे कामों में आने वाली बाधाओं विघ्नो को आप सदा दूर करते रहें।

गणपति शब्द का अर्थ हैं।

गण(समूह)+पति (स्वामी) = समूह के स्वामी को सेनापति अर्थात गणपति कहते हैं। मानव शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चार अन्तःकरण होते हैं। एवं इस शक्तिओं को जो शक्तियां संचालित करती हैं उन्हीं को चौदह देवता कहते हैं। इन सभी देवताओं के मूल प्रेरक भगवान श्रीगणेश हैं।

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक शुभकार्य शुभारंभ से पूर्व भगवान श्री गणेश जी की पूजा-अर्चना की जाती हैं । इस लिये ये किसी भी कार्य का शुभारंभ करने से पूर्व उस कार्य का "श्री गणेश करना" कहां जाता हैं। प्रत्यक शुभ कार्य या अनुष्ठान करने के पूर्व *"श्री गणेशाय नमः"* मंत्र का उच्चारण किया जाता हैं। भगवान गणेश को समस्त सिद्धियों के दाता माना गया है। क्योकि सारी सिद्धियाँ भगवान श्री गणेश में वास करती हैं।

भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के अति सुंदर महासागर हैं, तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं।

धार्मिक मान्यता के अनुशार भगवान श्री गणेशजी के पूजन-अर्चन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है, भगवान श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी सरलता से पूर्ण हो जाते हैं।
शास्त्रोक्त वचन से इस कल्युग में तीव्र फल प्रदान करने वाले भगवान गणेश और माता काली हैं। इस लिये कहां गया हैं।

कला चण्डीविनायकौ

अर्थात्: कलयुग में चण्डी और विनायक की आराधना सिद्धिदायक और फलदायी होता है।

धर्म शास्त्रोमें पंचदेवों की उपासना करने का विधान हैं।

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।। (शब्दकल्पद्रुम)

भावार्थ: - पंचदेवों कि उपासना का ब्रह्मांड के पंचभूतों के साथ संबंध है। पंचभूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से बनते हैं। और पंचभूत के आधिपत्य के कारण से आदित्य, गणनाथ(गणेश), देवी, रूद्र और केशव ये पंचदेव भी पूजनीय हैं। हर एक तत्त्व का हर एक देवता स्वामी हैं।

जो मनुष्य अपने जीवन में सभी प्रकार की रिद्धि-सिद्धि, सुख, समृद्धि और ऐश्वर्य को प्राप्त करने की कामना करता हैं, अपने जीवन में सभी प्रकार की सभी आध्यात्मिक-भौतिक इच्छाओं को पूर्ण करने की इच्छा रखता हैं, विद्वानों के मतानुशार उसे गणेश जी कि पूजा-अर्चना एवं आराधना अवश्य करनी चाहिये...

हिन्दू परंपरा में गणेशजी का पूजन अनादिकाल से चला आ रहा हैं,

इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्रों के अनुशार भी अशुभ ग्रह पीडा को दूर करने हेतु भगवान गणेश कि पूजा-अर्चना करने से समस्त ग्रहो के अशुभ प्रभावों को दूर होकर, शुभ फलों कि प्राप्ति होती हैं। इस लिये हिन्दू संस्कृति में भगवान श्री गणेशजी की पूजा का अत्याधिक महत्व बताया गया हैं।

हिन्दू पंचांग के अनुशार वैसे तो प्रत्येक मास की चतुर्थी को भगवान गणेशजी का व्रत किया जात है। लेकिन भाद्रपद की चतुर्थि व्रत का विशेष महत्व हिन्दू धर्म शास्त्रों में बताया गया है।

ऎसी मान्यता हैं की भाद्रपद की चतुर्थि के दिन जो श्रधालु व्रत, उपवास और दान आदि शुभ कार्य कर्ता है, भगवान श्रीगणेश की कृपा से उसे सौ गुना फल प्राप्त हो जाता हैं। व्यक्ति को श्री विनायक चतुर्थी करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

शास्त्रोक्त विधि-विधान से श्री गणेशजी का पूजन व व्रत करना अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

गणेश चतुर्थी पर चंद्र दर्शन निषेध होने कि पौराणिक मान्यता हैं। शास्त्रोंक्त वचन के अनुशार जो व्यक्ति इस दिन चंद्रमा को जाने-अन्जाने देख लेता हैं उसे मिथ्या कलंक लगता हैं। उस पर झूठा आरोप लगता हैं। विद्वानों के मतानुशार यदि जाने-अंजाने चंद्र दर्शन करलेता हैं तो उसे, कलंक से बचने के लिए साधक को भगवान श्री गणेश से अपनी गलती के परिहार के लिए भगवान श्री गणेश का पूजन वंदन करके क्षमा याचना करनी चाहिए।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर आप अपने जीवन में दिन प्रतिदिन अपने उद्देश्य कि पूर्ति हेतु अग्रणिय होते रहे आपकी सकल मनोकामनाएं पूर्ण हो एवं आपके सभी शुभ कार्य भगवान श्री गणेश के आशिर्वाद से बिना किसी संकट के पूर्ण होते रहे हमारी यहि मंगल कामना हैं......

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुसंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

गणेश पूजन हेतु शुभ मुहूर्त 02-सितम्बर-2019 (सोमवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार ब्रह्मांड में समय व अनंत आकाश के अतिरिक्त समस्त वस्तुएं मर्यादा युक्त हैं। जिस प्रकार समय का न ही कोई प्रारंभ है न ही कोई अंत है। अनंत आकाश की भी समय की तरह कोई मर्यादा नहीं है। इसका कहीं भी प्रारंभ या अंत नहींहोता। आधुनिक मानव ने इन दोनों तत्वों को हमेशा समझने का व अपने अनुसार इनमें भ्रमण करने का प्रयास किया हैं परन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

सामान्यतः मुहूर्त का अर्थ है किसी भी कार्य को करने के लिए सबसे शुभ समय व तिथि चयन करना। कार्य पूर्णतः फलदायक हो इसके लि, समस्त ग्रहों व अन्य ज्योतिष तत्वों का तेज इस प्रकार केन्द्रित किया जाता है कि वे दुष्प्रभावों को विफल कर देते हैं। वे मनुष्य की जन्म कुण्डली की समस्त बाधाओं को हटाने में व दुर्योगो को दबाने या घटाने में सहायक होते हैं।

शुभ मुहूर्त ग्रहो का ऐसा अनूठा संगम है कि वह कार्य करने वाले व्यक्ति को पूर्णतः सफलता की ओर अग्रस्त कर देता है।

हिन्दू धर्म में शुभ कार्य केवल शुभ मुहूर्त देखकर किए जाने का विधान हैं। इसी विधान के अनुसार श्रीगणेश चतुर्थी के दिन भगवान श्रीगणेश की स्थापना के श्रेष्ठ मुहूर्त आपकी अनुकूलता हेतु दर्शाने का प्रयास किया जा रहा हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार शुभ मुहूर्त देखकर किए गए कार्य निश्चित शुभ व सफलता देने वाले होते हैं।

***श्रेष्ठ समय दोपहर 11:05 से दोपहर 01:36 तक (अवधि 2 घण्टे 31 मिनट) ***

श्रीगणेश चतुर्थी के लिये (2 सितम्बर 2019 (सोमवार)

- प्रातः 06:03 से 07:37 तक अमृत
- सुबह 09:12 से 10:46 तक शुभ
- दोपहर 01:55 से 03:29 तक चर
- दोपहर 03:29 05:04 तक लाभ

स्थिर लग्न इष्ट पूजन हेतु सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं 2 सितम्बर को स्थिर लग्न

- सिंह लग्न प्रातः 04:54 से सुबह 07:10 तक रहेगा।
- तुला लग्न सुबह 09:27 से दोपहर 11:46 तक रहेगा।
- वृश्चिक लग्न दोपहर 11:46 से दोपहर 02:05 तक रहेगा।

अतः गणेश जी का पूजन करते समय यदि शुभ तिथि एवं लग्न का संयोग किया जाते तो यह अत्यंत शुभ फलप्रदायक होता हैं।

विशेष: विद्वानों के मतानुशार स्थिर लग्न वृश्चिक में करना शुभ होता हैं। जिस में भगवान श्रीगणेश प्रतिमा की स्थापना की जा सकती हैं। जानकारों का मानना हैं की गणेश चतुर्थी दोपहर में होने के कारण इसे महागणपति चतुर्थी भी कहां जायेगा। क्योंकि ज्योतिष के अनुशार वृश्चिक स्थिर लग्न हैं। स्थिर लग्न में किया गया कोई भी शुभ कार्य स्थाई होता हैं।

विद्वानो के मतानुशार शुभ प्रारंभ यानि आधा कार्य स्वतः पूर्ण।

श्री सन्तान सप्तमी व्रत 5-सितम्बर-2019 (बुधवार)

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री सन्तान सप्तमी व्रत कथा

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा- हे प्रभो! कोई ऐसा उत्तम व्रत बतलाइये जिसके प्रभाव से मनुष्यों के अनेकों सांसारिक दुःख और क्लेश दूर हो जाये वे पुत्र एवं पौत्रवान हो जाएं।

युधिष्ठिर की बात सुनकर भगवान श्रीकृष्ण बोले - हे राजन्! तुमने मनुष्यों के कल्याण हेतु बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है। मैं तुम्हें एक पौराणिक कथा सुनाता हूं तुम उसे ध्यानपूर्वक सुनो। एक समय लोमष ऋषि ब्रजराज की मथुरा में मेरे माता-पिता देवकी तथा वसुदेव के घर आए।

ऋषिराज को आया हुआ देख करके दोनों अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उनको उत्तम आसन पर बैठा कर उनका अनेक प्रकार से वन्दन और सत्कार किया। देवकी तथा वसुदेव की भक्तिपूर्वक ऋषि से प्रशन्न होकर लोमष ऋषि उनको कथा सुनाने लगे।

लोमष ने कहा कि - हे देवकी! दुष्ट दुराचारी पापी कंस ने तुम्हारे कई पुत्रों को पैदा होते ही मारकर तुम्हें पुत्रशोक दिया है।

इस दुःख से मुक्त होने के लिए तुम "संतान सप्तमी" का व्रत करो। इसी प्रकार राजा नहुष की पत्नी चंद्रमुखी भी दुःखी रहा करती थी। किन्त्य चंद्रमुखी ने "संतान सप्तमी" व्रत पूर्ण व्रत विधि विधान के साथ किया था। जिसके प्रताप से चंद्रमुखी के उसके भी पुत्र नहीं मरे और उसको उत्तम सन्तान का सुख प्राप्त हुआ। यह व्रत तुम्हें भी पुत्रशोक से मुक्त करेगा।

यह सुनकर देवकी ने हाथ जोड़कर मुनि से प्राथना की- हे ऋषिराज! कृपा मुझे व्रत का पूरा विधि-विधान बताने की कृपा करें ताकि मैं विधिपूर्वक व्रत सम्पन्न करूं और इस दुःख से छुटकारा पाउं।

लोमष ऋषि ने कहा कि - हे देवकी! अयोध्यापुरी का प्रतापी राजा नहुष थे। उनकी पत्नी चन्द्रमुखी अत्यन्त सुन्दर थीं। उनके नगर में विष्णुदत्त नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम रूपवती था। वह भी अत्यन्त रूपवती सुन्दरी थी।

रानी चंद्रमुखी तथा रूपवती में परस्पर घनिष्ठ प्रेम था। एक दिन वे दोनों सरयू नदी में स्नान करने के लिए गई। वहां उन्होंने देखा कि अन्य बहुत सी स्त्रियां सरयू नदी में स्नान करके निर्मल वस्त्र पहन कर एक मण्डप में पार्वती-शिव की प्रतिमा का विधिपूर्वक पूजन किया। रानी और ब्राह्मणी ने यह देख कर उन स्त्रियों से पूछा कि - बहनों! तुम यह किस देवता का और किस कारण से पूजन व्रत आदि कर रही हो। यह सुन कर स्त्रियों ने कहा कि हम "सन्तान सप्तमी" का व्रत कर रही हैं और हमने भगवान शिव-पार्वती का पूजन चन्दन अक्षत आदि से षोडषोपचार विधि से घागा बांधकर हमने संकल्प किया है कि जब तक जीवित रहेंगी, तब तक यह व्रत करती रहेंगी। यह पुण्य व्रत 'मुक्ताभरण व्रत' सुख तथा संतान देने वाला है।

स्त्रियों से "सन्तान सप्तमी" व्रत की कथा सुनकर रानी और ब्राह्मणी ने भी इस व्रत के करने का मन ही मन संकल्प किया और शिवजी के नाम का घागा बाँध लिया। ब्राह्मणी इस व्रत को नियम पूर्वक करती रही किन्तु घर पहुँचने पर रानी चन्द्रमुखी कभी व्रत का संकल्प को भूल जाती थी। फलतः मृत्यु के पश्चात रानी वानरी तथा ब्राह्मणी मुर्गी की योनि में पैदा हुई।

कालांतर में दोनों पशु योनि छोड़कर पुनः मनुष्य योनि में आई। रूपवती ने एक ब्राह्मण के यहां कन्या के रूप में जन्म लिया। इस जन्म में रानी का नाम ईश्वरी तथा ब्राह्मणी का नाम भूषणा था। भूषणा का विवाह राजपुरोहित अग्निमुखी के साथ हुआ। इस जन्म में भी उन दोनों में बड़ा प्रेम हो गया।

व्रत के प्रभाव से भूषण देवी अत्यंत सुन्दर थी उसे अत्यन्त सुन्दर सर्वगुण सम्पन्न धर्मवीर, कर्मनिष्ठ, सुशील स्वभाव वाले आठ पुत्र उत्पन्न हुए। व्रत भूलने के कारण रानी इस जन्म में भी संतान सुख से वंचित रही। प्रौढ़ावस्था में उसने एक गूंगा बहरा बुद्धिहीन अल्प आयु

वाला एक पुत्र हुआ, जिस कारण वह भी नौ वर्ष का होकर मर गया।

रानी के पुत्रशोक की संवेदना के लिए एक दिन भूषणा उससे मिलने गई। ब्राह्मणी ने रानी का संताप दूर करने के निमित्त अपने आठों पुत्र रानी के पास छोड दिए। उसे देखते ही रानी के मन में ईर्ष्या पैदा हुई तथा उसके मन में पाप उत्पन्न हुआ। उसने भूषणा को विदा करके उसके पुत्रों को भोजन के लिए बुलाया और भोजन में विष मिला दिया। परन्तु भूषणा के व्रत के प्रभाव से तथा भगवान शंकर की कृपा से पुत्रों को कोई हानी नहीं हुई।

इससे रानी को और भी अधिक क्रोध आया। उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि भूषणा के पुत्रों को पूजा के बहाने यमुना के किनारे ले जाकर गहरे जल में धकेल दिया जाए। किन्तु पुनः भगवान शिव और माता पार्वती की कृपा से इस बार भी भूषणा के बालक व्रत के प्रभाव से बच गए। फिर रानी ने जल्लादों को बुलाकर आज्ञा दी कि ब्राह्मण बालकों को वध-स्थल पर ले जाकर मार डालो किन्तु जल्लादों द्वारा बेहद प्रयास करने पर भी बालक न मर सके। यह समाचार सुनकर रानी आश्चर्य चकित हो गई और इस रहस्य का पता लगाने उसने भूषणा को बुलाकर सारी बात बताई और फिर क्षमायाचना करके उससे पूछा- किस कारण तुम्हारे बच्चे नहीं मर पाए?

भूषणा बोली- क्या आपको पूर्वजन्म की बात स्मरण नहीं है? रानी ने आश्चर्य से कहा- नहीं, मुझे तो कुछ याद नहीं है?

तब उसने कहा- सुनो, पूर्वजन्म में तुम राजा नहुष की रानी थी और मैं तुम्हारी सखी। हम दोनों ने एक बार भगवान शिव का घागा बांधकर संकल्प किया था कि जीवन-पर्यन्त संतान सप्तमी का व्रत करेंगी। किन्तु दुर्भाग्यवश तुम सब भूल गईं और व्रत की अवहेलना होने झूठ बोलने का दोष विभिन्न योनियों में जन्म लेती हुई तू आज भी भोग रही है।

मैंने इस व्रत को पूर्ण विधि-विधान सहित नियम पूर्वक सदैव किया और आज भी करती हूं।

लोमष ऋषि ने कहा- हे देवकी! भूषणा ब्राह्मणी के मुख से अपने पूर्व जन्म की कथा तथा व्रत संकल्प इत्यादि सुनकर रानी को पुरानी बातें याद आ गई और पश्चाताप करने लगी तथा भूषणा ब्राह्मणी के चरणों में पड़कर क्षमा याचना करने लगी और भगवान शंकर पार्वती जी की अपार महिमा के गीत गाने लगी। यह सब सुनकर रानी ने भी विधिपूर्वक संतान सुख देने वाला यह मुक्ताभरण व्रत रखा। तब व्रत के प्रभाव से रानी पुनः गर्भवती हुई और एक सुंदर बालक को जन्म दिया। उसी समय से पुत्र-प्राप्ति और संतान की रक्षा के लिए यह व्रत प्रचलित है।

भगवान शंकर के व्रत का ऐसा प्रभाव है कि पथ भ्रष्ट मनुष्य भी अपने पथ पर अग्रसर हो जाता है और अनन्त ऐश्वर्य भोगकर मोक्ष को प्राप्त करता है। लोमष ऋषि ने फिर कहा कि - देवकी! इसलिए मैं तुमसे भी कहता हूं कि तुम भी इस व्रत को करने का संकल्प अपने मन में करो तो तुमको भी सन्तान सुख मिलेगा। इतनी कथा सुनकर देवकी हाथ जोड कर लोमष ऋषि से पूछने लगी- हे ऋषिराज! मैं इस पुनीत व्रत को अवश्य करूंगी, किन्तु आप इस कल्याणकारी एवं सन्तान सुख देने वाले व्रत का विधि-विधान, नियम आदि विस्तार से समझाएं।

यह सुनकर ऋषि बोले- हे देवकी! यह पुनीत व्रत भादों भाद्रपद के महीने में शुक्लपक्ष की सप्तमी के दिन किया जाता है। उस दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर किसी नदी अथवा कुएं के पवित्र जल में स्नान करके निर्मल वस्त्र धारण करने चाहिए। श्री शंकर भगवान तथा माता पार्वती जी की मूर्ति की स्थापना करें। इन प्रतिमाओं के सम्मुख सोने, चांदी के तारों का अथवा रेशम का एक गंडा बनावें उस गंडे में सात गांठें लगानी चाहिए। इस गंडे को धूप, दीप, अष्ट गंध से पूजा करके अपने हाथ में बांधे और भगवान शंकर से अपनी कामना सफल होने की प्रार्थना करें।

तदन्तर सात पुआ बनाकर भगवान को भोग लगावें और सात ही पुवे एवं यथाशक्ति सोने अथवा चांदी की अंगूठी बनवाकर इन सबको एक तांबे के पात्र में रखकर और उनका शोडषोपचार विधि से पूजन करके किसी सदाचारी, धर्मनिष्ठ, सुपात्र ब्राह्मण को दान देवें। उसके पश्चात सात पुआ स्वयं प्रसाद के रूप में ग्रहण करें।

इस प्रकार इस व्रत का पारायण करना चाहिए। प्रतिसाल भाद्रपद की शुक्लपक्ष की सप्तमी के दिन, हे देवकी! इस व्रत को इस प्रकार नियम पूर्व करने से समस्त पाप नष्ट होते हैं और भाग्यशाली संतान उत्पन्न होती है तथा अन्त में शिवलोक की प्राप्ति होती है।

हे देवकी! मैंने तुमको सन्तान सप्तमी का व्रत सम्पूर्ण विधान विस्तार सहित वर्णन किया है। उसको अब तुम नियम पूर्वक करो, जिससे तुमको उत्तम सन्तान उत्पन्न होगी। इतनी कथा कहकर भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मावतार युधिष्ठिर से कहा कि - लोमष ऋषि इस प्रकार हमारी माता देवकी को शिक्षा देकर चले गए। ऋषि के कथनानुसार हमारी माता देवकी ने इस व्रत को नियमानुसार किया जिसके प्रभाव से हम उत्पन्न हुए।

यह व्रत विशेष रूप से स्त्रियों के लिए कल्याणकारी है ही परन्तु पुरुषों को भी समान रूप से कल्याण दायक है। सन्तान सुख देने वाला तहा पापों का नाश करने वाला यह उत्तम व्रत है जिसे स्वयं भी करें तथा दूसरों से भी करावें। इस व्रत को नियम पूर्वक करने से भगवान शिव-पार्वती कृपा से निश्चय ही अमरपद पद प्राप्त करके अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है।

संतान सप्तमी का व्रत पूजन:

संतान सप्तमी व्रत पुत्र प्राप्ति, पुत्र रक्षा तथा पुत्र अभ्युदय के लिए भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को किया जाता है। इस व्रत का विधान दोपहर तक रहता है। स्त्रीयां देवी पार्वती का पूजन करके पुत्र प्राप्ति तथा उसके अभ्युदय का वरदान माँगती हैं।

व्रत विधान:

- ❖ प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। दोपहर को चौक पूर कर चंदन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी तथा नारियल आदि से शिव-पार्वती का पूजन करें।
- ❖ इस दिन नैवेद्य भोग के लिए खीर-पूरी तथा गुड़ के पुए रखें।
- ❖ रक्षा के लिए शिवजी को धागा भी अर्पित करें।
- ❖ इस धागे को शिवजी के वरदान के रूप में लेकर उसे धारण करके व्रतकथा का श्रवण करें।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

पद्मा (परिवर्तिनी) एकादशी व्रत 09-सितम्बर-2019 (सोमवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पद्मा (परिवर्तनी) एकादशी व्रत कथा

भाद्रपद : शुक्ल एकादशी

एक बार युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! भाद्रपद शुक्ल एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है ?" व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **पद्मा (परिवर्तिनी) एकादशी तथा इसे वामन एकादशी** से भी जाना जाता है। अब आप शांतिपूर्वक इस व्रतकी कथा सुनिए। इसका यज्ञ करने से ही वाजपेयी यज्ञ / अनन्त यज्ञ का फल मिलता है। इस पुण्य, स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली तथा सब पापों का नाश करने वाली, उत्तम एकादशी का माहात्म्य मैं तुमसे कहता हूँ तुम ध्यानपूर्वक सुनो। जो मनुष्य पापनाशक इस कथा को पढ़ते या सुनते हैं, उनको हजार अश्वमेध यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है।

पापियों के पाप नाश करने के लिए इससे बढ़कर और कोई सरल उपाय नहीं। जो मनुष्य इस एकादशी के दिन मेरे वामन रूप की पूजा करता है, उससे तीनों लोक पूज्य होते हैं। अत: मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य को इस व्रत को अवश्य करना चाहिए।

जो वामन भगवान का कमल से पूजन करते हैं, वे अवश्य उनके के समीप जाते हैं। जिस मनुष्य ने भाद्रपद शुक्ल एकादशी को व्रत और पूजन किया, उसने ब्रह्मा, विष्णु सहित तीनों लोकों के पूजन के समान फल की प्राप्ति होती हैं। अत: एकादशी का व्रत अवश्य करना चाहिए। इस दिन भगवान एक ओर से दूसरी ओर करवट लेते हैं, इसलिए इसको परिवर्तिनी एकादशी कहते हैं।

मोक्षप्रदा
पद्मा
एकादशी

भगवान के वचन सुनकर युधिष्ठिर बोले कि भगवान! मुझे अतिउत्सुकता हो रही है कि आप किस प्रकार सोते और करवट लेते हैं तथा किस तरह राजा बलि को बाँधा और वामन रूप रखकर क्या-क्या लीलाएँ कीं? चातुर्मास के व्रत की क्या विधि है तथा आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्तव्य है। वह सब आप मुझसे विस्तार से बताइए।

श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे राजन! अब आप सब पापों को नष्ट करने वाली कथा का श्रवण करें। त्रेतायुग में "बलि" नामक एक दैत्य था। वह मेरा परम भक्त था। विविध प्रकार के वेद सूक्तों से मेरा पूजन किया करता था और नित्य ही ब्राह्मणों का पूजन तथा यज्ञ का आयोजन करता था, लेकिन इंद्र से द्वेष के कारण उसने इंद्रलोक तथा सभी देवताओं को जीत लिया।

इस कारण सभी देवता एकत्र होकर सोच-विचारकर मेरे पास आए। बृहस्पति सहित इंद्रादिक देवता मेरे के निकट आकर और नतमस्तक होकर वेद मंत्रों द्वारा मेरा पूजन और स्तुति करने लगे। अत: देवताओं के आग्रह पर मैंने वामन रूप धारण करके पाँचवाँ अवतार लिया और फिर अत्यंत तेजस्वी रूप से राजा बलि को जीत लिया।

इतनी वार्ता सुनकर राजा युधिष्ठिर बोले कि हे भगवान! आपने वामन रूप धारण करके उस महाबली दैत्य को किस प्रकार जीता? श्रीकृष्ण कहने लगे- मैंने वामन रूपधारण कर बलि से तीन पग भूमि की याचना करते हुए कहा "ये मुझको तीन लोक के समान है" और हे राजन यह तुमको अवश्य ही देनी होगी। इससे तुम्हें तीन लोक दान का फल प्राप्त होगा"।

राजा बलि ने इसे तुच्छ याचना समझकर तीन पग भूमि का संकल्प मुझको दे दिया और मैंने अपने

त्रिविक्रम रूप को बढ़ाकर यहाँ तक कि भूलोक में पद, भुवर्लोक में जंघा, स्वर्गलोक में कमर, मह:लोक में पेट, जनलोक में हृदय, यमलोक में कंठ की स्थापना कर सत्यलोक में मुख, उसके ऊपर मस्तक स्थापित किया।

सूर्य, चंद्रमा आदि सब ग्रह गण, योग, नक्षत्र, इंद्रादिक देवता और शेष आदि सब नागगणों ने विविध प्रकार से वेद सूक्तों से प्रार्थना की। तब मैंने राजा बलि का हाथ पकड़कर कहा कि हे राजन! एक पद से पृथ्वी, दूसरे से स्वर्गलोक पूर्ण हो गए। अब तीसरा पग कहाँ रखूँ?

तब बलि ने अपना सिर झुका कर अनुरोध किया प्रभु आप के पद मेरे सिर पर रख दीजिए और मैंने अपना पैर उसके मस्तक पर रख दिया जिससे मेरा वह भक्त पाताल को चला गया।

पाताल लोक में राजा बलि ने विनीत की तो भगवान विष्णु ने कहा की- मैं तुम्हारे पास सदैव रहूँगा। भादो मास के शुक्ल पक्ष की 'परिवर्तनी' नाम की एकादशी के दिन मैं एक रूप से राजा बलि के पास रहूँगा और एक रूप से क्षीरसागर में शेषनाग पर शयन करता रहूँगा।" इस एकादशी के दिन भगवान विष्णु सोते हुए करवट बदलते हैं। इस दिन त्रिलोक के नाथ विष्णु भगवान की पूजा की जाती है। वामन एकादशी के **दिन चावल और दही सहित चांदी** का दान करने का विशेष विधि-विधान है। रात्रि को जागरण अवश्य करना चाहिए।

पौराणिक मान्यता के अनुशार जो मनुष्य विधिपूर्वक इस एकादशी का व्रत को करते हैं, वे सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाकर चंद्रमा के समान प्रकाशित होते हैं और यश को प्राप्त करते हैं।

***

इंदिरा एकादशी व्रत 25-सितम्बर-2019 (बुधवार)

संकलन गुरुत्व कार्यालय

इंदिरा एकादशी व्रत कथा

आश्विन : कृष्ण एकादशी

एक बार युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से पूछते हैं, हे भगवान! आश्विन कृष्ण एकादशी का क्या नाम है? इसमें किस देवता की पूजा की जाती है और इसका व्रत करने से क्या फल मिलता है ?" व्रत करने की विधि तथा इसका माहात्म्य कृपा करके कहिए। भगवान श्रीकृष्ण कहने लगे कि इस एकादशी का नाम **इंदिरा एकादशी** है। यह एकादशी पापों को नष्ट करने वाली तथा पितरों को अधोगति से मुक्ति देने वाली होती है। हे राजन! ध्यानपूर्वक इसकी कथा सुनो। इसके सुनने मात्र से ही वायपेय यज्ञ का फल मिलता है।

इंदिरा एकादशी

प्राचीनकाल में सतयुग के समय में महिष्मति नाम की एक नगरी में इंद्रसेन नाम का एक प्रतापी राजा धर्मपूर्वक अपनी प्रजा का पालन करते हुए शासन करता था। वह राजा पुत्र, पौत्र और धन आदि से संपन्न और विष्णु का परम भक्त था। एक दिन जब राजा सुखपूर्वक अपनी सभा में बैठा था तो आकाश मार्ग से महर्षि नारद उतरकर उसकी सभा में पधारे। राजा उन्हें देखते ही हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और विधिपूर्वक आसन व अर्घ्य दिया।

आनंद पूर्वक बैठकर नारदजी ने राजा से पूछा कि हे राजन! आपके सातों अंग कुशलपूर्वक तो हैं? तुम्हारी बुद्धि धर्म में और तुम्हारा मन विष्णु भक्ति में तो रहता है? देवर्षि नारद की ऐसी बातें सुनकर राजा ने कहा- हे महर्षि! आपकी कृपा से मेरे राज्य में सब कुशल-मंगल है तथा मेरे यहाँ यज्ञ कर्मादि सुकृत हो रहे हैं। आप कृपा करके अपने आगमन का कारण बताए।

तब ऋषि कहने लगे कि हे राजन! आप आश्चर्य देने वाले मेरे वचनों को सुनो।

मैं एक समय ब्रहमलोक से यमलोक को गया, वहाँ श्रद्धापूर्वक यमराज से पूजित होकर मैंने धर्मशील और सत्यवान धर्मराज की प्रशंसा की। उसी यमराज की सभा में महान ज्ञानी और धर्मात्मा तुम्हारे पिता को एकादशी का व्रत भंग होने के कारण देखा। उन्होंने संदेशा भेजा हैं, जो मैं तुम्हें कहता हूँ। उन्होंने कहा कि पूर्व जन्म में कोई विघ्न हो जाने के कारण मैं

यमराज के निकट रह रहा हूँ, सो हे पुत्र यदि तुम आश्विन कृष्णा इंदिरा एकादशी का व्रत मेरे निमित्त करो तो मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है।

इतना सुनकर राजा कहने लगा कि हे महर्षि आप इस व्रत की विधि मुझसे कहिए। नारदजी कहने लगे- आश्विन माह की कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर पुन: दोपहर को नदी आदि में जाकर स्नान करें।

फिर श्रद्धापूर्व पितरों का श्राद्ध करें और एक बार भोजन ग्रहण करें। प्रात:काल होने पर एकादशी के दिन दातून आदि करके स्नान करें, फिर व्रत के नियमों को भक्तिपूर्वक ग्रहण करता हुआ प्रतिज्ञा करें कि 'मैं आज संपूर्ण भोगों को त्याग कर निराहार एकादशी का व्रत करूँगा।

हे प्रभु! हे पुंडरीकाक्ष! मैं आपकी शरण हूँ, आप मेरी रक्षा कीजिए, इस प्रकार नियमपूर्वक शालिग्राम की मूर्ति के आगे विधिपूर्वक श्राद्ध करके योग्य ब्राह्मणों को फलाहार का भोजन कराएँ और दक्षिणा दें। पितरों के श्राद्ध से जो बच जाए उसको सूँघकर गौ को दें तथा धूप, दीप, गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि सब सामग्री से ऋषिकेश भगवान का पूजन करें।

रात में भगवान के निकट जागरण करें। इसके पश्चात द्वादशी के दिन प्रात:काल होने पर भगवान का पूजन करके ब्राह्मणों को भोजन कराएँ। भाई-बंधुओं, स्त्री और पुत्र सहित आप भी मौन होकर भोजन करें। नारदजी कहने लगे कि हे राजन! इस विधि से यदि तुम आलस्य रहित होकर इस एकादशी का व्रत करोगे तो तुम्हारे पिता अवश्य ही स्वर्गलोक को जाएँगे। इतना कहकर नारदजी अंतर्ध्यान हो गए।

नारदजी के कथनानुसार राजा द्वारा अपने बाँधवों तथा दासों सहित व्रत करने से आकाश से पुष्पवर्षा हुई और उस राजा का पिता गरुड़ पर चढ़कर विष्णुलोक को गया। राजा इंद्रसेन भी एकादशी के व्रत के प्रभाव से निष्कंटक राज्य करके अंत में अपने पुत्र को सिंहासन पर बैठाकर स्वर्गलोक को गया।

हे युधिष्ठिर! यह इंदिरा एकादशी के व्रत का माहात्म्य मैंने तुमसे कहा। इसके पढ़ने और सुनने से मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं और सब प्रकार के भोगों को भोगकर बैकुंठ को प्राप्त होते हैं।

***

हिन्दू देवताओं में सर्वप्रथम पूजनीय श्री गणेशजी

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक शुभकार्य करने के पूर्व भगवान श्री गणेश जी की पूजा की जाती हैं इसी लिये ये किसी भी कार्य का शुभारंभ करने से पूर्व कार्य का "श्री गणेश करना" कहा जाता हैं। एवं प्रत्यक शुभ कार्य या अनुष्ठान करने के पूर्व *"श्री गणेशाय नमः"* का उच्चारण किया जाता हैं। गणेश को समस्त सिद्धियों को देने वाला माना गया है। सारी सिद्धियाँ गणेश में वास करती हैं।

इसके पीछे मुख्य कारण हैं की भगवान श्री गणेश समस्त विघ्नों को टालने वाले हैं, दया एवं कृपा के अति सुंदर महासागर हैं, एवं तीनो लोक के कल्याण हेतु भगवान गणपति सब प्रकार से योग्य हैं। समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करने वाले गणेश विनायक हैं। गणेशजी विद्या-बुद्धि के अथाह सागर एवं विधाता हैं।

भगवान गणेश को सर्व प्रथम पूजे जाने के विषय में कुछ विशेष लोक कथा प्रचलित हैं। इन विशेष एवं लोकप्रिय कथाओं का वर्णन यहा कर रहें हैं।

इस के संदर्भ में एक कथा है कि महर्षि वेद व्यास ने महाभारत को से बोलकर लिखवाया था, जिसे स्वयं गणेशजी ने लिखा था। अन्य कोई भी इस ग्रंथ को तीव्रता से लिखने में समर्थ नहीं था।

सर्वप्रथम कौन पूजनीय हो?

कथा इस प्रकार हैं : तीनो लोक में सर्वप्रथम कौन पूजनीय हो?, इस बात को लेकर समस्त देवताओं में विवाद खडा हो गया। जब इस विवादने बडा रुप धारण कर लिये तब सभी देवता अपने-अपने बल बुद्धिअ के बल पर दावे प्रस्तुत करने लगे। कोई परीणाम नहीं आता देख सब देवताओं ने निर्णय लिया कि चलकर भगवान श्री विष्णु को निर्णायक बना कर उनसे फैसला करवाया जाय।

सभी देव गण विष्णु लोक मे उपस्थित हो गये, भगवान विष्णु ने इस मुद्दे को गंभीर होते देख श्री विष्णु ने सभी देवताओं को अपने साथ लेकर शिवलोक में पहुच गये। शिवजी ने कहा इसका सही निदान सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी हि बताएंगे। शिवजी श्री विष्णु एवं अन्य देवताओं के साथ मिलकर ब्रह्मलोक पहुचें और ब्रह्माजी को सारी बाते विस्तार से बताकर उनसे फैसला करने का अनुरोध किया। ब्रह्माजी ने कहा प्रथम पूजनीय वहीं होगा जो जो पूरे ब्रह्माण्ड के तीन चक्कर लगाकर सर्वप्रथम लौटेगा।

समस्त देवता ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाने के लिए अपने अपने वाहनों पर सवार होकर निकल पड़े। लेकिन, गणेशजी का वाहन मूषक था। भला मूषक पर सवार हो गणेश कैसे ब्रह्माण्ड के तीन चक्कर लगाकर सर्वप्रथम लौटकर सफल होते। लेकिन गणपति परम विद्या-बुद्धिमान एवं चतुर थे।

गणपति ने अपने वाहन मूषक पर सवार हो कर अपने माता-पित कि तीन प्रदक्षिणा पूरी की और जा पहुँचे निर्णायक ब्रह्माजी के पास। ब्रह्माजी ने जब पूछा कि वे क्यों नहीं गए ब्रह्माण्ड के चक्कर पूरे करने, तो गजाननजी ने जवाब दिया कि माता-पित में तीनों लोक, समस्त ब्रह्माण्ड, समस्त तीर्थ, समस्त देव और समस्त पुण्य विद्यमान होते हैं।

अतः जब मैंने अपने माता-पित की परिक्रमा पूरी कर ली, तो इसका तात्पर्य है कि मैंने पूरे ब्रह्माण्ड की प्रदक्षिणा पूरी कर ली। उनकी यह तर्कसंगत युक्ति स्वीकार कर ली गई और इस तरह वे सभी लोक में सर्वमान्य 'सर्वप्रथम पूज्य' माने गए।

लिंगपुराण के अनुसार (105। 15-27) – एक बार असुरों से त्रस्त देवतागणों द्वारा की गई प्रार्थना से भगवान शिव ने सुर-समुदाय को अभिष्ट वर देकर आश्वस्त किया। कुछ ही समय के पश्चात तीनो लोक के देवाधिदेव महादेव भगवान शिव का माता पार्वती के सम्मुख परब्रह्म स्वरूप

गणेश जी का प्राकट्य हुआ। सर्वविघ्नेश मोदक प्रिय गणपतिजी का जातकर्मादि संस्कार के पश्चात् भगवान शिव ने अपने पुत्र को उसका कर्तव्य समझाते हुए आशीर्वाद दिया कि जो तुम्हारी पूजा किये बिना पूजा पाठ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्मों का अनुष्ठान करेगा, उसका मंगल भी अमंगल में परिणत हो जायेगा। जो लोग फल की कामना से ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र अथवा अन्य देवताओं की भी पूजा करेंगे, किन्तु तुम्हारी पूजा नहीं करेंगे, उन्हें तुम विघ्नों द्वारा बाधा पहुँचाओगे।

जन्म की कथा भी बड़ी रोचक है।

गणेशजी की पौराणिक कथा

भगवान शिव कि अन उपस्थिति में माता पार्वती ने विचार किया कि उनका स्वयं का एक सेवक होना चाहिये, जो परम शुभ, कार्यकुशल तथा उनकी आज्ञा का सतत पालन करने में कभी विचलित न हो। इस प्रकार सोचकर माता पार्वती नें अपने मंगलमय पावनतम शरीर के मैल से अपनी माया शक्ति से बाल गणेश को उत्पन्न किया।

एक समय जब माता पार्वती मानसरोवर में स्नान कर रही थी तब उन्होंने स्नान स्थल पर कोई आ न सके इस हेतु अपनी माया से गणेश को जन्म देकर 'बाल गणेश' को पहरा देने के लिए नियुक्त कर दिया।

इसी दौरान भगवान शिव उधर आ जाते हैं। गणेशजी शिवजी को रोक कर कहते हैं कि आप उधर नहीं जा सकते हैं। यह सुनकर भगवान शिव क्रोधित हो जाते हैं और गणेश जी को रास्ते से हटने का कहते हैं किंतु गणेश जी अड़े रहते हैं तब दोनों में युद्ध हो जाता है। युद्ध के दौरान क्रोधित होकर शिवजी बाल गणेश का सिर धड़ से अलग कर देते हैं। शिव के इस कृत्य का जब पार्वती को पता चलता है तो वे विलाप और क्रोध से प्रलय का सृजन करते हुए कहती है कि तुमने मेरे पुत्र को मार डाला।

पार्वतीजी के दुःख को देखकर शिवजी ने उपस्थित गणको आदेश देते हुवे कहा सबसे पहला जीव मिले, उसका सिर काटकर इस बालक के धड़

पर लगा दो, तो यह बालक जीवित हो उठेगा। सेवको को सबसे पहले हाथी का एक बच्चा मिला। उन्होंने उसका सिर लाकर बालक के धड़ पर लगा दिया, बालक जीवित हो उठा।

उस अवसर पर तीनो देवताओं ने उन्हें सभी लोक में अग्रपूज्यता का वर प्रदान किया और उन्हें सर्व अध्यक्ष पद पर विराजमान किया।

स्कंद पुराण ब्रहमवैवर्तपुराण के अनुसार (गणपतिखण्ड) –

शिव-पार्वती के विवाह होने के बाद उनकी कोई संतान नहीं हुई, तो शिवजी ने पार्वतीजी से भगवान विष्णु के शुभफलप्रद 'पुण्यक' व्रत करने को कहा पार्वती के 'पुण्यक' व्रत से भगवान विष्णु ने प्रसन्न हो कर पार्वतीजी को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। 'पुण्यक' व्रत के प्रभाव से पार्वतीजी को एक पुत्र उत्पन्न हुवा।

पुत्र जन्म कि बात सुन कर सभी देव, ऋषि, गंधर्व आदि सब गण बालक के दर्शन हेतु पधारे। इन देव गणो में शनि महाराज भी उपस्थित हुवे। किन्तु शनिदेव ने पत्नी द्वारा दिये गये शाप के कारण बालक का दर्शन नहीं किया। परन्तु माता पार्वती के बार-बार कहने पर शनिदेव नें जेसे हि अपनी द्रष्टि शिशु बालके उपर पडी, उसी क्षण बालक गणेश का गर्दन धड़ से अलग हो गया। माता पार्वती के विलप करने पर भगवान् विष्णु पुष्पभद्रा नदी के अरण्य से एक गजशिशु का मस्तक काटकर लाये और गणेशजी के मस्तक पर लगा दिया। गजमुख लगे होने के कारण कोई गणेश कि उपेक्षा न करे इस लिये भगवान विष्णु अन्य देवताओं के साथ में तय किय कि गणेश सभी मांगलीक कार्यो में अग्रणीय पूजे जायेंगे एवं उनके पूजन के बिना कोई भी देवता पूजा ग्रहण नहीं करेंगे।

इस पर भगवान् विष्णु ने श्रेष्ठतम उपहारों से भगवान गजानन कि पूजा कि और वरदान दिया कि

सर्वाग्रे तव पूजा च मया दत्ता सुरोत्तम।
सर्वपूज्यश्च योगीन्द्रो भव वत्सेत्युवाच तम्।।

(गणपतिखं. 13। 2)

भावार्थ: 'सुरश्रेष्ठ! मैंने सबसे पहले तुम्हारी पूजा कि है, अतः वत्स! तुम सर्वपूज्य तथा योगीन्द्र हो जाओ।'

ब्रह्मवैवर्त पुराण में ही एक अन्य प्रसंगान्तर्गत पुत्रवत्सला पार्वती ने गणेश महिमा का बखान करते हुए परशुराम से कहा –

त्वद्विधं लक्षकोटिं च हन्तुं शक्तो गणेश्वरः।
जितेन्द्रियाणां प्रवरो नहि हन्ति च मक्षिकाम्।।
तेजसा कृष्णतुल्योऽयं कृष्णांश्च गणेश्वरः।
देवाश्चान्ये कृष्णकलाः पूजास्य पुरतस्ततः।।

(ब्रह्मवैवर्तपु., गणपतिख., 44। 26-27)

भावार्थ: जितेन्द्रिय पुरूषों में श्रेष्ठ गणेश तुममें जैसे लाखों-करोड़ों जन्तुओं को मार डालने की शक्ति है; परन्तु तुमने मक्खी पर भी हाथ नहीं उठाया। श्रीकृष्ण के अंश से उत्पन्न हुआ वह गणेश तेज में श्रीकृष्ण के ही समान है। अन्य देवता श्रीकृष्ण की कलाएँ हैं। इसीसे इसकी अग्रपूजा होती है।

शास्त्रीय मतसे

शास्त्रोमें पंचदेवों की उपासना करने का विधान हैं।

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।। (शब्दकल्पद्रुम)

भावार्थ: - पंचदेवों कि उपासना का ब्रह्मांड के पंचभूतों के साथ संबंध है। पंचभूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से बनते हैं। और पंचभूत के आधिपत्य के कारण से आदित्य, गणनाथ(गणेश), देवी, रूद्र और केशव ये पंचदेव भी पूजनीय हैं। हर एक तत्त्व का हर एक देवता स्वामी हैं-

आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी।
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः।।

भावार्थ:- क्रम इस प्रकार हैं महाभूत अधिपति

1. क्षिति (पृथ्वी) शिव
2. अप् (जल) गणेश
3. तेज (अग्नि) शक्ति (महेश्वरी)
4. मरूत् (वायु) सूर्य (अग्नि)
5. व्योम (आकाश) विष्णु

भगवान् श्रीशिव पृथ्वी तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शिवलिंग के रुप में पार्थिव-पूजा का विधान हैं। भगवान् विष्णु के आकाश तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शब्दों द्वारा स्तुति करने का विधान हैं। भगवती देवी के अग्नि तत्त्व का अधिपति होने के कारण उनका अग्निकुण्ड में हवनादि के द्वारा पूजा करने का विधान हैं। श्रीगणेश के जलतत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी सर्वप्रथम पूजा करने का विधान हैं, क्योंकि ब्रह्मांद में सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाले जीव तत्त्व 'जल' का अधिपति होने के कारण गणेशजी ही प्रथम पूज्य के अधिकारी होते हैं।

आचार्य मनु का कथन है-

"अप एच ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्।" (मनुस्मृति 1)

भावार्थ:

इस प्रमाण से सृष्टि के आदि में एकमात्र वर्तमान जल का अधिपति गणेश हैं।

किसी भी शुभकार्य में गणेशजी की पूजा सर्वप्रथम क्यों होती हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गणपति शब्द का अर्थ हैं।

गण(समूह)+पति (स्वामी) = समूह के स्वामी को सेनापति अर्थात गणपति कहते हैं। मानव शरीर में पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चार अन्तःकरण होते हैं। एवं इस शक्तिओं को जो शक्तियां संचालित करती हैं उन्हीं को चौदह देवता कहते हैं। इन सभी देवताओं के मूल प्रेरक हैं भगवान श्रीगणेश।

भगवान गणपति शब्दब्रह्म अर्थात् ओंकार के प्रतीक हैं, इनकी महत्व का यह हीं मुख्य कारण हैं।

श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ओंकार का ही व्यक्त स्वरूप गणपति देवता हैं। इसी कारण सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति कि प्रथम पूजा कि जाती हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्यक लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये पर भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य मानी गई हैं। इस सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं इसका सदीयों से भगवान गणेश जी क प्रथम पूजन करने कि परंपरा का अनुसरण करते चले आरहे हैं।

गणेश जी की ही पूजा सबसे पहले क्यों होती है, इसकी पौराणिक कथा इस प्रकार है -

पद्मपुराण के अनुसार (सृष्टिखण्ड 61। 1 से 63। 11) –

एक दिन व्यासजी के शिष्य ने अपने गुरूदेव को प्रणाम

करके प्रश्न किया कि गुरूदेव! आप मुझे देवताओं के पूजन का सुनिश्चित क्रम बतलाइये। प्रतिदिन कि पूजा में सबसे पहले किसका पूजन करना चाहिये ?

तब व्यासजी ने कहा: विघ्नों को दूर करने के लिये सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा करनी चाहिये। पूर्वकाल में पार्वती देवी को देवताओं ने अमृत से तैयार किया हुआ एक दिव्य मोदक दिया। मोदक देखकर दोनों बालक (स्कन्द तथा गणेश) माता से माँगने लगे। तब माता ने मोदक के प्रभावों का वर्णन करते हुए कहा कि तुम दोनो में से जो धर्माचरण के द्वारा श्रेष्ठता प्राप्त करके आयेगा, उसी को मैं यह मोदक दूँगी। माता की ऐसी बात सुनकर स्कन्द मयूर पर आरूढ़ हो कर अल्प मुहूर्तभर में सब तीर्थों की स्न्नान कर लिया। इधर लम्बोदरधारी गणेशजी माता-पिता की परिक्रमा करके पिताजी के सम्मुख खड़े हो गये। तब पार्वतीजी ने कहा- समस्त तीर्थों में किया हुआ स्न्नान, सम्पूर्ण देवताओं को किया हुआ नमस्कार, सब यज्ञों का अनुष्ठान तथा सब प्रकार के व्रत, मन्त्र, योग और संयम का पालन- ये सभी साधन माता-पिता के पूजन के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकते।

इसलिये यह गणेश सैकड़ों पुत्रों और सैकड़ों गणों से भी बढ़कर श्रेष्ठ है। अतः देवताओं का बनाया हुआ यह मोदक मैं गणेश को ही अर्पण करती हूँ। माता-पिता की भक्ति के कारण ही गणेश जी की प्रत्येक शुभ मंगल में सबसे पहले पूजा होगी। तत्पश्चात् महादेवजी बोले- इस गणेश के ही अग्रपूजन से सम्पूर्ण देवता प्रसन्न होंजाते हैं। इस लिये तुमहें सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा करनी चाहिये।

श्री गणेश पूजन की सरल विधि

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्री गणेशजी की पूजा से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है

श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।

जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।

जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऎश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग मंत्र व विधि-विधान से किया जाता हैं, इस लिये यहां दर्शाई गई पूजन विधि में अंतर होना सामान्य हैं।

सभी पाठको के मार्गदर्शन हेतु श्री गणेश जी का पूजन विधान दिया जा रहा हैं।

गणेश पूजा:

पूजन सामग्री :

कुंकुम, केसर, सिंदूर, अवीर-गुलाल, पुष्प और माला, चालव, पान, सुपारी, पंचामृत, पंचमेवा, गंगाजल, बिलपत्र, धूप-दीप, नैवैद्य में लड्डू)लड्डू3 ,5,7, 11 विषम संख्या में (या गूड अथवा मिश्री का प्रसाद लगाएं। लौंग, इलायची, नारीयल, कलश, 1मिटर लाल कपडा, बरक, इत्र, जनेऊ, पिली सरसों, इत्यादि आवश्यक सामग्रीयां।

पवित्र करण:

सबसे पहले पूजन सामग्री व गणेश प्रतिमा चित्र पवित्र करण करें

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो पि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इस मंत्र से शरीर और पूजन सामग्री पर जल छीटें इसे अंदर बाहर और बहार दोनों शुद्ध हो जाता है

आचमन:

ॐ केशवाय नम:
ॐ नारायण नम:
ॐ मध्वाये नम:

हस्तो प्रक्षल्य हर्शिकेशय नम :

आसान सुद्धि:

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्व विद्गणुनाधृताः।
त्व च धारय मा देवि पवित्र कुरू च आसनम्॥

रक्षा मंत्र:

'अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशा।
सर्वेषामवरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विनकर्तारस्ते नष्टन्तु शिवाज्ञया।'

इस मंत्र से दशों दिशाओं मैं पिला सरसों छिटके जिसेस समस्त भूत प्रेत बाधाओं का निवारण होता है

स्वस्ती वाचन:

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा :स्वस्ति न :पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्तिनस्ता रक्षो अरिष्टनेमि :स्वस्ति नो बृहस्पर्तिदधात॥

इस के बाद श्री गणेश जी के मंगल पाठ करना चाहिए जो की इस प्रकार है

गणेश जी का मंगल पाठ:

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वाद्रशैतानि नामानि य :पठेच्छेणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

एकाग्रचिन होकर गणेश का ध्यान करना चाहिए

श्री गणेश का ध्यान करें :

गजाननं भूतगणादि सेवितम् कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम्। उमासुतम् शोक विनाश कारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः गणेशं ध्यायामि मंत्र का उच्चारण करें।

आह्वानं:

इस मंत्र से श्री गणेश का आहवान करे या मन ही मन में श्री गणेश जी को पधारने के लिये विनति करें। हाथमें अक्षत लेकर आहवान करें।

आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सन्निधौ भव।।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः

गणेशं ध्यायामि मंत्र का उच्चारण करके अक्षते डालदें.....

इस मंत्र से श्री गणेश की मूर्ति या प्रतिमा पर हल्दी या कुमकुम से रंगे चालव डालें। यदि प्रतिमा के प्रहले से प्राण-प्रतिष्ठा हो गई हैं तो आवश्यक्ता नहीं हैं तब केवल सुपारी पर ही चालव डालें।

स्मरण:

हाथमें पुष्प लेकर श्री गणेशजी का स्मरण करें।
नमस्तस्मै गणेशाय सर्व विघ्न विनाशिने॥
कार्यारंभेषु सर्वेषु पूजितो यः सुरैरपि।
सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णकः॥
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धुम्रकेतुर् गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजानन॥
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रणु यादऽपि॥
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशांतये॥
जपेद् गणपति स्तोत्रं षड्भिर्मासे फलं लभेत्।
संवंत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि सम प्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥
अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लंबोदराय सकलाय जगत्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः गणेशं स्मरामि मंत्र का उच्चारण करके पुष्प अर्पित करें

षोडशोपचार गणपतीपूजन:

अस्यै प्राणः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवतमर्चीर्य मामहेति च कश्चन॥

आसनं:

आसन समर्पित करें। यदि पहले से वस्त्र बिछाया हुवा हैं तो उस स्थान पर हल्दी या कुमकुम से रंगे अक्षत डालकर पुष्प अर्पित करें।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम्।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आसनं समर्पयामि॥

यदि श्लोक पढने में कठिनाई हो तो आसन समर्पामि श्री गं गणेशाय नमः का उच्चारण करते हुवे गणेश जी के चरण धोये।

पाद्यं:

उष्णोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्यं:

आचमनीमें जल, फूल, फल, चंदन, अक्षत, दक्षिणा इत्यादि हाथ में रख कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें...

अर्घ्य गृहाण देवेश गंध पुष्पक्षतैः सह।
करुणा कुरु में देव गृहाणार्ध्यैः नमोस्तुते॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि मंत्र का उच्चारण करके अर्ध्य की सामग्रीया अर्पित करदें।

आचमन:

सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगंधि निर्मल जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरं॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आचमनं समर्पयामि॥

स्नानं:

गंगा च यमुना रेवा तुंगभद्रा सरस्वति।
कावेरी सहिता नद्यः सद्यः स्नार्थमर्पिता॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः स्नानं समर्पयामि
मंत्र का उच्चारण करते हुवे स्नान करायें।

पंचामृत स्नान :

तत पश्चयात पंचामृत से क्रमशः दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से स्नान करा कर शुद्धजल या गंगाजल से उक्त मंत्र से पुनः स्वच्छ करले।

तत पश्चयात शुद्ध वस्त्र से पोछ कर प्रतिष्ठित करें।

दूध स्नान :

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवन परम्।
पावनं यज्ञ हेतुश्च पय :स्नानार्थमर्पितम्॥

इस के स्थान पर पयः स्नानम् समर्पयामि गं गणेशाय नमः का उच्चारण करे तथा पयः के स्थान पर दूध कहें, दहीं कहें, धृतम् कहें, मधु कहें, शर्करा कहें के स्नान करायें।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
तरु पुष्प समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
पयो दधि धृत चैव मधु च शर्करायुतम्।
पंचामृत मयानीतं सनानार्थं प्रतिघृह्यताम॥

वस्त्रं:

पंचामृत स्नान के बाद स्वच्छ कर के वस्त्र पहनाये या समर्पित करें।

सर्व भूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृहीताम् ॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः वस्त्रोपवस्त्रे समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत

ततपश्चयात निम्न मंत्र से यज्ञोपवीत पहनाये
नवमिस्तंतुभियुक्त त्रिगुणं देवतामयं।
सपबीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः यज्ञोपवितं समर्पयामि॥

चंदन:

ततपश्चयात लाल चंदन चढाये।
श्रीखण्ड चन्दन दिव्यं केशरादि सुमनीहरम्।
विलेपनं सुश्रश्ठ चन्दनं प्रतिगृहयतम्॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः कुंकुमं समर्पयामि॥

कुंकुंम:

ततपश्चयात कुंकुंम अवीर-गुलाल चढाये।
कुंकुंम कामना दिव्यं कामना काम संभवम्।
कुंकुंम नार्चितो देव गृहाण परमेश्वरम्॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः कुंकुमं समर्पयामि॥

सिंदूर :

ततपश्चयात सिंदूर चढाये। सिंदूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिंदूरं प्रतिगृहयताम।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः सिंदूरं समर्पयामि॥

अक्षत:

ततपश्चयात हल्दी या कुंकुंम से रंगे अक्षत चढाये।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्प :

ततपश्चयात पुष्प माला आदि चढाये।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पुष्पाणि समर्पयामि॥

दूर्वा:

ततपश्चयात दूर्वा चढाये।

दुर्वा करान्सह रितान मृतन्मंगल प्रदान।

आनी तांस्तव पूजार्थ गृहाण परमेश्वर॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दूर्वांकुरान समर्पयामि॥

आभूषण :

ततपश्चयात आभूषण चढाये।

अलंकारान्महादिव्यान्नानारतन विनिर्मितान।

गृहाण देव-देवेश प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः आभूषण समर्पयामि॥

इत्र:

ततपश्चयात इत्र अर्थात् सुगंधित तेल चढाये।

चम्पकाशो वकुलं मालती मोगरादिभिः।

वासितं स्निग्ध तासेलु तैलं चारु प्रगृहयातम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः तैलम् समर्पयामि॥

धूप :

ततपश्चयात धूप आदि जलाये।

वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः।

आध्नय सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृहयताम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः धूपं समर्पयामि॥

दीप:

ततपश्चयात दीप आदि जलाये।

आज्येन वर्तिना युक्तं वह्निना च प्रयोजितम् मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रेलोक्य तिमिरापह॥।

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य :

ततपश्चयात नैवेद्य अर्पित करें।

शर्करा खंडखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।

आहारं भक्ष्यं भोज्यं च गृहाण गणनायक।

ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि॥

ततपश्चयात नैवेद्य पर जल छिडके।
गं गणपतये नमः

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे पांच बार भोजन कराये.....

ॐ प्राणाय नमः।

ॐ अपानाय नमः।

ॐ व्यानाय नमः।

ॐ उदानाय नमः।

ॐ समानाय नमः।

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे जल अर्पित करें।

मध्ये पानीयं समर्पयामि।

फिर से उक्त मंत्र का पांच बार उच्चारण करते हुवे पांच बार भोजन कराये....

ततपश्चयात इस मंत्र का उच्चारण करते हुवे तीन बार जल अर्पित करें....

ॐ गणेशाय नमः उत्तर पोषणं समर्पयामि।

ॐ गणेशाय नमः हस्त प्रक्षालनं समर्पयामि।

ॐ गणेशाय नमः मुख प्रक्षालनं समर्पयामि।

हाथ से भोजन की गंध दूर करने हेतु चंदनयुक्त पानी अर्पित करें।

ॐ गणेशाय नमः करोद्वर्तनार्थे गंधं समर्पयामि.

मुख शुद्धि हेतु पान-सुपारी इलायची और लवंग अर्पित करें।

एलालवंग संयुक्तं पुगीफलं समन्वितम्, तांबुलं च मया दत्तं गृहाण गणनायक .ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः मुखवासं समर्पयामि।

दक्षिणा:

ततपश्चयात दक्षिणा अर्पित करें। हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो। अनंत पूण्य फलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे॥। ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः दक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा:

ततपश्चयात प्रदक्षिणा करें।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः प्रदक्षिणां करोमि।

आरती:

नीराजन-आरती प्रगट कर उसमें चंदन-पुष्प लगाये कपुर प्रज्वलित करें।

चंद्रादित्यौ च धरणि विद्युदग्नि त्वमेव च।
त्वमेव सर्व ज्योतिषि आर्तीक्यं प्रतिगृह्यताम्॥
कर्पुर पूरेण मनोहरेण सुवर्ण पात्रान्तर संस्थितेन।
प्रदिप्तभासा सहगतेन नीराजनं ते परित करोमि।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नीराजनं समर्पयामि।

॥श्री गणेश आरति॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा.
माता जाकी पारवती पिता महादेवा॥ जय गणेश.....
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी॥ जय गणेश.....
पान चढ़े फल चढ़े और चढ़े मेवा
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा॥ जय गणेश.....
अंधे को आँख देत कोढ़िन को काया
बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय गणेश.....
'सूर' श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा॥ जय गणेश.....

आरती के चारो और जल घुमाये फिर गणेशजी को आरती दिखाये खुद आरती लेकर हाथ धोले।
फिर दोनो हाथकी अंजलिमें पुष्प लेकर पुष्पांजलि दें।

नाना सुगंधी पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च।
पुष्पांजलि प्रदानेन प्रसीद गणनायक। ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।

प्रार्थना:

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लंबोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते। भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय। विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्ति प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।

नमस्कार:

लंबोदर नमस्तुभ्यं सतत मोदक प्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

विशेष अर्ध्य:

आचमनी में जल, चावल, फूल, फल, चंदन दक्षिणा आदि अर्ध्य में ले

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्तनाम भयंकर्ता त्राता भवभवार्णवात्॥ फलेन फलितं तोयं फलेन फलितं धनम्। फलास्यर्घ्यं प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः॥ ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

क्षमापन:

आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व गणनायक॥
ॐ सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशाय नमः क्षमापनं समर्पयामि॥
अनया पूज्या सिद्धिबुद्धि सहित श्री गणेशः प्रियताम्॥

***

पंचश्लोकी श्रीगणेशपुराण की महिमा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक मान्यता के अनुशार प्रतिदिन भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा के सामने पूर्ण श्रद्धा-भक्तिभाव से यदि कोई मनुष्य इस पंचश्लोकी श्रीगणेशपुराण पठन करता हैं तो उसे समस्त प्रकार के सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती हैं। इस पंचश्लोकी श्रीगणेशपुराण का पठ मनुष्य को सभी प्रकार के भोगों और मोक्ष प्रदान करने में समर्थ हैं।

श्रीविघ्नेशपुराणसारमुदितं व्यासाय धात्रा पुरा, खण्डं वै प्रथमं महागणपतेश्चोपासनाख्यं यथा।
संहर्तुं त्रिपुरं शिवेन गणपस्यादौ कृतं पूजनं, कर्तुं सृष्टिमिमां स्तुत: स विधिना व्यासेन बुद्ध्याप्तये ॥१॥
संकष्ट्याश्च विनायकस्य च मनो: स्थानस्य तीर्थस्य वै, दूर्वाणां महिमेति भक्तिचरितं तत्पार्थिवस्यार्चनम्।
तेभ्यो यैर्यदभीप्सितं गणपतिस्तत्तत्प्रतुष्टो ददौ, ता: सर्वा न समर्थ एव कथितुं ब्रह्मा कुतो मानवः ॥२॥
क्रीडाकाण्डमथो वदे कृतयुगे श्वेतच्छवि: काश्यप: सिंहाक: स विनायको दशभुजो भूत्वाथ काशीं ययौ।
हत्त्वा तत्र नरान्तकं तदनुजं देवान्तकं दानवं, त्रेतायां शिवनंदनो रसभुजो जातो मयूरध्वज:॥३॥
हत्वा तं कमलासुरं च सगणं सिन्धुं महादैत्यपं, पश्चात सिद्धिमतीसुते कमलजस्तस्मै च ज्ञानं ददौ।
द्वापारे तु गजाननो युगभुजो गौरीसुत: सिन्दुरं, सम्मर्द्य स्वकरेण तं निजमुखे चाखुध्वजो लिप्तवान्॥४॥
गीताया उपदेश एव हि कृतो राज्ञे वरेण्याय वै, तुष्टायाथ च धुम्रकेतुरभिधो विप्र: सधर्माधिक:।
अश्वांको द्विभुजो सितो गणपतिम्लेच्छान्तक: स्वर्णद:, क्रीडाकाण्डमिदं गणस्य हरिणा प्रोक्तं विधात्रे पुरा॥५॥
।। इति श्रीपंचश्लोकिगणेशपुराणम्।।

गणेश वाहन मूषक केसे बना

समेरू पर्वत पर सौमरि ऋषि का आश्रम था। उनकी अत्यंत रूपवान तथा पतिव्रता पत्नी का नाम मनोमयी था। एक दिन ऋषिवर लकड़ी लेने के लिए वन में चले गए। उनके जाने के पश्चयात मनोमयी गृहकार्य में व्यस्त हो गईं। उसी समय एक दुष्ट कौंच नामक गंधर्व वहां आया। जब कौंच ने लावव्यमयी मनोमयी को देखा, तो उसके भीतर काम जागृत होगया एवं वह व्याकुल हो गया। कौंच ने मनोमयी का हाथ पकड़ लिया। रोती व कांपती हुई मनोमयी उससे दया की भीख मांगने लगी। उसी समय वहा सौभरि ऋषि आ गए।

उन्हें गंधर्व को श्राप देते हुए कहा, तुमने चोर की भांति मेरी सहधर्मिनी का हाथ पकड़ा हैं, इस कारण तुम अबसे मूषक होकर धरती के नीचे और चोरी करके अपना पेट भरोगे।' ऋषि का श्राप सुनकर गंधर्व ने ऋषि से प्रार्थना की- हे ऋषिवर, अविवेक के कारण मैंने आपकी पत्नी के हाथ का स्पर्श किया। मुझे क्षमा कर दें।

ऋषि बोले: कौंच! मेरा श्राप व्यर्थ नहीं होगा। तथापि द्वापर में महर्षि पराशर के यहां गणपति देव गजरूप में प्रकट होंगे। तब तुम उनका वाहन बन जाओगे। इसके पश्चयात तुम्हारा कल्याण होगा तथा देवगण भी तुम्हारा सम्मान करेंगे।

किस फूल से करें गणेश पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गणेश जी को दूर्वा सर्वाधिक प्रिय है। इस लिये सफेद या हरी दूर्वा चढ़ानी चाहिए। दूर्वा की तीन या पाँच पत्ती होनी चाहिए।

गणेश जी को तुलसी छोड़कर सभी पत्र और पुष्प प्रिय हैं। गणेशजी पर तुलसी चढाना निषेध हैं।

न तुलस्या गणाधिपम् (पद्मपुराण)

भावार्थ :तुलसी से गणेशजी की पूजा कभी नहीं करनी चाहिये।

'गणेश तुलसी पत्र दुर्गा नैव तु दूर्वाया' (कार्तिक माहात्म्य)

भावार्थ :गणेशजी की तुलसी पत्र से एवं दुर्गाजी की दूर्वा पूजा नहीं करनी चाहिये।

गणेशजी की पूजा में मन्दार के लाल फूल चढ़ाने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। लाल पुष्प के अतिरिक्त पूजा में श्वेत,पीले फूल भी चढ़ाए जाते हैं।

संकटनाशन गणेशस्तोत्रम्

संकटनाशन गणेश स्तोत्रम् का प्रति दिन पाठ करने से समस्त प्रकार के संकटोका नाश होता है, श्री गणेशजी कि कृपा एवं सुख समृद्धि कि प्राप्त होती है।

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ । निर्विघ्नम् कुरु में देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥ विघ्नेश्वराय वरदाय सूरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्गिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमोनमस्ते ॥

स्तोत्र:

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुंत्र विनायकम् भक्तावासं स्मरे नित्यं आयुकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥

प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंतं द्वितियकम् तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवकत्रं चतुर्थकम् ॥ २ ॥

लंबोदरं पंचमं च षष्टमं विकटमेव च सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाअष्टकम् ॥ ३ ॥

नवं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम् एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४ ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं य: पठेन्नर: न च विघ्नभयं तस्य सर्व सिद्धि करं प्रभो ॥ ५ ॥

विद्यार्थि लभते विद्यां धनार्थि लभते धनम् पुत्रार्थि लभते पुत्रांमोक्षार्थि लभते गतिम् ॥ ६ ॥

जपेत्गणपतिस्तोत्रं षडभिमासैः फलं लभेत संवतसरेणसिद्धिं च लभते नात्रसंशयः ॥ ७ ॥

अष्टभ्योब्राह्मणोभ्यस्य लिखित्वा य: समर्पयेत् तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥ ८ ॥

॥ इतिश्री नारदपुराणे 'संकटनाशन गणेशस्तोत्रम्' संपूर्णम् ॥

गणेश पूजन में निषिद्ध हैं तुलसी?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

तुलसी समस्त पौधों में श्रेष्ठ मानी जाती हैं। हिंदू धर्म में समस्त पूजन कर्मो में तुलसी को प्रमुखता दी जाती हैं। प्रायः सभी हिंदू मंदिरों में चरणामृत में भी तुलसी का प्रयोग होता हैं। इसके पीछे ऎसी कामना होती है कि तुलसी ग्रहण करने से तुलसी अकाल मृत्यु को हरने वाली तथा सर्व व्याधियों का नाश करने वाली हैं।

परन्तु यही पूज्य तुलसी को भगवान श्री गणेश की पूजा में निषिद्ध मानी गई हैं।

शास्त्रों में उल्लेख हैं:

तुलसीं वर्जयित्वा सर्वाण्यपि पत्रपुष्पाणि गणपतिप्रियाणि। *(आचारभूषण)*

गणेशजी को तुलसी छोड़कर सभी पत्र-पुष्प प्रिय हैं! गणपतिजी को दूर्वा अधिक प्रिय है।

इनसे सम्बद्ध ब्रह्मकल्प में एक कथा मिलती हैं

एक समय नवयौवन सम्पन्न तुलसी देवी नारायण परायण होकर तपस्या के निमित्त से तीर्थो में भ्रमण करती हुई गंगा तट पर पहुँचीं। वहाँ पर उन्होंने गणेश को देखा, जो कि तरूण युवा लग रहे थे। गणेशजी अत्यन्त सुन्दर, शुद्ध और पीताम्बर धारण किए हुए आभूषणों से विभूषित थे, गणेश कामनारहित, जितेन्द्रियों में सर्वश्रेष्ठ, योगियों के योगी थे गणेशजी वहां श्रीकृष्ण की आराधना में घ्यानरत थे। गणेशजी को देखते ही तुलसी का मन उनकी ओर आकर्षित हो गया। तब तुलसी उनका उपहास उडाने लगीं। घ्यानभंग होने पर गणेश जी ने उनसे उनका परिचय पूछा और उनके वहां आगमन का कारण जानना चाहा। गणेश जी ने कहा माता! तपस्वियों का घ्यान भंग करना सदा पापजनक और अमंगलकारी होता हैं।

शुभे! भगवान श्रीकृष्ण आपका कल्याण करें, मेरे घ्यान भंग से उत्पन्न दोष आपके लिए अमंगलकारक न हो।

इस पर तुलसी ने कहा—प्रभो! मैं धर्मात्मज की कन्या हूं और तपस्या में संलग्न हूं। मेरी यह तपस्या पति प्राप्ति के लिए हैं। अत: आप मुझसे विवाह कर लीजिए। तुलसी की यह बात सुनकर बुद्धि श्रेष्ठ गणेश जी ने उत्तर दिया हे माता! विवाह करना बडा भयंकर होता हैं, मैं ब्रम्हचारी हूं। विवाह तपस्या के लिए नाशक, मोक्षद्वार के रास्ता बंद करने वाला, भव बंधन से बंधे, संशयों का उद्गम स्थान हैं। अत: आप मेरी ओर से अपना घ्यान हटा लें और किसी अन्य को पति के रूप में तलाश करें। तब कुपित होकर तुलसी ने भगवान गणेश को शाप देते हुए कहा कि आपका विवाह अवश्य होगा। यह सुनकर शिव पुत्र गणेश ने भी तुलसी को शाप दिया देवी, तुम भी निश्चित रूप से असुरों द्वारा ग्रस्त होकर वृक्ष बन जाओगी।

इस शाप को सुनकर तुलसी ने व्यथित होकर भगवान श्री गणेश की वंदना की। तब प्रसन्न होकर गणेश जी ने तुलसी से कहा हे मनोरमे! तुम पौधों की सारभूता बनोगी और समयांतर से भगवान नारायण कि प्रिया बनोगी। सभी देवता आपसे स्नेह रखेंगे परन्तु श्रीकृष्ण के लिए आप विशेष प्रिय रहेंगी। आपकी पूजा मनुष्यों के लिए मुक्ति दायिनी होगी तथा मेरे पूजन में आप सदैव त्याज्य रहेंगी। ऎसा कहकर गणेश जी पुन: तप करने चले गए। इधर तुलसी देवी दु:खित हवदय से पुष्कर में जा पहुंची और निराहार रहकर तपस्या में संलग्न हो गई। तत्पश्चात गणेश के शाप से वह चिरकाल तक शंखचूड की प्रिय पत्नी बनी रहीं। जब शंखचूड शंकर जी के त्रिशूल से मृत्यु को प्राप्त हुआ तो नारायण प्रिया तुलसी का वृक्ष रूप में प्रादुर्भाव हुआ।

कामनापूर्ति हेतु चमत्कारी गणेश मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

ॐ गं गणपतये नमः ।

एसा शास्त्रोक्त वचन हैं कि गणेश जी का यह मंत्र चमत्कारिक और तत्काल फल देने वाला मंत्र हैं। इस मंत्र का पूर्ण भक्तिपूर्वक जाप करने से समस्त बाधाएं दूर होती हैं। षडाक्षर का जप आर्थिक प्रगति व समृध्दिदायक है।

ॐ वक्रतुंडाय हुम् ।

किसी के द्वारा कि गई तांत्रिक क्रिया को नष्ट करने के लिए, विविध कामनाओं कि शीघ्र पूर्ति के लिए उच्छिष्ट गणपति कि साधना किजाती हैं। उच्छिष्ट गणपति के मंत्र का जाप अक्षय भंडार प्रदान करने वाला हैं।

ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा ।

आलस्य, निराशा, कलह, विघ्न दूर करने के लिए विघ्नराज रूप की आराधना का यह मंत्र जपे।

ॐ गं क्षिप्रप्रसादनाय नमः।

मंत्र जाप से कर्म बंधन, रोगनिवारण, कुबुद्धि, कुसंगत्ति, दूर्भाग्य, से मुक्ति होती हैं। समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए हेरम्बं गणपति का मंत्र जपे।

ॐ गूं नमः।

रोजगार की प्राप्ति व आर्थिक समृध्दि प्राप्त होकर सुख सौभाग्य प्राप्त होता हैं।

गणेश के कल्याणकारी मंत्र

गणेश मंत्र **कि** प्रति दिन एक माला मंत्रजाप अवश्य करे। दिये गये मंत्रो मे से कोई भी एक मंत्रका जाप करे।

(०१) गं ।
(०२) ग्लं ।
(०३) ग्लौं ।
(०४) श्री गणेशाय नमः ।
(०५) ॐ वरदाय नमः ।
(०६) ॐ सुमंगलाय नमः ।
(०७) ॐ चिंतामणये नमः ।
(०८) ॐ वक्रतुंडाय हुम् ।
(०९) ॐ नमो भगवते गजाननाय ।
(१०) ॐ गं गणपतये नमः ।
(११) ॐ ॐ श्री गणेशाय नमः ।

यह मंत्र के जप से व्यक्ति को जीवन में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं रेहता है।

- आर्थिक स्थिति मे सुधार होता है।
- एवं सर्व प्रकारकी रिद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गण्पत्ये वर वरदे नमः
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात।

लक्ष्मी प्राप्ति एवं व्यवसाय बाधाएं दूर करने हेतु उत्तम मानगया हैं।

ॐ गीः गूं गणपतये नमः स्वाहा।

इस मंत्र के जाप से समस्त प्रकार के विघ्नो एवं संकटो का का नाश होता हैं।

ॐ श्री गं सौभाग्य गणपत्ये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

विवाह में आने वाले दोषो को दूर करने वालों को त्रैलोक्य मोहन गणेश मंत्र का जप करने से शीघ्र विवाह व अनुकूल जीवनसाथी की प्राप्ति होती है।

ॐ वक्रतुण्डेक द्रष्टाय क्लींहीं श्रीं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मं दशमानय स्वाहा ।

इस मंत्रों के अतिरिक्त गणपति अथर्वशीर्ष, संकटनाशक, गणेश स्त्रोत, गणेशकवच, संतान गणपति स्त्रोत, ऋणहर्ता गणपति स्त्रोत मयूरेश स्त्रोत, गणेश चालीसा का पाठ करने से गणेश जी की शीघ्र कृपा प्राप्त होती है।

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

इस मंत्र के जाप से मुकदमे में सफलता प्राप्त होती हैं।

ॐ गं गणपतये सर्वविघ्न हराय सर्वाय सर्वगुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः।

वाद-विवाद, कोर्ट कचहरी में विजय प्राप्ति, शत्रु भय से छुटकारा पाने हेतु उत्तम।

ॐ नमः सिद्धिविनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्न प्रशमनाय सर्व राज्य वश्य कारनाय सर्वजन सर्व स्त्री पुरुषाकर्षणाय श्री ॐ स्वाहा।

इस मंत्र के जाप को यात्रा में सफलता प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा गणपत्ये वरद वरद सर्वजन हृदये स्तम्भय स्वाहा।

यह हरिद्रा गणेश साधना का चमत्कारी मंत्र हैं।

ॐ ग्लौं गं गणपतये नमः।

गृह कलेश निवारण एवं घर में सुखशान्ति कि प्राप्ति हेतु।

ॐ गं लक्ष्म्यौ आगच्छ आगच्छ फट्।

इस मंत्र के जाप से दरिद्रता का नाश होकर, धन प्राप्ति के प्रबल योग बनने लगते हैं।

ॐ गणेश महालक्ष्म्यै नमः।

व्यापार से सम्बन्धित बाधाएं एवं परेशानियां निवारण एवं व्यापर में निरंतर उन्नति हेतु।

ॐ गं रोग मुक्तये फट्।

भयानक असाध्य रोगों से परेशानी होने पर, उचित ईलाज कराने पर भी लाभ प्राप्त नहीं होरहा हो, तो पूर्ण विश्वास सें मंत्र का जाप करने से या जानकार व्यक्ति से जाप करवाने से धीरे-धीरे रोगी को रोग से छुटकारा मिलता हैं।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा।

इस मंत्र के जाप से मनोकामना पूर्ति के अवसर प्राप्त होने लगते हैं।

गं गणपत्ये पुत्र वरदाय नमः।

इस मंत्र के जाप से उत्तम संतान कि प्राप्ति होती हैं।

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

इस मंत्र के जाप से मुकदमे में सफलता प्राप्त होती हैं।

ॐ श्री गणेश ऋण छिन्धि वरेण्य हुं नमः फट ।

यह ऋण हर्ता मंत्र हैं। इस मंत्र का नियमित जाप करना चाहिए। इससे गणेश जी प्रसन्न होते है और साधक का ऋण चुकता होता है। कहा जाता है कि जिसके घर में एक बार भी इस मंत्र का उच्चारण हो जाता है है उसके घर में कभी भी ऋण या दरिद्रता नहीं आ सकती।

जप विधि:

प्रातः स्नानादि शुद्ध होकर कुश या ऊन के आसन पर पूर्व कि और मुख होकर बैठें। सामने गणेशजी का चित्र, यंत्र या मूर्ति स्थापित्त करें फिर षोडशोपचार या पंचोपचार से भगवान गजानन का पूजन कर प्रथम दिन संकल्प करें। इसके बाद भगवान गणेशका एकाग्रचित्त से ध्यान करें। नैवेद्य में यदि संभव होतो बूंदि या बेसन के लड्डू का भोग लगाये नहीं तो गुड का भोग लगाये। साधक को गणेशजी के चित्र या मूर्ति के सम्मुख शुद्ध घी का दीपक जलाए। रोज १०८ माला का जाप कर ने से शीघ्र फल कि प्राप्ति होती हैं। यदि एक दिन में १०८ माला संभव न हो तो ५४, २७,१८ या ९ मालाओं का भी जाप किया जा सकता हैं।

मंत्र जाप करने में यदि आप असमर्थ हो, तो किसी ब्राह्मण को उचित दक्षिणा देकर उनसे जाप करवाया जा सकता हैं।

***

गणेश पूजन से हो सकती हैं ग्रह पीड़ा दूर?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गणपति समस्त लोकोंमें सर्व प्रथम पूजेजाने वाले एकमात्र देवाता हैं। गणेश समस्त गण के गणाध्यक्षक होने के कारणा गणपति नाम से भी जाने जाते हैं।

मनुष्य को जीवन में समस्त प्रकार कि रिद्धि-सिद्धि एवं सुखो कि प्राप्ति एवं अपनी सम्स्त आध्यात्मिक-भौतिक इच्छाओं कि पूर्ति हेतु गणेश जी कि पूजा-अर्चना एवं आराधना अवश्य करनी चाहिये। गणेशजी का पूजन अनादिकाल से चला आ रहा हैं,

इसके अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्रों के अनुशार ग्रह पीडा दूर करने हेतु भगवान गणेश कि पूजा-अर्चना करने से समस्त ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं एवं शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं। इस लिये गणेश पूजाका अत्याधिक महत्व हैं।

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥

भगवान गणेश सूर्य तेज के समान तेजस्वी हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से सूर्य के प्रतिकूल प्रभाव का शमन होकर व्यक्ति के तेज-मान-सम्मान में वृद्धि होती हैं, उसका यश चारों और बढता हैं। पिता के सुख में वृद्धि होकर व्यक्ति का आध्यात्मिक ज्ञान बढता हैं।

भगवान गणेश चंद्र के समान शांति एवं शीतलता के प्रतिक हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से चंद्र के प्रतिकूल प्रभाव का नाश होकर व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती हैं। चंद्र माता का कारक ग्रह हैं इस लिये गणेशजी के पूजन से मातृसुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश मंगल के समान शिक्तिशाली एवं बलशाली हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से मंगल के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं और व्यक्ति कि बल-शक्ति में वृद्धि होती हैं। गणेशजी के पूजन से ऋण मुक्ति मिलती हैं। व्यक्ति के साहस, बल, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं जिस कारण व्यक्ति में नेतृत्व करने कि विलक्षण शक्ति का विकास होता हैं। भाई के सुख में वृद्धि होती हैं।

गणेशजी बुद्धि और विवेक के अधिपति स्वामि बुध ग्रह के अधिपति देव हैं। अत: विद्या-बुद्धि प्राप्ति के लिए गणेश जी की आराधना अत्यंत फलदायी सिद्धो होती हैं। गणेशजी के पूजन से वाकशक्ति और तर्कशक्ति में वृद्धि होती हैं। बहन के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश बृहस्पति(गुरु) के समान उदार, ज्ञानी एवं बुद्धि कौशल में निपूर्ण हैं। गणेशजी का पूजन-अर्चन करने से बृहस्पति(गुरु) से संबंधित पीडा दूर होती हैं और व्यक्ति कें आध्यात्मिक ज्ञान का विकास होता हैं। व्यक्ति के धन और संपत्ति में वृद्धि होती हैं। पति के सुख में वृद्धि होती हैं। भगवान गणेश धन, ऐश्वर्य एवं संतान प्रदान करने वाले शुक्र के अधिपति हैं। गणेशजी का पूजन करने से शुक्र के अशुभ प्रभाव का शमन होता हैं। व्यक्ति को समस्त भौतिक सुख साधन में वृद्धि होकर व्यक्ति के सौन्दर्य में वृद्धि होती हैं। पति के सुख में वृद्धि होती हैं।

भगवान गणेश शिव के पुत्र हैं। भगवान शिव शनि के गुरु हैं। गणेशजी का पूजन करने से शनि से संबंधित पीडा दूर होती हैं। भगवान गणेश हाथी के मुख एवं पुरुष शरीर युक्त होने से राहू व केतू के भी अधिपति देव हैं। गणेशजी का पूजन करने से राहू व केतू से संबंधित पीडा दूर होती हैं। इसलिये नवग्रह कि शांति मात्र भगवान गणेश के स्मरण से ही हो जाती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हैं। भगवान गणेश में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास कि आवश्यक्ता हैं। भगवान गणेश का पूजन अर्चन करने से मनुष्य का जीवन समस्त सुखो से भर जाता है। जन्म कुंडली में चाहें होई भी ग्रह अस्त हो या नीच हो अथवा पीडित हो तो भगवान गणेश कि आराधना से सभी ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होता हैं एवं शुभ फलो कि प्राप्ति होती हैं।

जब गणेशजी बन गये ज्योतिषी।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दु धर्म में सर्वप्रथन पूजनीय भगवान गणेश ने एक बार ज्योतिषी का रुप धारण कर लिया। हलांकि हम भगवान गणेश के विभिन्न रुपों से परिचित हैं, लेकिन उनके ज्योतिषीय रुप से कम ही लोग परिचित होंगे! विद्वानों का कथन हैं की भगवान गणेश ज्योतिषी रुप ब्रह्मा जी की सृष्टि संचालन में सहायता हेतु धारण किया था।

पौराणिक कथा के अनुशार एकबार एक बार राजा रिपुञ्जय ने कठिन साधना से मन तथा इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया। राजा रिपुञ्जय की साधना से सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा जी ने उन्हें सम्पूर्ण भूलोक पर प्रजापालन और नागराज वासुकि की कन्या के साथ विवाह का आशिर्वाद दिया।

ब्रह्मा जी की आज्ञा को सुनकर रिपुञ्जय ने कहा, मैं आपका यह आशिर्वाद स्वीकार करता हूँ, लेकिन मेरी एक शर्त है कि जब तक पृथ्वी पर मेरा शासन रहेगा, तब तक सभी देवता केवल स्वर्ग लोक में ही निवास करेंगे। वे पृथ्वी पर नहीं आएँगे। ब्रह्मा जी ने तथास्तु कहा। अग्नि, सूर्य, इन्द्र इत्यादि सभी देवता पृथ्वी से अंतर्ध्यान हो गये तो रिपुञ्जय ने प्रजा के कल्याण हुते उन सब देवताओं का रूप धारण कर लिया।

रिपुञ्जय को देवताओं का रुप धारण किये हुवे देखकर सभी देवता बहुत क्रोधित हो गये। राजा रिपुञ्जय के समस्त पृथ्वी पर शासन करने के कारण वह दिवोदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। रिपुञ्जय ने काशी को अपनी राजधानी बनाया। उनके शासन में अपराध का कहीं नामो-निशान नहीं था। असुर भी मनुष्य के वेश में आकर राजा की सेवा में उपस्थित हो जाते थे। सर्वत्र धर्म की प्रधानता थी।

दुसरी तरफ देवलोक में, पृथ्वी पर अपना आवास छूटने के कारण समस्त देवता और भगवान शिव अत्यधिक दुःखी थे। सभी इसी उलझन मे थे की किसी तरह राजा रिपुञ्जय के राज में कमी ढूँढ़कर उन्हें भूलोक के राज से हटाया जाय। इसी प्रयास में देवताओं ने रिपुञ्जय के राजकाज में कई प्रकार के विघ्न उपस्थित किए, लेकिन कोई भी विध्न-बाधा रिपुञ्जय के सामने टिक नहीं पायी। रिपुञ्जय को पथभ्रष्ट करने के

लिए भगवान शिव ने क्रमश: ६४ योगिनियों, सूर्य, ब्रह्मा, शिव गण आदि को काशी भेजा। इस प्रकार क्रमशः कई देवता पृथ्वी पर आते गए और एक-एक कर सभी यहीं निवास करने लगे।

तब भगवान शिव ने अपने पुत्र श्रीगणेश को काशी जाने के लिये आदेश दिया। भगवान श्रीगणेश ने काशी में आपना आवास एक मन्दिर में बनाया तथा वे स्वयं एक वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण कर काशी में रहने लगे। काशी में धीरे-धीरे लोग भगवान श्रीगणेश के पास अपना भविष्य जानने के लिये आने लगे। धीरे-धीरे उनकी कीर्ति तथा प्रसिद्दि राजा रिपुञ्जय तक पहूँची तो उन्होंने वृद्ध ज्योतिषी को अपने यहाँ आमंत्रित किया।

वृद्ध ज्योतिषी के आने पर रिपुञ्जय ने उनका विशेष आदर सत्कार किया और निवेदन किया कि, इस समय मेरा मन भौतिक पदार्थों एवं सभी कर्मों से दूर हो रहा है। इसलिए आप अच्छी तरह गणना कर मेरे भविष्य का वर्णन कीजिए। तब उन वृद्ध ज्योतिषी ने रिपुञ्जय से कहा कि, "आज से १८वें दिन उत्तर दिशा की ओर से एक तेजस्वी ब्राह्मण का आगमन होगा और वे ही तुम्हें उपदेश देकर तुम्हारा भविष्य निश्चित करेंगे।

भगवान गणेश ने सम्पूर्ण काशी नगरी को अपने वश में कर लिया। राजा रिपुञ्जय से दूर रहकर भी भगवान गणेश ने उनके चित्त को राज-काज से विरक्त कर दिया। १८वें दिन भगवान विष्णु ने ब्राह्मण का वेश धारण करके अपना नाम पुण्यकीर्त, गरुड़ का नाम विनयकीर्त तथा लक्ष्मी का नाम गोमोक्ष प्रसिद्ध किया। वे स्वयं गुरु रूप में तथा उन दोनों को चेलों के रूप में लेकर काशी पहुंचे।

रिपुञ्जय को समाचार मिला तो गणेश जी की बात को स्मरण करके उसने पुण्यकीर्त का स्वागत करके उपदेश सुना। पुण्यकीर्त ने हिन्दू धर्म का खंडन करके बौद्ध धर्म का मंडन किया। प्रजा सहित राजा रिपुञ्जय बौद्ध धर्म का पालन करके अपने धर्म से पथभ्रष्ट हो गया। पुण्यकीर्त ने राजा रिपुञ्जय से कहा कि सात दिन उपरांत उसे शिवलोक चले जाना चाहिए। उससे पूर्व शिवलिंग की स्थापना भी आवश्यक है। श्रद्धालु राजा ने उसके कथन अनुसार दिवोदासेश्वर लिंग की स्थापना एवं विधि-पूर्वक पूजा-अर्चना करवाई। गरुड़ विष्णु जी के संदेशस्वरूप समस्त घटना का विस्तृत वर्णन करने शिव के सम्मुख गये। तदुपरांत रिपुञ्जय ने शिवलोक प्राप्त किया तथा देवतागण काशी में अंश रूप से रहने के पुन: अधिकारी बन गये। विद्वानों का कथन हैं की गणेश जी के ज्योतिषी रुप धारण करने से पूर्व सभी देवताओं के प्रयास निष्फल हुवे थे। इस लिए यह गणेशजी के ज्योतिषी रुप का ही चमत्कार था की राजा रिपुञ्जय ने गणेश जी की बात पर विश्वास कर ब्राह्मण रुप धारी विष्णु जी की बात पर विश्वास किया और उनके कहे अनुशार कार्य संपन्न किया।

***

॥गणेशभुजंगम्॥

रणत्क्षुद्रघण्टानिनादाभिरामं चलत्ताण्डवोद्दण्डवत्पद्मतालम् ।
लसत्तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे ॥ १ ॥

ध्वनिध्वंसवीणालयोल्लासिवक्त्रं स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम् ।
गलद्दर्पसौगन्ध्यलोलालिमालं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे ॥ २ ॥

प्रकाशज्जपारक्तरन्तप्रसून- प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम् ।
प्रलम्बोदरं वक्रतुण्डैकदन्तं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे ॥ ३ ॥

विचित्रस्फुरद्रत्नमालाकिरीटं किरीटोल्लसच्चन्द्ररेखाविभूषम् ।
विभूषैकभूशं भवध्वंसहेतुं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे ॥ ४ ॥

उदञ्चद्भुजावल्लरीदृश्यमूलो- च्चलद्भ्रूलताविभ्रमभ्राजदक्षम् ।
मरुत्सुन्दरीचामरैः सेव्यमानं गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ ५ ॥

स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारं कृपाकोमलोदारलीलावतारम् ।
कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यै- र्गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥ ६ ॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पं गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम् ।
परं परमोंकारमान्मायगर्भं । वदन्ति प्रगल्भं पुराणं तमीडे ॥ ७ ॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यं नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्
।
नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो ॥ ८ ॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान् ।
गणेशप्रसादेन सिध्यन्ति वाचो गणेशे विभौ दुर्लभं किंप्रसन्ने ॥ ९ ॥
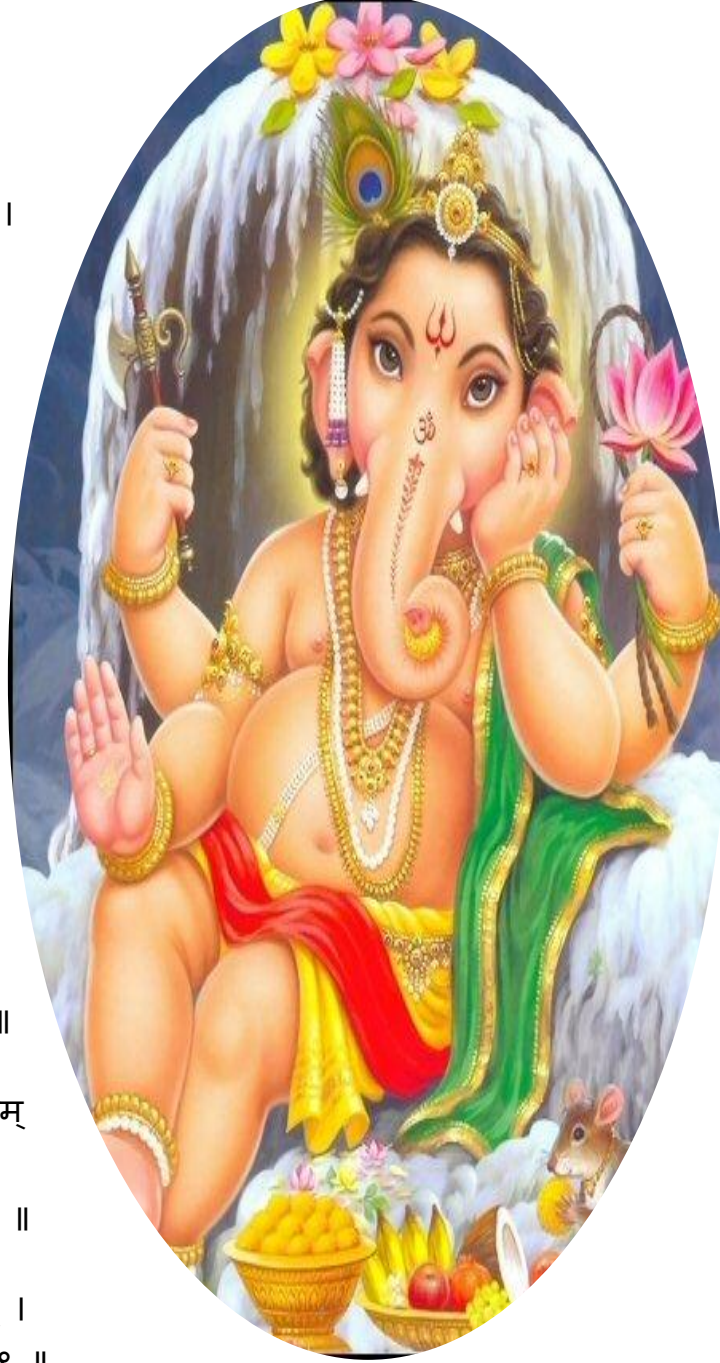
जन्म कुंडली में चाहें होई भी ग्रह अस्त हो या नीच हो अथवा पीडित हो
तो भगवान गणेश कि आराधना से सभी ग्रहो के अशुभ प्रभाव दूर होता हैं एवं शुभ फलो कि प्राप्ति होती हैं।

वर्ष की विभिन्न चतुर्थी व्रत का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्रावण कृष्ण चतुर्थी

संकष्टचतुर्थी व्रत

पौराणिक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार संकष्टचतुर्थी व्रत प्रत्येक मासकी कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। यदि चतुर्थी दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो या दोनों दिन न हो तो मातृविद्धा प्रशस्यते के अनुसार पहले दिन व्रत करना चाहिये।

व्रतधारी को चाहिये कि वह प्रातःस्त्रानादिके पश्चात् व्रत करनेका संकल्प करके दिनभर यथा संभव मौन रहे और सायंकालमें पुनःस्त्रान करके लाल वस्त्र धारणकर ऋतुकाल में उपलब्ध गन्ध पुष्पादि से गणेशजीका पूजन करे,(शास्रोक्त मत से गणेश पूजन में तुलसी पत्र वर्जित हैं)

उसके बाद चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा का पूजन करे और अर्घ्य से पूजन कर स्वयं भोजन करे तो व्रतधारी को सुख, सौभाग्य और सम्पत्तिकी प्राप्ति होती है।

संकष्टचतुर्थी की व्रत कथा:

पौराणिक कथा के अनुशार सत्ययुग में राजा युवनाश्व के पास सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाता ब्रह्मशर्मा नामक ब्राह्मण थे, जिनके सात पुत्र और सात पुत्रवधुएँ थीं। ब्रह्मशर्मा जब वृद्ध हुए, तब बड़ी छः बहुओंकी अपेक्षा छोटी बहूने श्वशुरकी अधिक सेवा की। तब उन्होंने संतुष्ट होकर पुत्रवधु से संकष्टहर चतुर्थीका व्रत करवाया, जिसके प्रभावसे वह मरणपर्यन्त सब प्रकारके सुख साधनोंसे संयुक्त रही।

श्रावण शुक्ल चतुर्थी

दूर्वा गणपति व्रत

पौराणिक ग्रंथ सौरपुराण के अनुशार यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थी को किया जाता है। गणेश जी के पूजन हेतु इसमें मध्याह्नव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है। यदि चतुर्थी दो दिन हो या दोनों दिन न हो तो मातृविद्धा प्रशस्यते के अनुसार पूर्वविद्धा व्रत करना चाहिये।

चतुर्थी दिन प्रातःस्त्रानादि करके सुवर्णके गणेशजी बनवावे जो एकदन्त, चतुर्भूज, गजानन और स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हों।

इसके अतिरिक्त सोनेकी दूर्वा भी बनवावे। फिर सर्वतोभद्र बनाकर मण्डलपर कलश की स्थापन करके उसमें स्वर्णमय दूर्वा लगाकर उसपर उक्त गणेशजीका स्थापन करे।

गणेश जी को रक्तवस्त्रादिसे विभूषित करे और अनेक प्रकारके सुगान्धित पत्र, पुष्पादि अर्पण कर के पूजन करे। बेलपत्र, अपामार्ग, शमीपत्र, दूब आदी अर्पण करें। (शास्रोक्त मत से गणेश पूजन में तुलसी पत्र वर्जित हैं)।

स्तोत्र, आरती, स्तवन आदि का विधिवत उच्चारण कर के गणेश जी की परिक्रमा कर अपराधों के लिए गणेश्वर गणाध्यक्ष गौरीपुत्र गजानन। व्रतं सम्पूर्णातां यातु त्वत्प्रसादादिभानन ॥ का उच्चारण करते हुवे क्षमा-याचना प्रार्थना करें। इस प्रकार तीन या पाँच वर्ष तक व्रत पालन से समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

इस व्रत को करने वाले मनुष्य की संपूर्ण कामनाएँ पूरी होती हैं और अन्त में उसे गणेशजी का पद प्राप्त हो जाता है। विद्वानो का कथ हैं की त्रैलोक्य में इसके समान अन्य कोई व्रत नहीं है।

अधिक मास की गणेश चतुर्थी

व्यासजी के कथनानुशार अधिक मास में चतुर्थी की गणेश्वरके नाम से पूजा करनी चाहिए। पूजन हेतु षोडशोपचार की विधि उत्तम होती है।

चतुर्थी व्रत के लाभ:

हर महीने गणेश जी की प्रसन्नता के निमित्त व्रत करें। इसके प्रभाव से विद्यार्थी को विद्या, धनार्थी को धन प्राप्ति एवं कुमारी कन्या को सुशील वर की प्राप्ति होती है और वह सौभाग्यवती रहकर दीर्घकाल तक पति का सुखभोग करती है। विधवा द्वारा व्रत करने पर अगले जन्म में वह सधवा होती हैं एवं ऐश्वर्य-शालिनी बन कर पुत्र-पौत्रादि का सुख भोगती हुई अंत में मोक्ष पाती है। पुत्रेच्छुको पुत्र लाभ होता एवं रोगी का रोग निवारण होता है। भयभीत व्यक्ति भय रहित होता एवं बंधन में पड़ा हुआ बंधन मुक्त हो जाता है।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी

शिवाचतुर्थीव्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीकी 'शिवा' संज्ञा है। इसमें स्नान, दान, जप और उपवास करनेसे सौगुना प्राप्त फल होता है। स्त्रियाँ यदि इस दिन गुड़, घी, लवण और अपूपादिसे अपने सास श्वशुर या माँ आदिको तृप्त करे तो उनके सौभाग्यकी वृद्धि होती है।

श्री गणेश की प्राकट्य तिथि होने के कारण भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी भगवान गुणेश की वरदायक तिथि अत्याधिक प्रख्यात हुई। उस दिन मध्याह्न काल में भगवान गणेश की प्रतिमा का श्रद्धा-भक्तिपूर्ण पूजन कर गणेश जी के स्मरण, चिंतन एवं नाम-जप का अद्भुत माहात्म्य है। शास्त्रों में उल्लेख हैं की गणेश चतुर्थी का पुण्यमय एवं अत्यंत फलप्रदायिनी है। स्वयं ब्रह्मा जी ने अपने मुखारविन्द से इस तिथि का माहत्य बढाते हुवे कहा है कि इस चतुर्थी व्रत का निरूपण एवं माहात्म्य की संपूर्ण महिमा वखानना शक्य नहीं।

भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी

बहुला चतुर्थी व्रत

भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी बहुला चौथ या चतुर्थी बहुला के नाम से भी प्रसिद्ध है।

हिन्दु मान्यताओं के अनुशार भाद्रपद मास की कृष्ण चतुर्थी के दिन पुत्रवती स्त्रियां अपने पुत्रों की कुशलता एवं मंगलकामना के निमित्त बहुला व्रत रखती हैं। लेकिन कुछ विद्वानो का मत हैं की बहुला चतुर्थी सही मायनों में गो-माता की पूजा एवं वचन पालन की प्रेरणा देने वाला पर्व है।

जिस प्रकार मां की तरह गो-माता अपना दूध पिलाकर हम सबको पालती है, इस लिए हमें अत:मन में उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखकर ही यह व्रत करना चाहिए। यह व्रत संतान सुख का देनेवाला तथा ऐश्वर्य को बढाने वाला है।

पारंपरिक रूप से इस दिन व्रत को करने वाली स्त्रीयां इस पर्व के दिन गाय का दूध एवं उससे निर्मित कोई पदार्थ नहीं खाती हैं। क्योकी, इस तिथि में गाय के दूध पर केवल उसके बछडे का अधिकार माना जाता है।

दिन भर उपवास रखने के बाद सायंकाल बछडे सहित गौ की पूजा की जाती हैं। कुल्हड में खाने की जो सामग्री को रखकर गाय को भोग लगाया जाता है, बाद में स्त्रीयां उसी को प्रसाद के रूप में ग्रहण करती है। कई जगय इस दिन जौ के सत्तू तथा गुड का भोग भी लगाकर खाया जाता है।

बहुलाचतुर्थी के व्रत से यह प्रेरणा मिलती है हमें हमेंशा सत्य के साथ-साथ अपने कर्तव्य एवं वचनों का सदा पालन होना चाहिए।

विद्वानो के मतानुशार भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को बहुलासहित गणेश की गंध, पुष्प, माला और दूर्वा आदि के द्वारा विधि-विधान से पूजा कर परिक्रमा करनी चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार दान-पुण्य करें। दान करने की स्थिति न हो तो बहुला गो माता कि प्रतिमा को

प्रणाम कर उसका विसर्जन कर दें। इस प्रकार पाँच, दस या सोलह वर्षों तक इस व्रत का पालन करके उद्यापन करें। उस समय दूध देने वाली स्वस्थ गाय का दान करना चाहिए।

आश्विन कृष्ण चतुर्थी

आश्विन कृष्ण चतुर्थीको व्रत हो और उसी दिन माता - पिता आदिका श्राद्ध भी करना हो तो विद्वानो के मतानुशार दिनमें श्राद्ध करके ब्राहमणोंको भोजन करा दे और अपने हिस्सेके भोजनको सूँघकर गौ को खिला दे। रात्रिमें चन्द्रोदयके बाद स्वयं भोजन करे।

व्रत कथा:

पौराणिक कथा के अनुशार एक बार बाणासुरकी पुत्री ऊषाको स्वप्न में कृष्ण पौत्र अनिरुद्धका दर्शन हुआ। ऊषाको उनके प्रत्यक्ष दर्शनकी अभिलाषा हुई और उसने चित्रलेखाके द्वारा अनिरुद्धको अपने घर बुला लिया। इससे अनिरुद्धकी माताको बड़ा कष्ट हुआ। इस संकटको टालनेके लिये माताने व्रत किया, तब इस व्रतके प्रभावसे ऊषाके यहाँ छिपे हुए अनिरुद्धका पता लग गया और ऊषा तथा अनिरुद्ध द्वारका आ गये।

आश्विन शुक्ल चतुर्थी

आश्विन शुक्ल चतुर्थी नवरात्र में पड़ने के कारण मां भगवती के पूजन के साथ रात्री जागरण करने का विशेष महत्व हैं एवं इस दिन गणेश जी का पुरुषसूक्त द्वारा षोडशोपचार पूजन करके भक्तिपूर्वक पूजा का विशेष माहात्म्य है।

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी

कृच्छ्र चतुर्थी व्रत:

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी की कृच्छ्र चतुर्थी कहा जाता है।

पौराणिक ग्रंथ स्कन्दपुराण में उल्लेख हैं की कृच्छ्रचतुर्थी व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीसे आरम्भ होकर प्रत्येक चतुर्थीको वर्षपर्यन्त करके फिर दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष में करनेसे चार वर्षमें पूर्ण होता है।

कृच्छ्रचतुर्थी व्रत की विधि यह है कि पहले वर्षमें (मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी को) प्रातःस्त्रानके पश्चात् व्रतका नियम ग्रहण करके गणेशजीका यथाविधि पूजन करे।

नैवेद्यमें लड्डू तिलकुटा, जौका मँडका और सुहाली अर्पण करके इस मंत्र का उच्चारण करें..

त्वत्प्रसादेन देवेश व्रतं वर्षचतुष्टयम्।
निर्विघ्नेन तु मे यातु प्रमाणं मूषकध्वज ॥
संसारार्णवदुस्तारं सर्वविघ्नसमाकुलम्।
तस्माद् दीनं जगन्नाथ त्राहि मां गणनायक ॥

प्रार्थना करके एक बार परिमित भोजन करे। इस प्रकार प्रत्येक चतुर्थीको करता रहकर दूसरे वर्ष उसी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको पुनः यथापूर्व नियम ग्रहण, व्रत और पूजा करके फक्त (रात्रिमें एक बार) भोजन करे। इसी प्रकार प्रत्येक चतुर्थीको वर्षपर्यन्त करके तीसरे वर्ष फिर मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको व्रत नियम और पूजा करके अयाचित (अर्थात बिना माँगे जो कुछ जितना मिले उसीका एक बार) भोजन करे।

इस प्रकार एक वर्ष तक प्रत्येक चतुर्थीको व्रत करके चौथे वर्षमें उसी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीको नियम ग्रहण, व्रत संकल्प और पूजनादि करके निराहार उपवास करे। इस प्रकार वर्षपर्यन्त प्रत्येक चतुर्थीको व्रत करके चौथा वर्ष समाप्त होनेपर सफेद कमलपर ताँबेका कलश स्थापन करके सुवर्णके गणेशजीका पूजन करे। सवत्सा गौका दान करे, हवन करे और चौबीस सपत्नीक ब्राह्मणोंको भोजन करवाकर वस्त्राभूषणादि देकर स्वयं भोजन करे तो इस व्रतके करनेसे सब प्रकारके विघ्न दूर हो जाते हैं और व्रती को सब प्रकारकी सम्पत्ति प्राप्त होती है।

वरचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ स्कन्दपुराण में उल्लेख हैं की यह व्रत कृच्छ्रचतुर्थीके समान यह व्रत भी मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थीसे आरम्भ होकर चार वर्षमें पूर्ण होता है।

प्रथम वर्षमें प्रत्येक चतुर्थीको दिनार्द्धके समय एक बार अलोन (बिना नमक का) भोजन, दूसरे वर्षमें नक्त (रात्रि) भोजन, तीसरेमें अयाचित भोजन और चौथेमें उपवास करके यथापूर्व समाप्त करे। यह व्रत सब प्रकारकी अर्थसिद्धि देने वाला है।

परिमित भोजनके विषयमें कहीं पर 32 ग्रास और किसीने 29 ग्रास बतलाये हैं।

स्मृत्यन्तर में उल्लेख हैं

अष्टौ ग्रासा मुनेर्भक्ष्याः षोडशारण्यवासिनः।
द्वात्रिंशद् गृहस्थया परिमितं ब्रह्मचारिणः ॥

अर्थात: मुनिको आठ, वनवासियोंको सोलह, गृहस्थोंको बत्तीस और ब्रह्मचारियोंको अपरिमित (यथारुचि) ग्रास भोजन करनेको कहा गया है।

ग्रासका प्रमाण है एक आँवलेके बराबर अथवा जितना सुगमतासे मुँहमें जा सके, उतना एक ग्रास होता है। न्यून भोजनके लिये (याज्ञवल्क्यने) तीन ग्रास नियत किये हैं।

मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी

चिंतामणी चतुर्थी व्रत:

मार्गशीर्ष कृष्ण चतुर्थी को चिंतामणी चतुर्थी के नाम से जाना जाता हैं। विद्वानो के कथनानुशार इस दिन पूरा दिन केवल पानी पिकर उपवास किया जाता हैं। रात्री के समय चन्द्रोदय के बाद कलश पर श्रीचिंतामणी गणेश की स्थापना कर उसका विधि-वत पूजन करने का विधान हैं। नैवेद्य में मोदक का भोग लगाये।

पौष कृष्ण चतुर्थी

संकष्टचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार पौष कृष्ण चतुर्थी को गणपति स्मरणपूर्वक प्रातःस्त्रानादि नित्यकर्म करनेके पश्चात् संकल्प करके दिनभर मौन रहे। रात्रिमें पुनः स्त्रान करके गणपति - पूजनके पश्चात् चन्द्रोदयके बाद चन्द्रमाका पूजन करके अर्घ्य दे, फिर भोजन करने का विधान बताया गया हैं।

पौष शुक्ल चतुर्थी

पौष शुक्ल व्रत विधि पूर्वक करने वाले मनुष्य को धन-संपत्ति का अभाव नहीं रहता। उसी सभी प्रकार के सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती हैं।

माघ शुक्ल चतुर्थी

शान्तिचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार माघ शुक्ल चतुर्थीको गणेशजीका पूजन करके घीमें सने हुए गुड़के पूआ और लवणके पदार्थ अर्पण करे और गुरुदेवकी पूजा करके उनको गुड़, लवण और घी दे तो इस व्रतसे सब प्रकारकी स्थिर शान्ति प्राप्त होती है।

अंगारकचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ मत्स्यपुराण के अनुशार यदि माघ शुक्ल चतुर्थीको मंगलवार हो तो उस दिन प्रातःस्त्रानके पहले शरीरमें मिट्टी लगाकर शुद्ध स्त्रान करे, लाल धोती पहने, वस्त्राअभूषण आदि से सुसज्जित धारण करे और उत्तराभिमुख बैठकर 'अग्निमूर्द्धा' मन्त्नका जप करे। फिर भूमिको गोबरसे लीपकर अङ्गरकाय भौमाय नमः का जप करे। फिर उसपर लाल चन्दनका अष्टदल बनाये तथा उसकी पूर्वादि चारों दिशाओंमें भक्ष्य भोजन और चावलोंसे भरे हुए चार करवे रख कर गन्धाक्षतादिसे पूजन करके। दान में कपिला गौ और लाल रंगका अतीव सौम्य धुरंधर बैल देना और साथमें शय्या देना सहस्त्रगुण फल देने वाला होता है।

सुखचतुर्थी व्रत:

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार

चतुर्थी तु चतुर्थी तु यदाङ्गारकसंयुता।
चतुर्थ्यां तु चतुर्थ्यां तु विधानं श्रृणु यादृशम् ॥

माघ शुक्ल चतुर्थीको यदि मंगलवार हो तो लाल वर्णके गन्ध, अक्षत और पुष्प, नैवेद्यसे गणेशजीका पूजन करके उपवास करे। इस प्रकार चार-चार चतुर्थी (माघ, वैशाख, भाद्रपद और पौष) का एक वर्ष व्रत करे तो सब प्रकारके सुख प्राप्त होते हैं। प्रत्येक चतुर्थीको भौमवार होना आवश्यक है।

गणेशव्रत

पौराणिक ग्रंथ भविष्यपुराण के अनुशार माघ शुक्ल पूर्वविद्धा चतुर्थीको प्रातः स्त्रानादि करके संकल्प करके वेदीपर लाल वस्त्र बिछाये। लाल अक्षतोंका अष्टदल बनाकर उसपर सिन्दूरचर्चित गणेशजीको स्थापित करे। स्वयं लाल धोती पहनकर लाल वर्णके फल पुष्पादिसे षोडशोपचार पूजन करे। नैवेद्यमें (भिगोकर छीली हुई) हल्दी, गुड़, शक्कर और घी इनको मिलाकर भोग लगाये और नक्तव्रत (रात्रिमें एक बार भोजन करे तो सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध होते हैं।

माघ कृष्ण चतुर्थी

वक्रतुण्डचतुर्थी

पौराणिक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार माघ कृष्ण चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थीको वक्रतुण्डचतुर्थी कहते हैं। इस व्रतका आरम्भ संकल्प करके करे। सायंकालमें गणेशजीका और चन्द्रोदयके समय चन्द्रका पूजन करके अर्घ्य दे। इस व्रतको माघसे आरम्भ करके हर महीनेमें करे तो संकटका नाश हो जाता है।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी

ढुण्ढिराज व्रत:

फाल्गुन मास की चतुर्थी को मंगलदायक ढुण्ढिराज व्रत किया जाता है। चतुर्थी के दिन व्रत-उपवास के साथ गणेशजी की सोने की मूर्ति बनवाकर उसकी श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पूजा की जाति हैं। गणेशजी को प्रसन्न करने के लिए उस दिन तिल से ही दान, होम, पूजन आदि किये जाते हैं। उस दिन तिल के पीठे से ब्राह्मणों को भोजन कराकर व्रती स्वयं भी भोजन करते हैं। इस व्रत के प्रभाव से समस्त सम्पदाओं की वृद्धि होती है और मनुष्य गणेशजी की कृपा से ही सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

मत्स्यपुराण के अनुसार फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी को मनोरथ चतुर्थी कहते हैं। पूजनोपरान्त नक्तव्रत का विधान है। इस प्रकार बारहों महीने की प्रत्येक शुक्ल चतुर्थी को व्रत करते हुए वर्षभर के बाद उस स्वर्णमूर्ति का दान करने से मनोरथ सिद्ध होते हैं। अग्निपुराण में इसको अविघ्ना चतुर्थी कहां गया है।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी

फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्थी को तिल चतुर्थी भी कहां जाता हैं

चैत्र कृष्ण चतुर्थी

चैत्र मास की चतुर्थी को वासुदेवस्वरूप भगवान श्रीगणेश का विधिपूर्वक पूजन कर ब्राह्मण को दक्षिणा के रुप में सुवर्ण देने पर मनुष्य को संपूर्ण देवताओं से वंदित हो जाता हैं और वह श्री विष्णु लोक को प्राप्त करता है।

कथा:

पौराणिक कथा के अनुशार प्राचीन कालमें मयूरध्वज नामका राजा बड़ा प्रभावशाली और धर्मज्ञ था। एक बार उसका पुत्र कहीं खो गया और बहुत अनुसंधान करनेपर भी न मिला। तब मन्त्रिपुत्रकी धर्मवती स्त्रीके अनुरोधसे राजाके सम्पूर्ण परिवाने चैत्र कृष्ण चतुर्थीका बड़े समारोहसे यथाविधि व्रत किया। तब भगवान गणेशजीकी कृपासे राजपुत्र आ गया और उसने मयूरध्वजकी आजीवन सेवा की।

वैशाख कृष्ण चतुर्थी

वैशाख मास की चतुर्थी को संकष्टी गणेश का पूजा कर ब्राह्मणों को शंख का दान करना चाहिए। इसके प्रभाव से मनुष्य समस्त लोक में कल्पों तक सुख प्राप्त करता है।

वैशाख शुक्ल चतुर्थी

वैशाख मास की कृष्ण चतुर्थी को श्रीकृष्णपिंगाक्ष गणपति का पूजन किया जाता हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी

संकष्टचतुर्थीव्रत:

पौराणुक ग्रंथ भविष्योत्तर के अनुशार ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थीको, प्रातःस्त्रानादि नित्यकर्म करके व्रतके संकल्पसे दिनभर मौन रहे। सायंकालमें पुनः स्त्रान करके गणेशजीका और चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा का पूजन करे तथा शंखमें दूध, दूर्वा, सुपारी आदि से विधिवत पूजन करें। वायन दान करके भोजन करे।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी

ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को प्रद्यरूपी गणेश की पूजा कर ब्राह्मणों को फल-मूल का दान करने से व्रतधारी को स्वर्गलोक प्राप्त होते हैं।

आषाढ़ चतुर्थी

आषाढ़ मास की चतुर्थी को अनिरुद्धस्वरूप गणेश का विधिपूर्वक पूजन करके संन्यासियों को तूंबी का पात्र दान करना चाहिए। इस व्रत को करने वाला मनुष्य को मनोवांछित फल प्राप्त होते है।

चतुर्थी के दिन मनुष्य श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मंगलमूर्ति गणेश का विधिवत पूजन कर एसा उर्लभ फल प्राप्त कर लेता है, जो देव समुदाय के लिए भी अप्राप्त्य है।

नोट: आपकी अनुकूलता हेतु गणेश पूजन की सरल विधि इस अंक में उपलब्ध करवाई गई हैं। कृप्या उस विधि से पूजन करने से पूर्व किसी जानकार गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श अवश्य करलें। क्योकि प्रांतिय व क्षेत्रिय पूजन पद्धति में भिन्नता होने के कारण पूजन विधि में भिन्नता संभव हैं। उपलब्ध करवाई गई पूजन पद्धति को सरल से सरल बनाकर केवल आपके मर्गदर्शन के उद्देश्य से प्रदान की गई हैं।

विशेष सुझाव: जो लोग सुवर्ण मूर्ति बनवाने या दान करने की क्षमता न हो तो वर्णक (अर्थात हल्दी चूर्ण) से ही गणपति की प्रतिमा बना कर पूजन कर सकते हैं या दान कर सकते हैं।

॥ संकष्टहरणं गणेशाष्टकम् ॥

ॐ अस्य श्री संकष्टहरणस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहागणपतिर्देवता, संकष्टहरणार्थ जपे विनियोगः।

ॐ ॐ ॐ काररूपम् त्र्यहमिति च परम् यत्स्वरूपम् तुरीयम् त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दूर-मूर्तिम्। योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्ध्रैः सकल-गुणमयं श्रीहरेन्द्रेणसंगं गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति ॥१॥ वं वं वं विघ्नराजं भजति निजभुजे दक्षिणे न्यस्तशुण्डं क्रं क्रं क्रं क्रोधमुद्रा-दलित-रिपुबलं कल्पवृक्षस्य मूले। दं दं दं दन्तमेकं दधति मुनिमुखं कामधेन्वा निषेव्यम् धं धं धं धारयन्तं धनदमतिघियं सिद्धि-बुद्धि-द्वितीयम् ॥२॥ तुं तुं तुं तुंगरूपं गगनपथि गतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तान् क्लीं क्लीं क्लींकारनाथं गलितमदमिलल्लोल-मत्तालिमालम्। ह्रीं ह्रीं ह्रींकारपिंगं सकलमुनिवर-ध्येयमुण्डं च शुण्डं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रयन्तं निखिल-निधिकुलं नौमि हेरम्बबिम्बम् ॥३॥ लौं लौं लौंकारमाद्यं प्रणवमिव पदं मन्त्रमुक्तावलीनाम् शुद्धं विघ्नेशबीजं शशिकरसदृशं योगिनां ध्यानगम्यम्। डं डं डं डामरूपं दलितभवभयं सूर्यकोटिप्रकाशम् यं यं यं यज्ञनाथं जपति मुनिवरो बाह्यमभ्यन्तरं च ॥४॥ हुं हुं हुं हेमवर्णं श्रुति-गणितगुणं शूर्पकर्णं कृपालुं ध्येयं सूर्यस्य बिम्बं ह्युरसि च विलसत् सर्पयज्ञोपवीतम्। स्वाहाहुंफट् नमोन्तैष्ठ-ठठठ-सहितैः पल्लवैः सेव्यमानम् मन्त्राणां सप्तकोटि-प्रगुणित-महिमाधारमोशं प्रपद्ये ॥५॥ पूर्वं पीठं त्रिकोणं तदुपरि रुचिरं षट्कपत्रं पवित्रम् यस्योर्ध्वं शुद्धरेखा वसुदलकमलं वो स्वतेजश्चतुस्रम्। मध्ये हुंकारबीजं तदनु भगवतः स्वांगषट्कं षडस्रे अष्टौ शक्तीश्च सिद्धीर्बहुलगणपतिर्विष्टरश्चाष्टकं च ॥६॥ धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दशदिशि विदिता वा ध्वजाल्यः कपालं तस्य क्षेत्रादिनाथं मुनिकुलमखिलं मन्त्रमुद्रामहेशम्। एवं यो भक्तियुक्तो जपति गणपतिं पुष्प-धूपा-क्षताद्यैर्नैवेद्यैर्मोदकानां स्तुतियुत-विलसद्-गीतवादित्र-नादैः ॥७॥ राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत्सर्वदास्ते लक्ष्मीः सर्वांगयुक्ता श्रयति च सदनं किंकराः सर्वलोकाः। पुत्राः पुत्र्यः पवित्रा रणभूवि विजयी द्यूतवादेपि वीरो यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्तिभाग्यस्य रुद्रः ॥८॥ ॥

इति श्री संकष्टहरणं गणेशाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥गणेश पंचरत्नम्॥

मुदा करात्तमोदकम् सदा विमुक्तिसाधकम्
कलाधरावतम्सकम् विलासिलोकरक्षकम्।
अनायकैक नायकम् विनाशितेभदैत्यकम्
नताशुभाशुनाशकम् नमामि तम् विनायकम् ॥१॥

नतेतरातिभीकरम् नवोदितार्कभास्वरम्
नमत्सुरारिनिर्जरम् नताधिकापदुद्धरम्।
सुरेश्वरम् निधीश्वरम् गजेश्वरम् गणेश्वरम्
महेश्वरम् तमाश्रये परात्परम् निरन्तरम् ॥२॥

समस्तलोकशङ्करम् निरस्तदैत्यकुन्जरम्
दरेतरोदरम् वरम् वरेभवक्त्रमक्षरम्।
कृपाकरम् क्षमाकरम् मुदाकरम् यशस्करम्
मनस्करम् नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥३॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्ति भाजनम्
पुरारिपूर्वनन्दनम् सुरारिगर्वचर्वणम्।
प्रपञ्चनाशभीषणम् धनञ्जयादि भूषणम्
कपोलदानवारणम् भजे पुराणवारणम् ॥४॥

नितान्तकान्त दन्तकान्ति मन्तकान्तकात्मजम्
अचिन्त्यरूप मन्तहीन मन्तराय कृन्तनम्।
हृदन्तरे निरन्तरम् वसन्तमेव योगिनाम्
तमेकदन्तमेव तम् विचिन्तयामि सन्ततम् ॥५॥

महागणेश पंचरत्नमादरेण योन्वहम्
प्रजल्पति प्रभातके हृदिस्मरन्गणेश्वरम्।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोचिरात् ॥६॥

॥इति श्री गणेश पंचरत्नम् सम्पुर्ण॥

एकदन्त शरणागति स्तोत्रम्

एकदन्तम् शरणम् व्रजाम:

देवर्षय ऊचु:

सदात्मरूपं सकलादिभूतममायिनं सोऽहमचिन्त्यबोधम्। अनादिमध्यान्तविहीनमेकं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ अनन्तचिद्रूपमयं गणेशमभेदभेदादिविहीनमाद्यम्। हृदि प्रकाशस्य धरं स्वधीस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ समाधिसंस्थं हृदि योगिनां यं प्रकाशरूपेण विभातमेतम्। सदा निरालम्बसमाधिगम्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ स्वबिम्बभावेन विलासयुक्तां प्रत्यक्षमायां विविधस्वरूपाम्। स्ववीर्यकं तत्र ददाति यो वै तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ त्वदीयवीर्येण समर्थभूतस्वमायया संरचितं च विश्वम्। तुरीयकं ह्यात्मप्रतीतिसंज्ञं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ त्वदीयसत्ताधरमेकदन्तं गुणेश्वरं यं गुणबोधितारम्। भजन्तमत्यन्तमजं त्रिसंस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ ततस्त्वया प्रेरितनादकेन सुषुप्तिसंज्ञं रचितं जगद् वै। समानरूपं ह्युभयत्रसंस्थं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ तदेव विश्वं कृपया प्रभूतं द्विभावमादौ तमसा विभान्तम्। अनेकरूपं च तथैकभूतं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ ततस्त्वया प्रेरितकेन सृष्टं बभूव सूक्ष्मं जगदेकसंस्थम्। सुसात्त्विकं स्वपन्मनन्तमाद्यं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ तदेव स्वपन् तपसा गणेश सुसिद्धरूपं विविधं बभूव। सदैकरूपं कृपया च तेऽद्य तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ त्वदाज्ञया तेन त्वया हृदिस्थं तथा सुसृष्टं जगदंशरूपम्। विभिन्नजाग्रन्मयमप्रमेयं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ तदेव जाग्रद्रजसा विभातं विलोकितं त्वत्कृपया स्मृतेन। बभूव भिन्न च सदैकरूपं तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ सदेव सृष्टिप्रकृतिस्वभावात्तदन्तरे त्वं च विभासि नित्यम्। धिय: प्रदाता गणनाथ एकस्तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ त्वदाज्ञया भान्ति ग्रहाश्च सर्वे प्रकाशरूपाणि विभान्ति खे वै। भ्रमन्ति नित्यं स्वविहारकार्यास्तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ त्वदाज्ञया सृष्टिकरो विधाता त्वदाज्ञया पालक एकविष्णु:। त्वदाज्ञया संहरको हरोऽपि तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ यदाज्ञया भूमिजलेऽत्र संस्थे यदाज्ञयाप: प्रवहन्ति नद्य:। स्वतीर्थसंस्थश्च कृत: समुद्रस्तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ यदाज्ञया देवगणा दिविस्था ददन्ति वै कर्मफलानि नित्यम्। यदाज्ञया शैलगणा: स्थिरा वै तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:। यदाज्ञया देवगणा दिविस्था ददन्ति वै कर्मफलानि नित्यम्। यदाज्ञया शैलगणा: स्थिरा वै तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ यदाज्ञया शेषधराधरो वै यदाज्ञया मोहप्रदश्च काम:। यदाज्ञया कालधरोऽर्यमा च तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ यदाज्ञया वाति विभाति वायुर्यदाज्ञयाग्निर्जठरादिसंस्थ:। यदाज्ञयेदं सचराचरं च तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ यदन्तरे संस्थितमेकदन्तस्तदाज्ञया सर्वमिदं विभाति। अनन्तरूपं हृदि बोधकं यस्तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥ सुयोगिनो योगबलेन साध्यं प्रकुर्वते क: स्तवनेन स्तौति। अत: प्रणामेन सुसिद्धिदोऽस्तु तमेकदन्तं शरणं व्रजाम:॥

गृत्समद उवाच

एवं स्तुत्वा गणेशानं देवा: समुनय: प्रभुम्। तृष्णीं भावं प्रपद्यैव ननृतुर्हर्षसंयुता:॥ स तानुवाच प्रीतात्मा देवर्षीणां स्तवेन वै। एकदन्तो महाभागो देवर्षीन् भक्तवत्सल:॥

एकदन्त उवाच

स्तोत्रेणाहं प्रसन्नोऽस्मि सुरा: सर्षिगणा: किल। वरदोऽहं वृणुत वो दास्यामि मनसीप्सितम्॥ भवत्कृतं मदीयं यत् स्तोत्रं प्रीतिप्रदं च तत्। भविष्यति न संदेह: सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥ यं यमिच्छति तं तं वै दास्यामि स्तोत्रपाठत:। पुत्रपौत्रादिकं सर्व कलत्रं धनधान्यकम्॥ गजाश्वादिकमत्यन्तं राज्यभोगादिकं ध्रुवम्। भुक्तिं मुक्तिं च योगं वै लभते शान्तिदायकम्॥ मारणोच्चाटनादीनि राजबन्धादिकं च यत्। पठतां श्रृण्वतां नृणां भवेच्च बन्धहीनता॥ एकविंशतिवारं य: श्लोकानेवैकविंशतीन्। पठेच्च हृदि मां स्मृत्वा दिनानि त्वेकविंशतिम्॥ न तस्य दुर्लभं किञ्चत् त्रिषु लोकेषु वै भवेत्। असाध्यं साध्येन्मर्त्य: सर्वत्र विजयी भवेत्॥ नित्यं य: पठति स्तोत्रं ब्रह्मभूत: स वै नर:। तस्य दर्शनत: सर्वे देवा: पूता भवन्ति च॥

- प्रतिदिन इस इक्कीस श्लोकों का इक्कीस दिनों तक प्रतिदिन इक्कीस बार पाठ करता हैं उसे सर्वत्र विजय प्राप्त होती हैं।
- इस स्तोत्र के पाठ से व्यक्ति को सर्व इच्छीत वस्तु कि प्राप्ति होती हैं। पुत्र-पौत्र आदि, कलत्र, धन-धान्य, उत्तम वाहन एवं समस्त भौतिक सुख साधनो एवं शांति कि प्राप्ति होती हैं।

अन्य द्वारा किये जाने वाले मारण, उच्चाटन और मोहन आदि प्रयोग से व्यक्ति कि रक्षा होती हैं।

अनंत चतुर्दशी व्रत विशेष फलदायी हैं।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अनंत चतुर्दशी का व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को किया जाता हैं। इस दिन भगवान नारायण की कथा की जाती है। इस दिन अनन्त भगवान की पूजा करके भक्तगण वेद-ग्रंथों का पाठ करके संकटों से रक्षा करने वाला अनन्तसूत्रबांधा जाता हैं।

अनंत चतुर्दशी का व्रत की पूजा दोपहर में की जाती हैं।

व्रत-पूजन विधान:

- अनंत चतुर्दशी का व्रत वाले दिन व्रती को प्रातः स्नान करके निम्न मंत्र से संकल्प करना चाहिये।

ममाखिलपापक्षयपूर्वक शुभफलवृद्धये
श्रीमदनंतप्रीतिकामनया अनंतव्रतमहं करिष्ये।

- शास्त्रों में यद्यपि व्रत का संकल्प एवं पूजन किसी पवित्र नदी या सरोवर के तट पर करने का विधान है, यदि यहं संभव न हो, तो घर में पूजागृह की स्वच्छ भूमि को सुशोभित करके कलश स्थापित करें।
- कलश पर अष्टदल कमल के समान बने बर्तन पर शेषनाग की शैय्यापर लेटे भगवान विष्णु की मूर्ति अथवा चित्र को रखें।
- मूर्ति के सम्मुख कुमकुम, केसर या हल्दी से रंगा चौदह गाँठों वाला 'अनंत' अर्थात सूत्र या घागा भी रखें।
- इसके बाद ॐ अनन्तायनमः मंत्र से भगवान विष्णु तथा अनंतसूत्रकी षोडशोपचार-विधिसे पूजा करें।
- पूजनोपरांत अनन्तसूत्रको मंत्र पढकर पुरुष अपने दाहिने हाथ और स्त्री बाएं हाथ में बांध लें:

अनंन्तसागरमहासमुद्रेमग्नान्समभ्युद्धरवासुदेव।
अनंतरूपेविनियोजितात्माहृयनन्तरूपायनमोनमस्ते॥

नवीन अनंत को धारण कर पुराने का त्याग निम्न मंत्र से करें-

न्यूनातिरिक्तानि परिस्फुटानि यानीह कर्माणि मया कृतानि।
सर्वाणि चैतानि मम क्षमस्व प्रयाहि तुष्टः पुनरागमाय॥

- अनंतसूत्रबांध लेने के पश्चात किसी ब्राह्मण को नैवेद्य (भोग) में निवेदित पकवान देकर स्वयं सपरिवार प्रसाद ग्रहण करें।
- पूजा के बाद व्रत-कथा को पढें या सुनें।
- अनंत व्रत भगवान विष्णु को प्रसन्न करने वाला तथा अनंत फलदायक माना गया है।
- अनंत व्रत में भगवान विष्णु से धन-पुत्रादि की कामना से किया जाता है।
- विद्वानो के मत से अनंत की चौदह गांठें चौदह लोकों की प्रतीक हैं, जिनमें अनंत भगवान विद्यमान हैं।

अनंत चतुर्दशी व्रतकथा

पोराणिक कथाके अनुशार एक बार महाराज युधिष्ठिर ने राजसूययज्ञ किया। यज्ञमंडप का निर्माण अति सुंदर था ही, अद्भुत भी था। उसमें जल में स्थल तथा स्थल में जल की भ्रांति उत्पन्न होती थी। पूरी सावधानी के बाद भी बहुत से अतिथि उस अद्भुत मंडप में धोखा खा चुके थे। दुर्योधन भी उस यज्ञमंडप में घूमते हुए स्थल के भ्रम में एक तालाब में गिर गए।

तब भीमसेन तथा द्रौपदी ने 'अंधों की संतान अंधी' कहकर दुर्योधन का मजाक उड़ाया। इससे दुर्योधन चिढ़ गया। उसके मन में द्वेष पैदा हो गया और मस्तिक में उस अपमान का बदला लेने के विचार उपजने लगे। काफी दिनों तक वह इसी उल्झन में रहा कि आखिर पाँडवों से अपने अपमान का बदला किस प्रकार लिया जाए। तभी उसके मस्तिष्क में द्यूत क्रीड़ा में पाँडवों को

हराकर उस अपमान का बदला लेने की युक्ति आई। उसने पाँडवों को जुए के लिए न केवल आमंत्रित ही किया बल्कि उन्हें जुए में पराजित भी कर दिया।

पराजित होकर पाँडवों को बारह वर्ष के लिए वनवास भोगना पड़ा। वन में रहते हुए पाँडव अनेक कष्ट सहते रहे। एक दिन वन में युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से अपना दुःख कहा तथा उसको दूर करने का उपाय पूछा। तब श्रीकृष्ण ने कहा- हे युधिष्ठिर! तुम विधिपूर्वक अनंत भगवान का व्रत करो। इससे तुम्हारे सारे संकट दूर हो जाएगा। तुम्हें हारा हुआ राज्य भी वापस मिल जाएगा।

युधिष्ठिर के आग्रह पर इस संदर्भ में श्रीकृष्ण एक कथा सुनाते हुए बोले- प्राचीन काल में सुमन्तु ब्राह्मण की परम सुंदरी तथा धर्मपरायण सुशीला नामक कन्या थी। विवाह योग्य होने पर ब्राह्मण ने उसका विवाह कौंडिन्य ऋषि से कर दिया। कौंडिन्य ऋषि सुशीला को लेकर अपने आश्रम की ओर चले तो रास्ते में ही रात हो गई। वे एक नदी के तट पर संध्या करने लगे।

सुशीला ने देखा- वहाँ पर बहुत-सी स्त्रियाँ सुंदर-सुंदर वस्त्र धारण करके किसी देवता की पूजा कर रही हैं। उत्सुकतावश सुशीला ने उनसे उस पूजन के विषय में पूछा तो उन्होंने विधिपूर्वक अनंत व्रत की महत्ता बता दी। सुशीला ने वहीं उस व्रत का अनुष्ठान करके चौदह गांठों वाला डोरा हाथ में बाँधा और अपने पति के पास आ गई।

कौंडिन्य ऋषि ने सुशीला से डोरे के बारे में पूछा तो उसने सारी बात स्पष्ट कर दी। परंतु ऐश्वर्य के मद में अंधे हो चुके कौंडिन्य ऋषि को इससे कोई प्रसन्नता नहीं हुई, बल्कि क्रोध में आकर उन्होंने उसके हाथ में बंधे डोरे को तोड़कर आग में जला दिया।

यह अनंतजी का घोर अपमान था। उनके इस दुष्कर्म का परिणाम भी शीघ्र ही सामने आ गया। कौंडिन्य मुनि दुःखी रहने लगे।

उनकी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई। इस दरिद्रता का कारण पूछने पर सुशीला ने डोरे जलाने की बात दोहराई। तब पश्चाताप करते हुए ऋषि 'अनंत' की प्राप्ति के लिए वन में निकल गए।

जब वे भटकते-भटकते निराश होकर गिर पड़े तो भगवान अनंत प्रकट होकर बोले- 'हे कौंडिन्य! मेरे तिरस्कार के कारण ही तुम दुःखी हुए हो लेकिन तुमने पश्चाताप किया है, अतः मैं प्रसन्न हूँ। पर घर जाकर विधिपूर्वक अनंत व्रत करो। चौदह वर्ष पर्यन्त व्रत करने से तुम्हारा सारा दुःख दूर हो जाएगा। तुम्हें अनंत सम्पत्ति मिलेगी।

कौंडिन्य ऋषि ने वैसा ही किया। उन्हें सारे क्लेशों से मुक्ति मिल गई। श्रीकृष्ण की आज्ञा से युधिष्ठिर ने भी भगवान अनंत का व्रत किया जिसके प्रभाव से पाँडव महाभारत के युद्ध में विजयी हुए तथा चिरकाल तक निष्कंटक राज्य करते रहे।

गणेशजी को दुर्वा-दल चढ़ाने का मंत्र

गणेशजी को 21 दुर्वादल चढ़ाई जाती है। दो दुर्वा-दल नीचे लिखे नाममंत्रों के साथ चढ़ाएं।

ॐ गणाधिपाय नमः।
ॐ उमापुत्राय नमः।
ॐ विघ्ननाशनाय नमः।
ॐ विनायकाय नमः।
ॐ ईशपुत्राय नमः।
ॐ सर्वसिद्धप्रदाय नमः।
ॐ एकदन्ताय नमः।
ॐ इभवक्त्राय नमः।
ॐ मूषकवाहनाय नमः।
ॐ कुमारगुरवे नमः।

मनोवांछित फलो कि प्राप्ति हेतु सिद्धि प्रद गणपति स्तोत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करने से मनोवांछित फल शीघ्र प्राप्त होते हैं।

मनोवांछित फल प्राप्त करने हेतु गणेशजी के चित्र या मूर्ति के सामने मंत्र जाप कर सकते हैं। पूर्ण श्रद्धा एवं पूर्ण विश्वास के साथ मनोवांछित फल प्रदान करने वाले इस स्तोत्र का प्रतिदिन कम से कम 21 बार पाठ अवश्य करें।

अधिकस्य अधिकं फलम्।

जप जितना अधिक हो सके उतना अच्छा है। यदि मंत्र अधिक बार जाप कर सकें तो श्रेष्ठ। प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय करें, फल शीघ्र प्राप्त होता है।

कामना पूर्ण होने के पश्चयात भी नियमित स्त्रोत ला पाठ करते रहना चाहिए। कुछ एक विशेष परिस्थिति में पूर्व जन्म के संचित कर्म स्वरूप प्रारब्ध की प्रबलता के कारण मनोवांछित फल की प्राप्ति या तो देरी संभव हैं!

मनोवांछित फल की प्राप्ति के अभाव में योग्य विद्वान की सलाह लेकर मार्गदर्शन प्राप्त करना उचित होगा। अविश्वास व कुशंका करके आराध्य के प्रति अश्रद्धा व्यक्त करने से व्यक्ति को प्रतिकूल प्रिरिणाम हि प्राप्त होते हैं। शास्त्रोक्त वचन हैं कि भगवान (इष्ट) कि आराधना कभी व्यर्थ नहीं जाती।

मंत्र:- *गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥*

विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः। द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्॥

विश्वं तस्य भवेद्वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित्। (पद्म पु. पृ. 61।31-33)

भावार्थ: गणपति, विघ्नराज, लम्बतुण्ड, गजानन, द्वैमातुर, हेरम्ब, एकदन्त, गणाधिप, विनायक, चारुकर्ण, पशुपाल और भवात्मज- गणेशजी के यह बारह नाम हैं। जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर इनका नियमित पाठ करता हैं, संपूर्ण विश्व उनके वश में हो जाता हैं, तथा उसे जीवन में कभी विघ्न का सामना नहीं करना पड़ता।

मंत्र सिद्ध पन्ना गणेश से हो सकता हैं वास्तु दोष का निवारण

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिंदू संस्कृति में भगवान गणेश सर्व विघ्न विनाशक माना हैं। इसी कारण गणपति जी का पूजन किसी भी व्रत अनुष्ठान में सर्व प्रथम किया जाता हैं। भवन में वास्तु पूजन करते समय भी गणपति जी को प्रथमपूजा जाता हैं। जिस घर में नियमित गणपति जी का विधि विधान से पूजन होता हैं, वहां सुख-समृद्धि एवं रिद्धि-सिद्धि का निवास होता हैं।

गणेश प्रतिमा (मूर्ति) की स्थापना भवन के मुख्य द्वार के ऊपर अंदर-बहार दोनो और लगाने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

गणेश प्रतिमा (मूर्ति) की पूजा घरमें स्थापना करने पर उन्हें सिंदूर चढाने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।

भवन में द्वारवेध हो, अर्थात भवन के मुख्य द्वार के सामने वृक्ष, मंदिर, स्तंभ आदि द्वार में प्रवेश करने वाली उर्जा हेतु बाधक होने पर वास्तु में उसे द्वारवेध माना जाता हैं। द्वारवेध होने पर वहां रहने वालों में उच्चाटन होता हैं। ऐसे में भवन के मुख्य द्वार पर गणेशजी की बैठी हुई प्रतिमा (मूर्ति) लगाने से द्वारवेध का निवारण होता हैं।
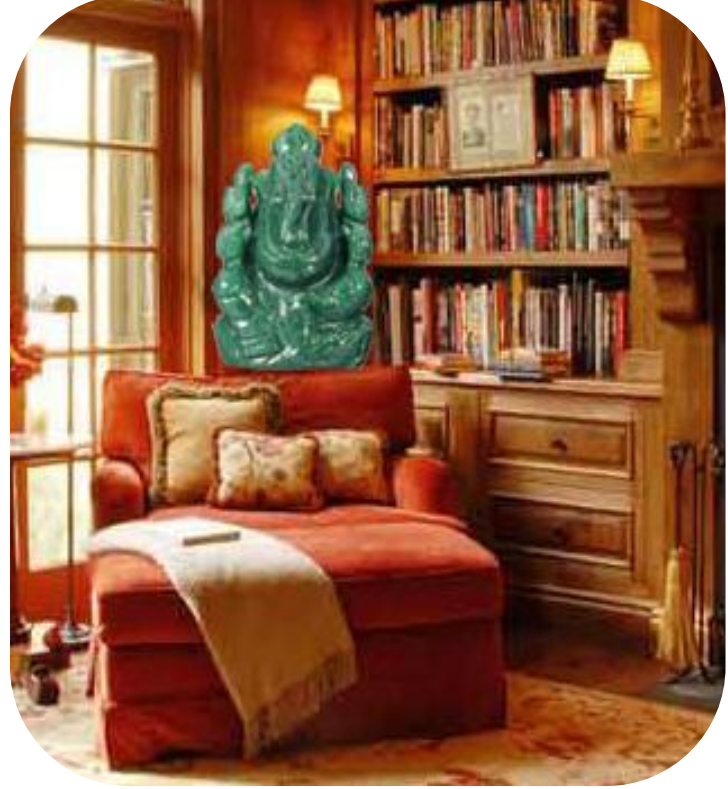
*** मूर्ति का आकार 11 अंगुल से अधिक नहीं होना चाहिए।**

वास्तु दोष के निवारण एवं घर की सुख शांति के लिए पन्ना गणेश की प्रतिमा विशेष फलदायी हैं।

पूजा स्थानमें पूजन के लिए गणेश जी की एक से अधिक प्रतिमा (मूर्ति) रखना वर्जित हैं।

||गणपति अथर्वशीर्ष||

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि । त्वमेव केवलं कर्ता सि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्व साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्व मांम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवा नूचानमव शिष्यम्।अव पश्चातात्।अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्।

अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो माँ पाहि-पाहि समंतात्। त्वं वाङ्मय स्त्वं चिन्मयः। त्वमानंदमसयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानंदात् द्वितीयोसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त स्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि वयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोनलो निलो नभः। त्वं चत्वारि वाकूपदानि। त्वं गुणत्रयातीत: त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधार स्थितोसि नित्यं। त्वं शक्ति त्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यं। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रूद्रस्त्वं इंद्रस्त्वं अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुव:स्वरोम्।

गणादि पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनंतरम्। अनुस्वार: परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ॠद्धं। एतत्तव मनुस्व रूपम्। गकार: पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरूत्तररूपम्। नाद: संधानम्। सँ हितासंधि: सैषा गणेश विद्या। गणकऋषि: निचृद्गायत्रीच्छंदः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः।एकदंताय विद्महे। वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दंती प्रचोदयात्। एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुश धारिणम्। रदं च वरदं हस्तै र्विभ्राणं मूषकध्वजम्। रक्तं लंबोदरं शूर्प कर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगंधानु लिप्तांगं रक्तपुष्पै: सुपुजितम्। भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारण मच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्टयादौ प्रकृते पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।

नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नम: प्रमथपतये। नमस्ते अस्तु लंबोदरायै एकदंताय। विघ्ननाशिने शिवसुताय। श्रीवरदमूर्तये नमो नमः। एतदथर्व शीर्ष योधीते। स ब्रह्म भूयाय कल्पते। स सर्व विघ्नैर्नबाध्यते। स सर्वत: सुखमेधते। स पच्चमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रात: प्रयुंजानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानो ड पविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विंदति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहात् दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते तंतमनेन साधयेत्। अनेन गणपति मभिषिंचति स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्र्नन जपति स विद्यावान भवति। इत्यथर्वण वाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान भवति स मेधावान भवति। यो मोदक सहस्रेण यजति स वांछित फल मवाप्रोति। य: साज्यसमिद्भि र्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा संनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमंत्रों भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति से सर्वविद् भवति । य एवं वेद इत्युपनिषद्।

॥इति श्री गणपति अथर्वशीर्ष सम्पुर्ण ॥

गणेश स्तवन

श्री आदि कवि वाल्मीकि उवाच

चतु:षष्टिकोटयाख्यविद्याप्रदं त्वां सुराचार्यविद्याप्रदानापदानम्। कठाभीष्टविद्यार्पकं दन्तयुग्मं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

स्वनाथं प्रधानं महाविघ्ननाथं निजेच्छाविसृष्टाण्डवृन्देशनाथम्। प्रभुं दक्षिणास्यस्य विद्याप्रदं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

विभो व्यासशिष्यादिविद्याविशिष्टप्रियानेकविद्याप्रदातारमाद्यम्। महाशाक्तदीक्षागुरुं श्रेष्ठदं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

विधात्रे त्रयीमुख्यवेदांश्च योगं महाविष्णवे चागमाज शंकराय। दिशन्तं च सूर्याय विद्यारहस्यं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

महाबुद्धिपुत्राय चैकं पुराणं दिशन्तं गजास्यस्य माहात्म्ययुक्तम्। निजज्ञानशक्त्या समेतं पुराणं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

त्रयीशीर्षसारं रुचानेकमारं रमाबुद्धिदारं परं ब्रह्मपारम्। सुरस्तोमकायं गणौघाधिनाथं कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

चिदानन्दरूपं मुनिध्येयरूपं गुणातीतमीशं सुरेशं गणेशम्। धरानन्दलोकादिवासप्रियं त्वां कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

अनेकप्रतारं सुरक्ताब्जहारं परं निर्गुणं विश्वसद्ब्रह्मरूपम्। महावाक्यसंदोहतात्पर्यमूर्ति कविं बुद्धिनाथं कवीनां नमामि॥

इदं ये तु कव्यष्टकं भक्तियुक्तास्त्रिसंध्यं पठन्ते गजास्यं स्मरन्त:। कवित्वं सुवाक्यार्थमत्यद्भुतं ते लभन्ते प्रसादाद् गणेशस्य मुक्तिम्॥

॥इति श्री वाल्मीकि कृत श्रीगणेश स्तोत्र संपूर्णम्॥

फल: जो व्यक्ति श्रद्धा भाव से तीनोकाल सुबह संध्या एवं रात्री के समय वाल्मीकि कृत श्रीगणेश का स्तवन करते उन्हे सभी भौतिक सुखो कि प्राप्ति होकर उसे मोक्ष को प्राप्त कर लेता हैं, एसा शास्रोक्त वचन हैं।

विष्णुकृतं गणेशस्तोत्रम्

श्री नारायण उवाच

अथ विष्णु: सभामध्ये सम्पूज्य तं गणेश्वरम्। तृष्टाव परया भक्त्या सर्वविघ्नविनाशकम्॥

श्री विष्णु उवाच

ईश त्वां स्तोतुमिच्छामि ब्रह्मज्योति: सनातनम्। निरूपितुमशक्तोऽहमनुरूपमनीहकम्॥1॥ प्रवरं सर्वदेवानां सिद्धानां योगिनां गुरुम्। सर्वस्वरूपं सर्वेशं ज्ञानराशिस्वरूपिणम्॥2॥ अव्यक्तमक्षरं नित्यं सत्यमात्मस्वरूपिणम्। वायुतुल्यातिनिर्लिप्तं चाक्षतं सर्वसाक्षिणम्॥3॥ संसारार्णवपारे च मायापोते सुदुर्लभे। कर्णधारस्वरूपं च भक्तानुग्रहकारकम्॥4॥ वरं वरेण्यं वरदं वरदानामपीश्वरम्। सिद्धं सिद्धिस्वरूपं च सिद्धिदं सिद्धिसाधनम्॥5॥ ध्यानातिरिक्तं ध्येयं च ध्यानासाध्यं च धार्मिकम्। धर्मस्वरूपं धर्मज्ञं धर्माधर्मफलप्रदम्॥6॥ बीजं संसारवृक्षाणामङ्कुरं च तदाश्रयम्। स्त्रीपुन्नपुंसकानां च रूपमेतदतीन्द्रियम्॥7॥ सर्वाद्यमग्रपूज्यं च सर्वपूज्यं गुणार्णवम्। स्वेच्छया सगुणं ब्रह्म निर्गुणं चापि स्वेच्छया॥8॥ स्वयं प्रकृतिरूपं च प्राकृतं प्रकृते: परम्। त्वां स्तोतुमक्षमोऽनन्त: सहस्त्रवदनेन च॥9॥ न क्षम: पञ्चवक्त्रश्च न क्षमश्चतुराननः। सरस्वती न शक्ता च न शक्तोऽहं तव स्तुतौ॥10॥ न शक्ताश्च चतुर्वेदा: के वा ते वेदवादिनः॥11॥ इत्येवं स्तवनं कृत्वा सुरेशं सुरसंसदि। सुरेशश्च सुरै: साद्र्ध विरराम रमापतिः॥12॥ इदं विष्णुकृतं स्तोत्रं गणेशस्य च य: पठेत्। सायंप्रातश्च मध्याह्ने भक्तियुक्त: समाहितः॥13॥ तद्विघ्निघ्निघन् कुरुते विघ्नेश्वःसततं मुने। वर्धते सर्वकल्याणं कल्याणजनक: सदा॥14॥ यात्राकाले पठित्वा तु यो याति भक्तिपूर्वकम्। तस्य सर्वाभीष्टसिद्धिर्भवत्येव न संशयः॥15॥ तेन दृष्टं च दु:स्वपन् सुस्वपन्मुपजायते। कदापि न भवेत्तस्य ग्रहपीडा च दारुणा॥16॥ भवेद् विनाश: शत्रूणां बन्धूनां च विवर्धनम्। शश्वद्विघ्नविनाशश्च शश्वत् सम्पद्विवर्धनम्॥17॥ स्थिरा भवेद् गृहे लक्ष्मी: पुत्रपौत्रविवर्धिनी। सर्वैश्वर्यमिह प्राप्य ह्यन्ते विष्णुपदं लभेत्॥18॥ फलं चापि च तीर्थानां यज्ञानां यद् भवेद् ध्रुवम्। महतां सर्वदानानां श्री गणेशप्रसादतः॥19॥

गणपतिस्तोत्रम्

सुवर्णवर्णसुन्दरं सितैकदन्तबन्धुरं गृहीतपाशकाङ्कुशं वरप्रदाभयप्रदम्। चतुर्भुजं त्रिलोचनं भुजङ्गमोपवीतिनं प्रफुल्लवारिजासनं भजामि सिन्धुराननम्॥ किरीटहारकुण्डलं प्रदीप्तबाहुभूषणं प्रचण्डरत्नकङ्कणं प्रशोभिताङ्घियष्टिकम्। प्रभातसूर्यसुन्दराम्बरद्वयप्रधारिणं सरत्नहेमनूपुरप्रशोभिताङ्घ्रिपङ्कजम्॥ सुवर्णदण्डमण्डितप्रचण्डचारुचामरं गृहप्रदेन्दुसुन्दरं युगक्षणप्रमोदितम्। कवीन्द्रचित्तरञ्जकं महाविपत्तिभञ्जकं षडक्षरस्वरूपिणं भजे गजेन्द्ररूपिणम्॥ विरिञ्चिविष्णुवन्दितं विरूपलोचनस्तुतं गिरीशदर्शनेच्छया समर्पितं पराम्बया। निरन्तरं सुरासुरैः सपुत्रवामलोचनैः महामखेष्टकर्मसु स्मृतं भजामि तुन्दिलम्॥ मदौघलुब्धचञ्चलालिमञ्जुगुञ्जितारवं प्रबुद्धचित्तरञ्जकं प्रमोदकर्णचालकम्। अनन्यभक्तिमानवं प्रचण्डमुक्तिदायं नमामि नित्यमादरेण वक्रतुण्डनायकम्॥ दारिद्र्यविद्रावणमाशु कामदं स्तोत्रं पठेदेतदजस्त्रमादरात्। पुत्री कलत्रस्वजनेषु मैत्री पुमान् भवेदेकवरप्रसादात्॥

इस स्तोत्रा का प्रतिदिन पाठ करने से गणेशजी की कृपा से उसे संतान लाभ, स्त्री प्रति, मित्र एवं स्वजनो से एवं परिवार में प्रेम भाव बढता हैं।

॥श्री विघ्नेश्वराष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम् ॥

विनायको विघ्नराजो गौरीपुत्रो गणेश्वरः। स्कंदाग्रजोव्ययः पूतो दक्षोऽध्यक्षो द्विजप्रियः ॥ १ ॥

अग्निगर्वच्छिद इन्द्रश्रीप्रदः । वाणीप्रदोअः अव्ययः सर्वसिद्धिप्रदश्शर्वतनो शर्वरीप्रियः ॥ २ ॥

सर्वात्मकः सृष्टिकर्ता देवोनेकार्चितश्शिवः । शुद्धबुद्धि प्रियश्शांतो ब्रह्मचारी गजाननः ॥ ३ ॥

द्वैमात्रेयो मुनिस्तुत्यो भक्तविघ्नविनाशनः । एकदन्तश्छतुर्बाहुश्छतुरश्शक्तिसंयुतः ॥ ४ ॥

लम्बोदरश्शूर्पकर्णो हरर्ब्रह्म विदुत्तमः । कालो ग्रहपतिः कामी सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ५ ॥

पाशाङ्कुशधरश्चण्डो गुणातीतो निरञ्जनः । अकल्मषस्स्वयंसिद्धस्सिद्धार्चितः पदाम्बुजः ॥ ६ ॥

बीजपूरफलासक्तो वरदश्शाश्वतः कृतिः । द्विजप्रियो वीतभयो गदी चक्रीक्षुचापधृत् ॥ ७ ॥

श्रीदोज उत्पलकरः श्रीपतिः स्तुतिहर्षितः । कुलाद्रिभेत्ता जटिलः कलिकल्मषनाशनः ॥ ८ ॥

चन्द्रचूडामणिः कान्तः पापहारी समाहितः । अश्रितश्रीकरस्सौम्यो भक्तवांछितदायकः ॥ ९ ॥

शान्तः कैवल्यसुखदस्सच्चिदानन्द विग्रहः । ज्ञानी दयायुतो दांतो ब्रह्मद्वेषविवर्जितः ॥ १० ॥

प्रमत्तदैत्यभयदः श्रीकंथो विबुधेश्वरः । रामार्चितोविधिर्नागराजयज्ञोपवीतकः ॥ ११ ॥

स्थूलकंठः स्वयंकर्ता सामघोषप्रियः परः । स्थूलतुण्डोऽग्रणी धीरो वागीशस्सिद्धिदायकः ॥ १२ ॥

दूर्वाबिल्वप्रियोऽव्यक्तमूर्तिरद्भुतमूर्तिमान् । शैलेन्द्रतनुजोत्सङ्गखेलनोत्सुकमानसः ॥ १३ ॥

स्वलावण्यसुधासारो जितमन्मथविग्रहः । समस्तजगदाधारो मायी मूषकवाहनः ॥ १४ ॥

हृष्टस्तुष्टः प्रसन्नात्मा सर्वसिद्धिप्रदायकः । अष्टोत्तरशतेनैवं नाम्नां विघ्नेश्वरं विभुं ॥ १५ ॥

तुष्टाव शंकरः पुत्रं त्रिपुरं हंतुमुत्यतः । यः पूजयेदनेनैव भक्त्या सिद्धिविनायकम् ॥ १६ ॥

दूर्वादलैर्बिल्वपत्रैः पुष्पैर्वा चंदनाक्षतैः । सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वविघ्नैः प्रमुच्यते ॥

सिद्धि विनायक व्रत विधान

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सिद्धि विनायक व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को ही किया जाता है। शास्त्रोक्त मान्यता के अनुशार दिन दोपहर में गणेशजी का जन्म हुआ था। इसीलिए इस चतुर्थी को विनायक चतुर्थी, सिद्धिविनायक चतुर्थी और श्रीगणेश चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। इस लिये पौराणिक काल से ही इस तिथि को गणेशोत्सव या गणेश जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता हैं।

वैसे तो प्रत्येक मास की चतुर्थी को गणेशजी का व्रत होता है। लेकिन भाद्रपद के चतुर्थि व्रत का विशेष माहात्म्य है। ऎसी मान्यता हैं की इस दिन जो श्रधालु व्रत, उपवास और दान आदि शुभ कार्य किया जाता है, श्रीगणेश की कृपा से सौ गुना फल प्राप्त हो जाता हैं। व्यक्ति को श्री विनायक चतुर्थी करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है। शास्त्रोक्त विधि-विधान से श्री गणेशजी का पूजन व व्रत इस प्रकार करना अत्यंत लाभप्रद होता हैं।

विधि

- प्रातःकाल स्नानआदि नित्यकर्म से शीघ्र निवृत्त हो कर। अपने सामर्थय के अनुसार पूर्ण भक्ति भाव से
- भगवान गणेश की सोने, चांदी, तांबे, पीतल या मिट्टी से बनी प्रतिमा स्थापित करें। मूर्ति को षोड़शोपचार पूजन-आरती आदि से विधि-वत पूजन करें।
- गणेशजी की मूर्ति पर सिंदूर चढ़ाएं।
- गणेशजी का मंत्र बोलते हुए 21 दुर्वा दल चढ़ाएं।
- श्री गणेशजी को लड्डुओं का भोग लगाएं।
- ब्राह्मण भोजन कराएं और ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करने के पश्चात् संध्या के समय स्वयं भोजन ग्रहण करें।

इस तरह पूजन करने से भगवान श्रीगणेश अति प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की सकल इच्छाओं की पूर्ति करते हैं।

संकष्टहर चतुर्थी व्रत का प्रारंभ कैसे हुवा?

संकष्टहर चतुदर्शी कथाः

भारद्वाज मुनि और पृथ्वी के पुत्र मंगल की कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर माघ मास के कृष्ण पक्ष में चतुर्थी तिथि को गणपति ने उनको दर्शन दिये थे।

गजानन के वरदान के फलस्वरूप मंगल कुमार को इस दिन मंगल ग्रह के रूप में सौर मण्डल में स्थान प्राप्त हुवाथा। मंगल कुमार को गजानन से यह भी वरदान मिला कि माघ कृष्ण पक्ष की चतुदर्शी जिसे संकष्टहर चतुर्थी के नाम से जाना जाता हैं उस दिन जो भी व्यक्ति गणपतिजी का व्रत रखेगा उसके सभी प्रकार के कष्ट एवं विघ्न समाप्त हो जाएंगे।

एक अन्य कथा के अनुसार भगवान शंकर ने गणपतिजी से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था कि माघ कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को चन्द्रमा मेरे सिर से उतरकर गणेश के सिर पर शोभायमान होगा। इस दिन गणेश जी की उपासना और व्रत त्रि-ताप (तीनो प्रकार के ताप) का हरण करने वाला होगा। इस तिथि को जो व्यक्ति श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर विधि-विधान से गणेश जी की पूजा करेगा उसे मनोवांछित फल कि प्राप्ति होगी।

गणेश चतुर्थी पर चंद्र दर्शन से क्यों लगता हैं कलंक?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गणेश चतुर्थी पर चंद्र दर्शन निषेध होने कि पौराणिक मान्यता हैं। शास्त्रोंक्त वचन के अनुशार जो व्यक्ति इस दिन चंद्रमा को जाने-अन्जाने देख लेता हैं उसे मिथ्या कलंक लगता हैं। उस पर झूठा आरोप लगता हैं।

कथा

एक बार **जरासन्ध** के भय से भगवान कृष्ण समुद्र के बीच नगर बनाकर वहां रहने लगे। भगवान कृष्ण ने जिस नगर में निवास किया था वह स्थान आज द्वारिका के नाम से जाना जाता हैं।

उस समय द्वारिका पुरी के निवासी से प्रसन्न होकर सूर्य भगवान ने सत्रजीत यादव नामक व्यक्ति अपनी स्यमन्तक मणि वाली माला अपने गले से उतारकर दे दी।

यह मणि प्रतिदिन आठ सेर सोना प्रदान करती थी। मणि पातेही सत्रजीत यादव समृद्ध हो गया। भगवान श्री कृष्ण को जब यह बात पता चली तो उन्होंने सत्रजीत

से स्यमन्तक मणि पाने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन सत्रजीत ने मणि श्री कृष्ण को न देकर अपने भाई प्रसेनजीत को दे दी। एक दिन प्रसेनजीत शिकार पर गया जहां एक शेर ने प्रसेनजीत को मारकर मणि ले ली। यही रीछों के राजा और रामायण काल के जामवंत ने शेर को मारकर मणि पर कब्जा कर लिया था।

कई दिनों तक प्रसेनजीत शिकार से घर न लौटा तो सत्रजीत को चिंता हुई और उसने सोचा कि श्रीकृष्ण ने ही मणि पाने के लिए प्रसेनजीत की हत्या कर दी। इस प्रकार सत्रजीत ने पुख्ता सबूत जुटाए बिना ही मिथ्या प्रचार कर दिया कि श्री कृष्ण ने प्रसेनजीत की हत्या करवा दी हैं। इस लोकनिंदा से आहत होकर और इसके निवारण के लिए श्रीकृष्ण कई दिनों तक एक वन से दूसरे वन भटक कर प्रसेनजीत को खोजते रहे और वहां उन्हें शेर द्वारा प्रसेनजीत को मार डालने और रीछ द्वारा मणि ले जाने के चिह्न मिल गए। इन्हीं चिह्नों के आधार पर श्री कृष्ण जामवंत की गुफा में जा पहुंचे जहां जामवंत की पुत्री मणि से खेल रही थी। उधर जामवंत श्री कृष्ण से मणि नहीं देने हेतु युद्ध के लिए तैयार हो गया। सात दिन तक जब श्री कृष्ण गुफा से बाहर नहीं आए तो उनके संगी साथी उन्हें मरा हुआ जानकार विलाप करते हुए द्वारिका लौट गए। २१ दिनों तक गुफा में युद्ध चलता रहा और कोई भी झुकने को तैयार नहीं था। तब जामवंत को भान हुआ कि कहीं ये वह अवतार तो नहीं जिनके दर्शन के लिए मुझे श्री रामचंद्र जी से वरदान मिला था। तब जामवंत ने अपनी पुत्री का विवाह श्री कृष्ण के साथ कर दिया और मणि दहेज में श्री कृष्ण को दे दी। उधर कृष्ण जब मणि लेकर लौटे तो उन्होंने सत्रजीत को मणि वापस कर दी। सत्रजीत अपने किए पर लज्जित हुआ और अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह श्री कृष्ण के साथ कर दिया।

कुछ ही समय बाद अक्रूर के कहने पर ऋतु वर्मा ने सत्रजीत को मारकर मणि छीन ली। श्री कृष्ण अपने बड़े भाई बलराम के साथ उनसे युद्ध करने पहुंचे। युद्ध में जीत हासिल होने वाली थी कि ऋतु वर्मा ने मणि अक्रूर को दे

दी और भाग निकला। श्री कृष्ण ने युद्ध तो जीत लिया लेकिन मणि हासिल नहीं कर सके। जब बलराम ने उनसे मणि के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मणि उनके पास नहीं। ऐसे में बलराम खिन्न होकर द्वारिका जाने की बजाय इंद्रप्रस्थ लौट गए। उधर द्वारिका में फिर चर्चा फैल गई कि श्री कृष्ण ने मणि के मोह में भाई का भी तिरस्कार कर दिया। मणि के चलते झूठे लांछनों से दुखी होकर श्री कृष्ण सोचने लगे कि ऐसा क्यों हो रहा है। तब नारद जी आए और उन्होंने कहा कि हे कृष्ण तुमने भाद्रपद में शुक्ल चतुर्थी की रात को चंद्रमा के दर्शन कियेथे और इसी कारण आपको मिथ्या कलंक झेलना पड़ रहा हैं।

श्रीकृष्ण चंद्रमा के दर्शन कि बात विस्तार पूछने पर नारदजी ने श्रीकृष्ण को कलंक वाली यह कथा बताई थी। एक बार भगवान श्रीगणेश ब्रह्मलोक से होते हुए लौट रहे थे कि चंद्रमा को गणेशजी का स्थूल शरीर और गजमुख देखकर हंसी आ गई। गणेश जी को यह अपमान सहन नहीं हुआ। उन्होंने चंद्रमा को शाप देते हुए कहा, 'पापी तूने मेरा मजाक उड़ाया हैं। आज मैं तुझे शाप देता हूं कि जो भी तेरा मुख देखेगा, वह कलंकित हो जायेगा। गणेशजी शाप सुनकर चंद्रमा बहुत दुखी हुए।

गणेशजी शाप के शाप वाली बाज चंद्रमा ने समस्त देवताओं को सोनाई तो सभी देवताओं को चिंता हुई। और विचार विमर्श करने लगे कि चंद्रमा ही रात्री काल में पृथ्वी का आभूषण हैं और इसे देखे बिना पृथ्वी पर रात्री का कोई काम पूरा नहीं हो सकता। चंद्रमा को साथ लेकर सभी देवता ब्रह्माजी के पास पहुचें। देवताओं ने ब्रह्माजी को सारी घटना विस्तार से सुनाई उनकी बातें सुनकर ब्रह्माजी बोले, चंद्रमा तुमने सभी गणों के अराध्य देव शिव-पार्वती के पुत्र गणेश का अपमान किया हैं। यदि तुम गणेश के शाप से मुक्त होना चाहते हो तो श्रीगणेशजी का व्रत रखो। वे दयालु हैं, तुम्हें माफ कर देंगे। चंद्रमा गणेशजी को प्रशन्न करने के लिये कठोर व्रत-तपस्या करने लगे। भगवान गणेश चंद्रमा की कठोर तपस्या से प्रसन्न हुए और कहा वर्षभर में केवल एक दिन भाद्रपद में शुक्ल चतुर्थी की रात को जो तुम्हें देखेगा, उसे ही कोई मिथ्या कलंक लगेगा। बाकी दिन कुछ नहीं होगा। ' केवल एक ही दिन कलंक लगने की बात सुनकर चंद्रमा समेत सभी देवताओं ने राहत की सांस ली। तब से भाद्रपद में शुक्ल चतुर्थी की रात को चंद्रमा के दर्शन का निषेध हैं।

गणेश कवचम्

संसारमोहनस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः। ऋषिश्छन्दश्च बृहती देवो लम्बोदरः स्वयम्॥

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः। सर्वेषां कवचानां च सारभूतमिदं मुने॥

ॐ गं हुं श्रीगणेशाय स्वाहा मे पातु मस्तकम्। द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो ललाटं मे सदावतु॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं गमिति च संततं पातु लोचनम्। तालुकं पातु विघनेशः संततं धरणीतले॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीमिति च संततं पातु नासिकाम्। ॐ गौं गं शूर्पकर्णाय स्वाहा पात्वधरं मम॥

दन्तानि तालुकां जिहवां पातु मे षोडशाक्षरः॥

ॐ लं श्रीं लम्बोदरायेति स्वाहा गण्डं सदावतु। ॐ क्लीं ह्रीं विघन्नाशाय स्वाहा कर्ण सदावतु॥

ॐ श्रीं गं गजाननायेति स्वाहा स्कन्धं सदावतु। ॐ ह्रीं विनायकायेति स्वाहा पृष्ठं सदावतु॥

ॐ क्लीं ह्रीमिति कङ्कालं पातु वक्षःस्थलं च गम्। करौ पादौ सदा पातु सर्वाङ्गं विघन्निघन्कृत्॥

प्राच्यां लम्बोदरः पातु आगनेय्यां विघन्नायकः। दक्षिणे पातु विघनेशो नैर्ऋत्यां तु गजाननः॥

पश्चिमे पार्वतीपुत्रो वायव्यां शंकरात्मजः॥ कृष्णस्यांशश्चोत्तरे च परिपूर्णतमस्य च॥

ऐशान्यामेकदन्तश्च हेरम्बः पातु चोर्ध्वतः। अधो गणाधिपः पातु सर्वपूज्यश्च सर्वतः॥

स्वप्ने जागरणे चैव पातु मां योगिनां गुरुः।

इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम्। संसारमोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥

श्रीकृष्णेन पुरा दत्तं गोलोके रासमण्डले। वृन्दावने विनीताय महयं दिनकरात्मजः॥

मया दत्तं च तुभ्यं च यस्मै कस्मै न दास्यसि। परं वरं सर्वपूज्यं सर्वसङ्कटतारणम्॥

गुरुमभ्यचर्य विधिवत् कवचं धारयेत्तु यः। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशयः॥

अश्वमेधसहस्त्राणि वाजपेयशतानि च। ग्रहेन्द्रकवचस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥

इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छंकरात्मजम्। शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः॥

॥ इति श्री गणेश कवच संपूर्णम्॥

॥गणेशद्वादशनामस्तोत्रम्॥

शुक्लांम्बरधरम् देवम् शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनम् ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशांतये ।।१।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजेतो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।२।।

गणानामधिपश्चण्डो गजवक्त्रस्त्रिलोचनः। प्रसन्न भव मे नित्यम् वरदातर्विनायक ।।३।।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।४।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचंद्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि गणेशस्य यः पठेत् ।। ५ ।।

विद्यार्थी लभते विद्याम् धनार्थी विपुलम् धनम् । इष्टकामम् तु कामार्थी धर्मार्थी मोक्षमक्षयम् ।। ६ ।।

विद्यारभ्मे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटेश्चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। ७ ।।

॥इति श्री गणेशद्वादशनाम स्तोत्रम् सम्पुर्ण॥

ऋण मुक्ति हेतु श्री गणेश की मंत्र साधना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीऋण हरण कर्तृ गणपति मन्त्रस्य सदा शिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीऋण हर्ता गणपति देवता, ग्लौं बीजं, गं शक्तिः, गों कीलकं, मम सकल ऋण नाशार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- सदा शिव ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे, श्रीऋण हर्ता गणपति देवतायै नमः हृदि, ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये, गं शक्तये नमः पादयो, गों कीलकाय नमः नाभौ, मम सकल ऋण नाशार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर न्यासः- ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः, ऋण छिन्धि तर्जनीभ्यां नमः, वरेण्यं मध्यमाभ्यां नमः, हुं अनामिकाभ्यां नमः, नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, फट् कर तल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

षडंग न्यासः- ॐ गणेश हृदयाय नमः, ऋण छिन्धि शिरसे स्वाहा, वरेण्यं शिखायै वषट्, हुं कवचाय हुम्, नमः नेत्र त्रयाय वौषट्, फट् अस्त्राय फट्।

ध्यानः-

ॐ सिन्दूर-वर्णं द्वि-भुजं गणेशं, लम्बोदरं पद्म-दले निविष्टम्। ब्रह्मादि-देवैः परि-सेव्यमानं, सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्।।

आवाहन इत्यादि कर पञ्चोपचारों या मानसिक पूजन करे।

॥कवच-पाठ॥

ॐ आमोदश्च शिरः पातु, प्रमोदश्च शिखोपरि, सम्मोदो भ्रू-युगे पातु, भ्रू-मध्ये च गणाधीपः। गण-क्रीडश्चक्षुर्युगं, नासायां गण-नायकः, जिह्वायां सुमुखः पातु, ग्रीवायां दुर्म्मुखः॥ विघ्नेशो हृदये पातु, बाहु-युग्मे सदा मम, विघ्न-कर्त्ता च उदरे, विघ्न-हर्त्ता च लिंगके। गज-वक्त्रो कटि-देशे, एक-दन्तो नितम्बके, लम्बोदरः सदा पातु, गुह्य-देशे ममारुणः॥ व्याल-यज्ञोपवीती मां, पातु पाद-युगे सदा, जापकः सर्वदा पातु, जानु-जंघे गणाधिपः। हरिद्राः सर्वदा पातु, सर्वांगे गण-नायकः॥

॥स्तोत्र-पाठ॥

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक्, पूजितः फल-सिद्धये। सदैव पार्वती-पुत्रः, ऋण-नाशं करोतु मे॥१॥ त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं-शम्भुना सम्यगर्चितः। हिरण्य-कश्यप्वादीनां, वधार्थे विष्णुनार्चितः॥२॥ महिषस्य वधे देव्या, गण-नाथः प्रपूजितः। तारकस्य वधात् पूर्वं, कुमारेण प्रपुजितः॥३॥ भास्करेण गणेशो हि, पूजितश्छवि-सिद्धये। शशिना कान्ति-वृद्धयर्थं, पूजितो गण-नायकः। पालनाय च तपसां, विश्वामित्रेण पूजितः॥४॥

॥फल-श्रुति॥

इदं त्वृण-हर-स्तोत्रं, तीव्र-दारिद्र्य-नाशनम्, एक-वारं पठेन्नित्यं, वर्षमेकं समाहितः। दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा, कुबेर-समतां व्रजेत्।।

उक्त विधान संपन्न होने पर इस मंत्र का १ माल या कम-से-कम २१ बार जप करे।

मन्त्रः- **ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्**

वर्ष भर कवच और मंत्र का पाठ करने से मनुष्य के दारिद्र्य का नाश होता है तथा लक्ष्मी प्राप्त होती है।

नोटः भगवान श्री गणेश की यह धन दायी साधना प्रयोग हैं। साधना का प्रयोग पीले रंग के आसन पर पीले वस्त्र धारण कर पीले रंग की माला या पीले सूत में बनी स्फटिक की माला से करना अत्यंत लाभप्राद होता हैं। साधना काल में गणेशजी को पूजा में दूर्वा चढ़ाए।

मंत्रोच्चारण में क्रमशः विनियोग, न्यास, ध्यान कर आवाहन और पूजन करे। पूजन के पश्चात् कवच- पाठ करने के बाद स्तोत्र का पाठ करे। स्तोत्र की समाप्ति पर मंत्र का जप करें।

ऋण मोचन महा गणपति स्तोत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीऋण मोचन महा गणपति स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान् शुक्राचार्य ऋषिः, ऋण-मोचन-गणपतिः देवता, मम-ऋण-मोचनार्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यासः- भगवान् शुक्राचार्य ऋषये नमः शिरसि, ऋण-मोचन-गणपति देवतायै नमः हृदि, मम-ऋण-मोचनार्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

॥मूल-स्तोत्र॥

ॐ स्मरामि देव-देवेश !वक्र-तुणडं महा-बलम्। षडक्षरं कृपा-सिन्धु, नमामि ऋण-मुक्तये॥१॥

महा-गणपतिं देवं, महा-सत्त्वं महा-बलम्। महा-विघ्न-हरं सौम्यं, नमामि ऋण-मुक्तये॥२॥

एकाक्षरं एक-दन्तं, एक-ब्रह्म सनातनम्। एकमेवाद्वितीयं च, नमामि ऋण-मुक्तये॥३॥

शुक्लाम्बरं शुक्ल-वर्णं, शुक्ल-गन्धानुलेपनम्। सर्व-शुक्ल-मयं देवं, नमामि ऋण-मुक्तये॥४॥

रक्ताम्बरं रक्त-वर्णं, रक्त-गन्धानुलेपनम्। रक्त-पुष्पै पूज्यमानं, नमामि ऋण-मुक्तये॥५॥

कृष्णाम्बरं कृष्ण-वर्णं, कृष्ण-गन्धानुलेपनम्। कृष्ण-पुष्पै पूज्यमानं, नमामि ऋण-मुक्तये॥६॥

पीताम्बरं पीत-वर्णं, पीत-गन्धानुलेपनम्। पीत-पुष्पै पूज्यमानं, नमामि ऋण-मुक्तये॥७॥

नीलाम्बरं नील-वर्णं, नील-गन्धानुलेपनम्। नील-पुष्पै पूज्यमानं, नमामि ऋण-मुक्तये॥८॥

धूम्राम्बरं धूम्र-वर्णं, धूम्र-गन्धानुलेपनम्। धूम्र-पुष्पै पूज्यमानं, नमामि ऋण-मुक्तये॥९॥

सर्वाम्बरं सर्व-वर्णं, सर्व-गन्धानुलेपनम्। सर्व-पुष्पै पूज्यमानं, नमामि ऋण-मुक्तये॥१०॥

भद्र-जातं च रुपं च, पाशांकुश-धरं शुभम्। सर्व-विघ्न-हरं देवं, नमामि ऋण-मुक्तये॥११॥

॥फल-श्रुति॥ यः पठेत् ऋण-हरं-स्तोत्रं, प्रातः-काले सुधी नरः। षण्मासाभ्यन्तरे चैव, ऋणच्छेदो भविष्यति॥

भावार्थ: जो व्यक्ति उक्त ऋण मोचन स्तोत्र का विधि-विधान व पूर्ण निष्ठा से नियमित प्रातः काल पाठ करता हैं उसके समस्त प्रकार के ऋणों से मुक्ति मिल जाती हैं।

गणेशजी को प्रिय हैं सिंदूर : गणेश पूजन में सिंदूर का उपयोग अत्यंत शुभ एवं लाभकारी होता हैं। क्योकिं भगवान गणेशजीको सिंदूर अत्याधिक प्रिय हैं। गणेश जी को शुद्ध घी में सिंदूर मिलाकर लेप चढाने से सुख और सौभाग्य कि प्राप्ति होती हैं। सिंदूरी रंग के उपयोग से व्यक्ति के बुद्धि, आरोग्य, त्याग में वृद्धि होती हैं। इसी लिये प्रायः ज्यादातर साधु-संत के वस्त्र का रंग सिंदूरी हि होता हैं।

गणेशजी कि सूंड किस ओर हो?: मंदिर और घर में स्थापित किजाने वाली भगवान गणेश प्रतिमा में सूंड किसी प्रतिमा में दाईं तो किसी प्रतिमा में बाईं ओर देखने को मिलती हैं। घर में बाईं ओर सूंडवाले गणेशही स्थापित करना शुभ फलप्रद मानागया हैं। क्योकिं जहां बाईं सूंड वाले गणेश सौम्य स्वरूप के प्रतिक हैं, वहीं दाईं ओर तरफ सूंड वाले गणेशजी अग्नि (उग्र) स्वरुप के माने जाते हैं।

जब गणेशजी ने चूर किय कुबेर का अहंकार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक पौराणिक कथा के अनुशार हैं। कुबेर तीनों लोकों में सबसे धनी थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि हमारे पास इतनी संपत्ति हैं, लेकिन कम ही लोगों को इसकी जानकारी हैं। इसलिए उन्होंने अपनी संपत्ति का प्रदर्शन करने के लिए एक भव्य भोज का आयोजन करने की बात सोची। उस में तीनों लोकों के सभी देवताओं को आमंत्रित किया गया।

भगवान शिव कुबेरके इष्ट देवता थे, इसलिए उनका आशीर्वाद लेने वह कैलाश पहुंचे और कहा, प्रभो! आज मैं तीनों लोकों में सबसे धनवान हूं, यह सब आप की कृपा का फल हैं। अपने निवास पर एक भोज का आयोजन करने जा रहा हूँ, कृपया आप परिवार सहित भोज में पधारने की कृपा करे।

भगवान शिव कुबेर के मन का अहंकार ताड़ गए, बोले, वत्स! मैं बूढ़ा हो चला हूँ, इस लिये कहीं बाहर नहीं जाता। इस लिये तुम्हारें भोज में नहीं आसकता। शिवजी कि बात पर कुबेर गिड़-गिड़ाने लगे, भगवन! आपके बगैर तो मेरा सारा आयोजन बेकार चला जाएगा। तब शिव जी ने कहा, एक उपाय हैं। मैं अपने छोटे बेटे गणपति को तुम्हारे भोज में जाने को कह दूंगा। कुबेर संतुष्ट होकर लौट आए। नियत समय पर कुबेर ने भव्य भोज का आयोजन किया।

तीनों लोकों के देवता पहुंच चुके थे। अंत में गणपति आए और आते ही कहा, मुझको बहुत तेज भूख लगी हैं। भोजन कहां है। कुबेर उन्हें ले गए भोजन से सजे कमरे में। गणपति को सोने की थाली में भोजन परोसा गया। क्षण भर में ही परोसा गया सारा भोजन खत्म हो गया। दोबारा खाना परोसा गया, उसे भी खा गए। बार-बार खाना परोसा जाता और क्षण भर में गणेश जी उसे चट कर जाते। थोड़ी ही देर में हजारों लोगों के लिए बना भोजन खत्म हो गया, लेकिन गणपति का पेट नहीं भरा। गणपति रसोईघर में पहुंचे और वहां रखा सारा कच्चा सामान भी खा गए, तब भी भूख नहीं मिटी। जब सब कुछ खत्म हो गया तो गणपति ने कुबेर से कहा, जब तुम्हारे पास मुझे खिलाने के लिए कुछ था ही नहीं तो तुमने मुझे न्योता क्यों दिया था? गणपति जी कि यह बात सुनकर कुबेर का अहंकार चूर-चूर हो गया।

एकदंत कथा गणेश

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एकदंत कैसे कहलाए गणेशजी

महाभारत विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य एवं ग्रंथ हैं। जिसकी रचना में एक लाख से ज्यादा श्लोको का प्रयोग हुवा हैं। एसी लोकमान्यता हैं कि ब्रह्माजी ने स्वप्न में ऋषि पराशर एवं सत्यवती के पुत्र महर्षि व्यास को महाभारत लिखने की प्रेरणा दी थी।

महाभारत के रचनाकार अलौकिक शक्ति से सम्पन्न महर्षि व्यास त्रिकाल द्रष्टा थे। इस लिये महर्षि व्यास ने महाभारत लिखने का यह काम स्वीकार कर लिया, लेकिन महर्षि व्यास के मस्तिष्क में जिस तीव्रतासे महाभारत के मंत्र आ रहेथे इस कारण उन मंत्रो को उसी तीव्रता से को कोई लिखने वाला योग्य व्यक्ति न मिला। वे ऐसे किसी व्यक्ति की खोज में लग गए जो महाभारत लिख सके। महाभारत के प्रथम अध्याय में उल्लेख हैं कि वेद व्यास ने गणेशजी को महाभारत लिखने का प्रस्ताव दिया तो गणेशजी ने महाभारत लिख का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

गणेशजी ने महाभारत लिखने के पहले शर्त रखी कि महर्षि कथा लिखवाते समय एक पल के लिए भी नहीं रुकेंगे।

इस शर्त को मानते हुए महर्षि ने भी एक शर्त रख दी कि गणेशजी भी एक-एक वाक्य को बिना समझे नहीं लिखेंगे। महाभारत लिखते समय इस शर्त के कारणा गणेशजी के समझने के दौरान महर्षि को सोचने का अवसर मिल जाता था।

महाभारत लिखने गणेशजी ने अपना एक दाँत तोडकर उसकि लेखनी बानई। इस लिये उन्हें एकदंत कहा जाता हैं। माना जाता है कि बिना रुके लिखने की शीघ्रता में यह दाँत टूटा था।

एक दांत टूट ने कि और एक कहानी हैं

ब्रह्मावैवर्त पुराण के अनुशार परशुराम शीवजी को मिल्ने कैलश गये। कैलश के प्रवेश द्वार पर ही गणेश ने परशुराम को रोक लियी किन्तु परशुराम रुके नहीं और बलपूर्वक प्रवेश करने का प्रयास किया। तब गणेशजी नें परशुराम से युद्ध कर उनको स्तम्भित कर अपनी सूँड में लपेटकर समस्त लोकों में भ्रमण कराते हुए गौलोक में भगवान श्रीकृष्ण का दर्शन कराते हुए भूतल पर पटक दिया। परशुराम ने क्रोध में फरसे(परशु) से गणेशजी के एक दांत को काट डाला। तभिसे गणेश को एकदंत कहा जाता हैं।

एकदन्त कथा

एकदन्तावतारौ वै देहिनां ब्रह्मधारकः।
मदासुरस्य हन्ता स आखुवाहनगः स्मृतः।।

भावार्थ: भगवान् गणेश का 'एक दन्तावतार' देहि-ब्रह्मधारक है, वह मदासुरका वध करनेवाला है; उसका वाहन मूषक बताया गया है।

वह महर्षि च्यवन का पुत्र मदासुर एक बलवान् पराक्रमी दैत्य था। एक बार वह अपने पिता से आज्ञा प्राप्त कर दैत्यगुरु शुक्राचार्य के पास गया।

उसने शुक्राचार्य से अनुरोध किय कि आप मुझे कृप्या अपना शिष्य बना लें, मैं समग्र ब्रह्माण्ड का स्वामी बनना चाहता हूँ। कृप्या आप मेरी इच्छा पूरी करने के लिये मेरा उचित मार्गदर्शन करें। शुक्राचार्य ने सन्तुष्ट होकर उसे अपना शिष्य बना लिया। सर्वज्ञ आचार्य ने उसे ***"ह्रीं"*** (एकाक्षरी) शक्ति मन्त्र प्रदान किया। मदासुर अपने गुरुदेव शुक्राचार्य से आज्ञा पाकर के उनके चरणों में प्रणाम कर आशीर्वाद लेकर जंगल में तप करने के लिये चला गया। उसने जगदम्बा का ध्यान करते हुए एक हजार वर्षों तक कठोर तप किया। तप करते हुवे उसका शरीर दीमकों की बाँबी से ढंक गया। उसके चारों तरफ वृक्ष उग गये और लताएँ फैल

गयीं। उसके कठोर तपसे प्रसन्न होकर मां भगवती प्रकट हुईं। भगवती ने उसे नीरोग रहने तथा निष्कंटक सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड का राज्य प्राप्त होने का वरदान दिया।

मदासुरने पहले सम्पूर्ण धरती पर अपना साम्राज्य स्थापित किया। फिर स्वर्ग पर साम्राज्य स्थापित करने केलिये चढ़ाई की। इन्द्र इत्यादि देवाताओं को पराजीत कर उसने स्वर्ग का भी साम्राज्य स्थापित किया। उसने प्रमदासुर की कन्या सालसा से विवाह किया। सालसासे उसे तीन पुत्र हुए। उसने भगवान् शिव को पराजित कर दिया। सर्वत्र असुरों का क्रूरतम शासन चलने लगा। पृथ्वीपर समस्त धर्म-कर्म लुप्त होने लगा। सर्वत्र हाहाकार मच गया। देवतागण एवं मुनिगण दु:खीत होने लगे।

चिन्तित देवता सनत्कुमार के पास गये, तथा उनसे असुरो के विनाश एवं पूनः धर्म-स्थापना का उपाय पूछाः सनत्कुमार ने कहा देवगण आप लोग श्रद्धापूर्वक भगवान् एकदन्त की उपासना करें। वे सन्तुष्ट होकर अवश्य ही आपलोगों का मनोरथ पूर्ण करेंगे। महर्षि के उपदेश अनुसार देवगण एकदन्त की उपासना करन लगे। तपस्या के सौ वर्ष पूरे होने पर भगवान् एकदन्त प्रकट हुए तथा वर माँगने के लिये कहा। देवताओं ने निवेदन किया प्रभु मदासुर के शासन में देवताओं का स्थानभ्रष्ट और मुनिगण कर्मभ्रष्ट हो गये हैं। आप हमें इस कष्ट से मुक्ति दिलाकार अपनी भक्ति प्रदान करें।

उधर देवर्षिने मदासुर को सूचना दी कि भगवान् एकदन्त ने देवताओं को वरदान दिया हैं। अब वे तुम्हारा प्राण-हरण करने के लिये तुमसे युद्ध करना चाहते हैं। मदासुर अत्यन्त कुपित होकर अपनी विशाल सेना के साथ एकदन्त से युद्ध करने चला गया। भगवान् एकदन्त रास्ते में ही प्रकट हो गये। राक्षसों ने देखा कि भगवान् एकदन्त मूषक पर सवार होकर सामने से चले आ रहे हैं। उनकी आकृति अत्यन्त भयानक हैं। उनके हाथोंमें परशु, पाश आदि आयुध हैं। उन्होंने असुरों से कहा कि तुम अपने स्वामी से कह दो यदि वह जीवित रहना चाहता हैं तो देवताओं से द्वेष छोड़ दे। उनका राज्य उन्हें वापस कर दे। अगर वह ऐसा नहीं करता हैं तो मैं निश्चित ही उसका वध करूँगा। महाक्रूर मदासुर युद्ध के लिये तैयार हो गया जैसे ही उसने अपने धनुष पर बाण चढ़ाना चाहा कि भगवान् एकदन्त का तीव्र परशु उसे लगा और वह बेहोश होकर गिर गया।

बेहोशी टूटने पर मदारसुर समझ गया कि यह सर्व समर्थ परमात्मा ही हैं। उसने हाथ जोड़कर स्तुति करते हुए कहा कि प्रभु आप मुझे क्षमा कर अपनी दृढ़ भक्ति प्रदान करें। एकदन्त ने प्रसन्न होकर कहा कि जहाँ मेरी पूजा आराधना हो, वहाँ तुम कदापि मत जाना। आजसे तुम पाताल में रहोगे। देवता भी प्रसन्न होकर एकदन्त की स्तुति करके स्वर्ग लोक चले गये।

***

वक्रतुण्ड कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

वक्रतुण्डावतारश्च देहानां ब्रह्मधारकः।
मत्सरासुरहन्ता स सिंहवाहनगः स्मृतः।।

भगवान् श्रीगणेश का 'वक्रतुण्डावतार' ब्रह्मरूप से सम्पूर्ण शरीरों को धारण करनेवाला, मत्सरासुर का वध करनेवाला तथा सिंहवाहन पर चलनेवाला हैं।

मुद्गल पुराण के अनुसार भगवान् गणेश के अनेकों अवतार हैं, जिनमें आठ अवतार प्रमुख हैं। पहला अवतार भगवान् वक्रतुण्ड का है। ऐसी कथा है कि देवराज इन्द्र के प्रमाद से मत्सरासुर का जन्म हुआ। उसने दैत्यगुरु शुक्राचार्य से भगवान् शिवके *ॐ नमः शिवाय* (पञ्चाक्षरी मन्त्र) की दीक्षा प्राप्त कर भगवान् शंकर की कठोर तपस्या की भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर उसे अभय होने का वरदान दिया।

वरदान प्राप्त कर जब मत्सरासुर घर लौटा तब शुक्राचार्य ने उसे दैत्यों का राजा बना दिया। दैत्यमन्त्रियों ने शक्तिशाली मत्सर को विश्व पर विजय प्राप्त करने की सलाह दी। शक्ति और पद के मद से चूर मत्सरासुर ने अपनी विशाल सेना के साथ पृथ्वी के राजाओं पर आक्रमण कर दिया। कोई भी राजा असुर के सामने टिक नहीं सका। कुछ पराजित हो गये और कुछ प्राण बचाकर कन्दराओं में छिप गये। इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी पर मत्सरासुर का शासन हो गया।

पृथ्वी साम्राज्य प्राप्त कर उस दैत्य ने क्रमशः पाताल और स्वर्ग पर भी चढ़ाई कर दी। शेष ने विनयपूर्वक उसके अधीन रहकर उसे कर पाताल लोक देना स्वीकार कर लिया। इन्द्र इत्यादि देवता उससे पराजित होकर भाग गये। मत्सरासुर स्वर्ग का भी सम्राट हो गया।

असुरों से दुःखी होकर देवतागण ब्रह्मा और विष्णु को साथ लेकर शिवजी के कैलास पहुँचे। उन्होंने भगवान् शंकर को दैत्यों के अत्याचार वृतांत सुनाया। भगवान् शंकरने मत्सरासुर के इस दुष्कर्म की घोर निन्दा की। यह समाचार सुनकर मत्सरासुर ने कैलास पर भी आक्रमण कर दिया।

भगवान् शिव से उसका घोर युद्ध हुआ। परन्तु, त्रिपुरारि भगवान् शिव भी जीत नहीं सके। उसने उन्हें भी कठोर पाश में बाँध लिया और कैलाश का स्वामी बनकर वहीं रहने लगा। चारों तरफ दैत्यों का अत्याचार होने लगा।

दुःखी देवताओं के सामने मत्सरासुर के विनाश का कोई मार्ग नहीं बचा। वे अत्यन्त चिन्तित और दुर्बल हो रहे थे। उसी समय वहाँ भगवान दत्तात्रेय आ पहुँचे। उन्होंन देवताओं को वक्रतुण्ड के गं(एकाक्षरी मन्त्र) का उपदेश किया। समस्त देवता भगवान् वक्रतुण्ड के ध्यान के साथ एकाक्षरी मन्त्र का जप करने लगे। उनकी आराधना से सन्तुष्ट होकर तत्काल फलदाता वक्रतुण्ड प्रकट हुए। उन्होंने देवताओंसे कहा आप लोग निश्चिन्त हो जायँ। मैं मत्सरासुर के गर्व को चूर-चूर कर दूँगा।

भगवान् वक्रतुण्ड ने अपने असंख्य गणों के साथ मत्सरासुर के नगरों को चारों तरफ से घेर लिया। भयंकर युद्ध छिड़ गया। पाँच दिनों तक लगातार युद्ध चलता रहा। मत्सरासुर के सुन्दरप्रिय एवं विषयप्रिय नामक दो पुत्र थे वक्रतुण्ड के गणों ने उन्हें मार डाला। पुत्र वध से व्याकुल मत्सरासुर रणभूमि में उपस्थित हुआ। वहाँ से उसने भगवान् वक्रतुण्ड को अपशब्द कहे। भगवान् वक्रतुण्ड ने प्रभावशाली स्वर में कहा यदि तुझे प्राणप्रिय हैं तो शस्त्र रखकर तु मेरी शरण में आ जा नहीं तो निश्चित मारा जायगा।

वक्रतुण्ड के भयानक रूप को देखकर मत्सरासुर अत्यन्त व्याकुल हो गया। उसकी सारी शक्ति क्षीण हो गयी। भयके मारे वह काँपने लगा तथा विनयपूर्वक वक्रतुण्ड की स्तुति करने लगा। उसकी प्रार्थना से सन्तुष्ट होकर दयामय वक्रतुण्ड ने उसे अभय प्रदान करते हुए अपनी भक्ति का वरदान किया तथा सुख शांति से जीवन बिताने के लिये पाताल लोक जाने का आदेश दिया। मत्सरासुर से निश्चिन्त होकर देवगण वक्रतुण्ड की स्तुति करने लगे। देवताओं को स्वतन्त्र कर प्रभु वक्रतुण्ड ने उन्हें भी अपनी भक्ति प्रदान की।

॥ विनायकस्तोत्र ॥

मूषिकवाहन मोदकहस्त चामरकर्ण विलम्बितसूत्र । वामनरूप महेश्वरपुत्र विघ्नविनायक पाद नमस्ते ॥
देवदेवसुतं देवं जगद्विघ्नविनायकम् । हस्तिरूपं महाकायं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ १ ॥
वामनं जटिलं कान्तं ह्रस्वग्रीवं महोदरम् । धूम्रसिन्दूरयुद्गण्डं विकटं प्रकटोत्कटम् ॥ २ ॥
एकदन्तं प्रलम्बोष्ठं नागयज्ञोपवीतिनम् । त्र्यक्षं गजमुखं कृष्णं सुकृतं रक्तवाससम् ॥ ३ ॥
दन्तपाणिं च वरदं ब्रह्मण्यं ब्रह्मचारिणम् । पुण्यं गणपतिं दिव्यं विघ्नराजं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥
देवं गणपतिं नाथं विश्वस्याग्रे तु गामिनम् । देवानामधिकं श्रेष्ठं नायकं सुविनायकम् ॥ ५ ॥
नमामि भगवं देवं अद्भुतं गणनायकम् । वक्रतुण्ड प्रचण्डाय उग्रतुण्डाय ते नमः ॥ ६ ॥
चण्डाय गुरुचण्डाय चण्डचण्डाय ते नमः । मत्तोन्मत्तप्रमत्ताय नित्यमत्ताय ते नमः ॥ ७ ॥
उमासुतं नमस्यामि गङ्गापुत्राय ते नमः । ओङ्काराय वषट्कार स्वाहाकाराय ते नमः ॥ ८ ॥
मन्त्रमूर्ते महायोगिन् जातवेदे नमो नमः । परशुपाशकहस्ताय गजहस्ताय ते नमः ॥ ९ ॥
मेघाय मेघवर्णाय मेघेश्वर नमो नमः । घोराय घोररूपाय घोरघोराय ते नमः ॥ १० ॥
पुराणपूर्वपूज्याय पुरुषाय नमो नमः । मदोत्कट नमस्तेऽस्तु नमस्ते चण्डविक्रम ॥ ११ ॥
विनायक नमस्तेऽस्तु नमस्ते भक्तवत्सल । भक्तप्रियाय शान्ताय महातेजस्विने नमः ॥ १२ ॥
यज्ञाय यज्ञहोत्रे च यज्ञेशाय नमो नमः । नमस्ते शुक्लभस्माङ्ग शुक्लमालाधराय च ॥ १३ ॥
मदक्लिन्नकपोलाय गणाधिपतये नमः । रक्तपुष्प प्रियाय च रक्तचन्दन भूषित ॥ १४ ॥
अग्निहोत्राय शान्ताय अपराजय्य ते नमः । आखुवाहन देवेश एकदन्ताय ते नमः ॥ १५ ॥
शूर्पकर्णाय शूराय दीर्घदन्ताय ते नमः । विघ्नं हरतु देवेश शिवपुत्रो विनायकः ॥ १६ ॥

फलश्रुति

जपादस्यैव होमाच्च सन्ध्योपासनसस्तथा । विप्रो भवति वेदाढ्यः क्षत्रियो विजयी भवेत् ॥
वैश्यो धनसमृद्धः स्यात् शूद्रः पापैः प्रमुच्यते । गर्भिणी जनयेत्पुत्रं कन्या भर्तारमाप्नुयात् ॥
प्रवासी लभते स्थानं बद्धो बन्धात् प्रमुच्यते । इष्टसिद्धिमवाप्नोति पुनात्यासत्तमं कुलं ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् । सर्वकामप्रदं पुंसां पठतां श्रृणुतामपि ॥

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे स्कन्दप्रोक्त विनायकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री सिद्धिविनायक स्तोत्रम् ॥

जयोऽस्तु ते गणपते देहि मे विपुलां मतिम्।
स्तवनम् ते सदा कर्तुं स्फूर्ति यच्छममानिशम् ॥१॥

प्रभुं मंगलमूर्तिं त्वां चन्द्रेन्द्रावपि ध्यायतः।
यजतस्त्वां विष्णुशिवौ ध्यायतश्चाव्ययं सदा ॥२॥

विनायकं च प्राहुस्त्वां गजास्यं शुभदायकं।
त्वन्नाम्ना विलयं यान्ति दोषाः कलिमलान्तक ॥३॥

त्वत्पदाब्जांकितश्चाहं नमामि चरणौ तव।
देवेशस्त्वं चैकदन्तो मद्विज्ञप्तिं शृणु प्रभो ॥४॥

कुरु त्वं मयि वात्सल्यं रक्ष मां सकलानिव।
विघ्नेभ्यो रक्ष मां नित्यं कुरु मे चाखिलाः क्रियाः॥५॥

गौरिसुतस्त्वं गणेशः शृणु विज्ञापनं मम।
त्वत्पादयोरनन्यार्थी याचे सर्वार्थ रक्षणम् ॥६॥

त्वमेव माता च पिता देवस्त्वं च ममाव्ययः।
अनाथनाथस्त्वं देहि विभो मे वांछितं फलम् ॥७॥

लंबोदरस्वम् गजास्यो विभुः सिद्धिविनायकः।
हेरंबः शिवपुत्रस्त्वं विघ्नेशोऽनाथबांधवः ॥८॥

नागाननो भक्तपालो वरदस्त्वं दयां कुरु।
सिंदूरवर्णः परशुहस्तस्त्वं विघ्ननाशकः ॥९॥

विश्वास्यं मंगलाधीशं विघ्नेशं परशूधरं।
दुरितारिं दीनबन्धूं सर्वेशं त्वां जना जगुः ॥१०॥

नमामि विघ्नहर्तारं वन्दे श्रीप्रमथाधिपं।
नमामि एकदन्तं च दीनबन्धू नमाम्यहम् ॥ ११॥

नमनं शंभुतनयं नमनं करुणालयं।
नमस्तेऽस्तु गणेशाय स्वामिने च नमोऽस्तु ते ॥१२॥

नमोऽस्तु देवराजाय वन्दे गौरीसुतं पुनः।
नमामि चरणौ भक्त्या भालचन्द्रगणेशयोः ॥१३॥

नैवास्त्याशा च मच्चित्ते त्वद्भक्तेस्तवनस्यच।
भवेत्येव तु मच्चित्ते ह्याशा च तव दर्शने ॥१४॥

अज्ञानश्चैव मूढोऽहं ध्यायामि चरणौ तव।
दर्शनं देहि मे शीघ्रं जगदीश कृपां कुरु ॥१५॥

बालकश्चाहमल्पज्ञः सर्वेषामसि चेश्वरः।
पालकः सर्वभक्तानां भवसि त्वं गजानन ॥१६॥

दरिद्रोऽहं भाग्यहीनः मच्चित्तं तेऽस्तु पादयोः।
शरण्यं मामनन्यं ते कृपालो देहि दर्शनम् ॥१७॥

इदं गणपतेस्तोत्रं यः पठेत्सुसमाहितः।
गणेशकृपया ज्ञानसिध्धिं स लभते धनं ॥१८॥

पठेद्यः सिद्धिदं स्तोत्रं देवं संपूज्य भक्तिमान्।
कदापि बाध्यते भूतप्रेतादीनां न पीडया ॥१९॥

पठित्वा स्तौति यः स्तोत्रमिदं सिद्धिविनायकं।
षण्मासैः सिद्धिमाप्नोति न भवेदनृतं वचः
गणेशचरणौ नत्वा ब्रूते भक्तो दिवाकरः ॥२०॥

॥ इति श्री सिद्धिविनायक स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

***

शिवशक्तिकृतं गणाधीशस्तोत्रम

श्रीशक्तिशिवावूचतु:

नमस्ते गणनाथाय गणानां पतये नम:।
भक्तिप्रियाय देवेश भक्तेभ्य: सुखदायक॥
स्वानन्दवासिने तुभ्यं सिद्धिबुद्धिवराय च।
नाभिशेषाय देवाय ढुण्ढिराजाय ते नम:॥
वरदाभयहस्ताय नम: परशुधारिणे।
नमस्ते सृणिहस्ताय नाभिशेषाय ते नम:॥
अनामयाय सर्वाय सर्वपूज्याय ते नम:।
सगुणाय नमस्तुभ्यं ब्रह्मणे निर्गुणाय च॥
ब्रह्मभ्यो ब्रह्मदात्रे च गजानन नमोस्तु ते।
आदिपूज्याय ज्येष्ठाय ज्येष्ठराजाय ते नम:॥
मात्रे पित्रे च सर्वेषां हेरम्बाय नमो नम:।
अनादये च विघ्नेश विघ्नकत्र्रे नमो नम:॥
विघ्नहत्र्रे स्वभक्तानां लम्बोदर नमोस्तु ते।
त्वदीयभक्तियोगेन योगीशा: शान्तिमागता:॥
किं स्तुवो योगरूपं तं प्रणमावश्च विघ्नपम्।
तेन तुष्टो भव स्वामिन्नित्युक्त्वा तं प्रणेमतु:॥
तावुत्थाप्य गणाधीश उवाच तौ महेश्वरौ॥

श्रीगणेश उवाच

भवत्कृतमिदं स्तोत्रं मम भक्तिविवर्धनम्।
भविष्यति च सौख्यस्य पठते श्रृण्वते प्रदम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव पुत्रपौत्रादिकंतथा॥
धनधान्यादिकं सर्व लभते तेन निश्चितम्॥

जो व्यक्ति इस स्तोत्र का नियमित रुप से विधिवत श्रद्धा भक्ति से पठन और श्रवण करता हैं। उसे सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त स्तोत्र का पाठ करने से व्यक्ति को भोग-मोक्ष तथा पुत्र और पौत्र आदि का लाभ होता हैं। स्तोत्र के द्वारा व्यक्ति को धन-धान्य इत्यादि सभी वस्तुएँ निश्चितरूप से प्राप्त होती हैं।

गणेश पुराण कि महिमा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गणेश पुराण

शौनक जी ने पूछा हे प्रभो! गणेश पुराण का आरम्भ किस प्रकार हुआ? यह आप मुझे बताने की कृपा करें।

इस पर सूत जी बोले हे शौनक! यद्यपि गणेश पुराण अति प्राचीन हैं, क्योंकि भगवान गणेश तो आदि हैं, न जाने कब से गणेश जी अपने उपासकों पर कृपा करते चले आ रहे हैं। गणेशजी के तो अनन्त चरित्र हैं, जिनका संग्रह एक महापुराण का रूप ले सकता हैं।

गणेश पुराण को एक बार भगवान विष्णु ने नारद जी को और भगवान शंकर ने माता पार्वती जी को सुनाया था। बाद में वही पुराण संक्षेप रूप में ब्रह्माजी ने पुत्र महर्षि वेदव्यास को सुनाया और फिर व्यास जी से महर्षि भृगु ने सुना। भृगु ने कृपा करके सौराष्ट्र के राजा सोमकान्त को सुनाया था। तब से वह पुराण अनेक कथाओं में विस्तृत होता और अनेक कथाओं से रहित होता हुआ अनेक रूप में प्रचलित हैं। शौनक जी ने पूछा भगवान्! आप यह बताने का कष्ट करें कि राजा सोमकान्त कौन था? उसने महर्षि से गणेश पुराण का श्रवण किस जगह किया था? एवं उस पुराण के श्रवण से उसे क्या-क्या उपलब्धियाँ हुई? हे नाथ! मुझे श्री गणेश्वर की कथा के प्रति उत्कण्ठा बढ़ती ही जा रही हैं।

सूतजी बोले-'हे शौनक! सौराष्ट्र के देवनगर नाम की एक प्रसिद्ध राजधानी थी। वहाँ का राजा सोमकान्त था। राजा अपनी प्रजा का पालन पुत्र के समान करता था। वह वेदज्ञान सम्पन्न, शस्त्र-विद्या में पारंगत एवं प्रबल प्रतापी राजा समस्त राजाओं में मान्य तथा अत्यन्त वैभवशाली था। उसका ऐश्वर्य कुबेर के भी ऐश्वर्य को लज्जित करता था। उसने अपने पराक्रम से अनेकों देश जीत लिये थे। उसकी पत्नी अत्यन्त रूपवती, गुणवती, धर्मज्ञा एवं पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली थी। वह सदैव अपने प्राणनाथ कि सेवा में लगी रहती थी। उसका नाम सुधर्मा था। जैसे वह पतिव्रता थी, वैसे ही राजा भी एक पत्नी व्रत का पालन करने वाला था। उसका हेमकान्त नामक एक सुन्दर पुत्र था। पुत्र भी सोमकान्त कि तरह सभी विद्याओं का ज्ञाता और अस्त्र-शस्त्रादि के अभ्यास में निपुण हो गया था। इन सभी श्रेष्ठ सम्पन्न, सद्गुणी लक्षणों से राजा अपनी प्रजाजनों के हितों का अत्यन्त पोषक था।

इस प्रकार राजा सोमकान्त स्त्री, पुत्र, पशु, वाहन, राज्य एवं प्रतिष्ठा इत्यादि से सब प्रकारसुखी था। उसे किसी प्रकार का दु:ख तो था ही नहीं। सभी प्रजाजन उसका सम्मान करते थे, जिस कारण उसकी श्रेष्ठ कीर्ति भी संसारव्यापी थी। परन्तु युवावस्था के अन्त में सोमकान्त को घृणित कुष्ठ रोग हो गया। उसके अनेक उपाचार किये गये, किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। रोग शीघ्रता से बढने लगा और उसके कीड़े पड़ गये। जब रोग की अधिक वृद्धि होने लगी और उसका कोई उपाय न हो सका तो राजा ने अमात्यों को बुलाकर कहा- सुब्रतो! जाने किस कारण यह रोग मुझे पीड़ित कर रहा हैं। अवश्य ही यह मेरें किसी पूर्व जन्म के पाप का फल होगा। इसलिए मैं अब अपना समस्त राज-पाट छोड़कर वन में रहूँगा। अतः आप मेरे पुत्र हेमकान्त को मेरे समान मानकर राज्य शासन का धर्मपूर्वक संचालन कराते रहें। यह कहकर राजा ने शुभ दिन दिखवाकर अपने पुत्र हेमकान्त को राज्यपद पर अभिषिक्त किया और अपनी पत्नी सुधर्मा के साथ निर्जन वन की ओर चल दिया। प्रजापालक राजा के वियोग में समस्त प्रजाजन अश्रु बहाते हुए उनके साथ चले। राज्य की सीमा पर पहुँचकर राजा ने अपने पुत्र, अमात्यगण और प्रजाजनों को समझाया-आप सब लोग धर्म के जानने वाले, श्रेष्ठ आचरण में तत्पर एवं सहृदय हैं। यह संसार तो वैसे भी परिवर्तनशील है। जो आज है, वह कल नहीं था और आने वाले कल भी नहीं रहेगा। इसलिए मेरे जाने से दु:ख का कोई कारण नहीं हैं। मेरे स्थान पर

मेरा पुत्र सभी कार्यों को करेगा, इसलिए आप सब उसके अनुशासन में रहते हुए उसे सदैव सम्मति देते रहें। फिर पुत्र से कहा-'पुत्र! यह स्थिति सभी के समक्ष आती रही हैं। हमारे पूर्व पुरूष भी परम्परागत रूप से वृद्धावस्था आने पर वन में जाते रहे हैं। मैं कुछ समय पहिले ही वन में जा रहा हूँ तो कुछ पहिले या पीछे जाने में कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि कुछ वर्ष बाद जाऊँ तब भी मोह का त्याग करना ही होगा। इसलिए, हे वत्स! तुम दु:खित मत होओ और मेरी आज्ञा मानकर राज्य-शासन को ठीक प्रकार चलाओ। ध्यान रखना क्षत्रिय धर्म का कभी त्याग न करना और प्रजा को सदा सुखी रखना। इस प्रकार राजा सोमकान्त ने सभी को समझा बुझाकर वहाँ से वापस लौटाया और स्वयं अपनी पतिव्रता पत्नि के साथ वन में प्रवेश किया। पुत्र हेमकान्त के आग्रह से उसने सुबल और ज्ञानगम्य नामक दो अमात्यों को भी साथ ले लिया। उन सबने एक समतल एवं सुन्दर स्थान देखकर वहाँ विश्राम किया। तभी उन्हें एक मुनिकुमार दिखाई दिया। राजा ने उससे पूछा-'तुम कौनहो? कहाँ रहते हो? यदि उचित समझो तो मुझे बताओ। मुनि बालक ने कोमल वाणी में कहा-'मैं महर्षि भृगु का पुत्र हूँ, मेरा नाम च्यवन है। हमारा आश्रम निकट में ही है। अब आप भी अपना परिचय दीजिए। राजा ने कहा-'मुनिकुमार! आपका परिचय पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं सौराष्ट्र के देवनगर राज्य का अधिपति रहा हूँ। अब अपने पुत्र को राज्य देकर मैंने अरण्य की शरण ली हैं। मुझे कुष्ठ रोग अत्यन्त पीड़ित किये हुए हैं, इसकी निवृत्ति का कोई उपाय करने वाला हो तो कृपया कर मुझे बताइये। मुनिकुमार ने कहा-'मैं अपने पिताजी से आपका वृतान्त कहता हूँ, फिर वे जैसा कहेंगे, आपको बताऊँगा। यह कहकर मुनि बालक चला गया और कुछ देर में ही आकर बोला-'राजन्! मैंने आपका वृत्तान्त अपने पिताजी को बताया। उनकी आज्ञा हुई हैं कि आप सब मेरे साथ आश्रम में चलकर उनसे भेंट करें तभी आपके रोग के विषय में भी विचार किया जायेगा। पूर्वजन्म का वृत्तान्त जानने के लिये राजा अपनी पत्नि और अमात्यों के सहित च्यवन के साथ-साथ भृगु आश्रम में जा पहुँचा और उन्हें प्रणाम कर बोला हे भगवान् हे महर्षि! मैं आपकी शरण हूँ, आप मुझ कुष्ठी पर कृपा कीजिए। महर्षि बोले राजन्! यह तुम्हारे किसी पूर्वजन्म के पाप कर्म का ही उदय हो गया हैं। इसका उपाय मैं विचार कर बताऊँगा। आज तो आप सब स्नानादि से निवृत्त होकर रात्रि-विश्राम करो। महर्षि की आज्ञानुसार सबने स्नान, भोजन आदि उपरान्त रात्रि व्यतीत की और प्रात: स्नानादि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर महर्षि की सेवा में उपस्थित हुए।

महर्षि ने कहा-'राजन्! मैंने तुम्हारे पूर्वजन्म का वृत्तान्त जान लिया हैं और यह भी ज्ञात कर लिया हैं कि किस पाप के फल से तुम्हें इस घृणित रोग की प्राप्ति हुई हैं। यदि तुम चाहो तो उसे सुना दूँ। राजा ने हाथ जोड़कर निवेदन किया बड़ी कृपा होगी मुनिनाथ! मैं उसे सुनने के लिए उत्कण्ठित हूँ। महर्षि ने कहा तुम पूर्व जन्म में एक धनवान वैश्य के लाड़ले पुत्र थे। वह वैश्य विंध्याचल के निकट कौल्हार नामक ग्राम में निवास करता था। उसकी पत्नी का नाम सुलोचना था। तुम उसी वैश्य-दम्पत्ति के पत्र हुए। तुम्हारा नाम 'कामद था। तुम्हारा लालन-पालन बड़े लाड़-चाव से हुआ। उन्होंने तुम्हारा विवाह एक अत्यन्त सुन्दरी वैश्य कन्या से कर दिया था, जिसका नाम कुटुम्बिनी था। यद्यपि तुम्हारी भार्या सुशीला थी और तुम्हें सदैव धर्म में निरत देखना चाहती थी, किन्तु तुम्हारा स्वभाव वासनान्ध होने के कारण दिन प्रतिदिन विकृत होता जा रहा था। किन्तु माता-पिता भी धार्मिक थे, इसलिए उनके सामने तुम्हारी विकृति दबी रही। परन्तु माता-पिता की मृत्यु के बाद तुम निरंकुश हो गये और अपनी पत्नी की बात भी नहीं मानते थे।

तुम्हारे अनाचार में प्रवृत्त देखकर उसे दु:ख होता था, तो भी उसका कुछ वश न चलता था। तुम्हारी उन्मुक्तताता चरम सीमा पर थी। अपनों से भी द्वेष और क्रूरता का व्यवहार किया करते थे। हत्या आदि करा देना तुम्हारे लिये सामान्य बात हो गई। पीड़ित व्यक्तियों ने तुम्हारे विरूद्ध राजा से पुकार की। अभियोग चला और तुम्हें राज्य की सीमा से भी बाहर चले जाने का आदेश हुआ। तब तुम घर छोड़कर किसी निर्जन वन

में रहने लगे। उस समय तुम्हारा कार्य लोगों को लूटना और हत्या करना ही रह गया।

एक दिन मध्याह्न काल था। गुणवर्धक नामक एक विद्वान् ब्राह्मण उधर से निकला। बेचारा अपनी पत्नी को लिवाने के लिए ससुराल जा रहा था। तुमने उस ब्राह्मण युवक को पकड़ कर लूट लिया। प्रतिरोध करने पर उसे मारने लगे तो वह चीत्कार करने लगा- मुझे मत मार, मत मार। देख, मेरा दूसरा विवाह हुआ है, मैं पत्नी को लेने के लिये जा रहा हूँ। किन्तु तुम तो क्रोधावेश में ऐसे लीन हो रहे थे कि तुमने उसकी बात सुनकर भी नहीं सुनी। जब उसे मारने लगे तो उसने शाप दे दिया-'अरे हत्यारे! मेरी हत्या के पाप से तू सहस्र कल्प तक घोर नरक भोगेगा। तुमने उसकी कोई चिन्ता न की और सिर काट लिया। राजन्! तुमने ऐसी-ऐसी एक नहीं बल्कि अनेक निरीह हत्याएँ की थीं, जिनकी गणना करना भी पाप है।

इस प्रकार इस जन्म में तुमने घोर पाप कर्म किये थे, किन्तु बुढ़ापा आने पर जब अशक्त हो गये तब तुम्हारे साथ क्रूरकर्मा थे वे भी किनारा कर गये। उन्होंने सोच लिया कि अब तो इसे खिलाना भी पड़ेगा, इसलिए मरने दो यहीं। **गणपति-उपासना** का अमांघ प्रभाव राजन्! अब तुम निरालम्ब थे, चल-फिर तो सकते ही नहीं थे, भूख से पीड़ित रहने के कारण रोगों ने भी घेर लिया। उधर से जो कोई निकलता, तुम्हें घृणा की दृष्टि से देखता हुआ चला जाता। तब तुम आहार की खोज में बड़ी कठिनाई से चलते हुए एक जीर्णशीर्ण देवालय में जा पहुँचे। उसमें भगवान् गणेश्वर की प्रतिमा विद्यमान थी। तब न जाने किस पुण्य के उदय होने से तुम्हारे मन में गणेशजी के प्रति भक्ति-भाव जाग्रत हुआ। तुम निराहार रहकर उनकी उपासना करने लगे। उससे तुम्हें सब कुछ मिला और रोग भी कम हुआ।

राजन्! तुमने अपने साथियों की दृष्टि बचाकर बहुत-सा धन एक स्थान पर गाढ़ दिया था। अब तुमने उस धन को उसे देवालय के जीर्णोद्धार में लगाने का निश्चय किया। शिल्पी बुलाकर उस मन्दिर को सुन्दर और भव्य बनवा दिया। इस कारण कुख्याति सुख्याति में बदलने लगी। फिर यथा समय तुम्हारी मृत्यु हुई। यमदूतों ने पकड़कर तुम्हें यमराज के समक्ष उपस्थित किया। यमराज तुमसे बोले-'जीव! तुमने पाप और पुण्य दोनों ही किये हैं और दोनों का ही भोग तुम्हें भोगना है। किन्तु पहले पाप का फल भोगना चाहते हो या पुण्य का? इसके उत्तर में तुमने प्रथम पुण्यकर्मों के भोग की इच्छा प्रकट की और इसीलिए उन्होंने तुम्हें राजकुल में जन्म लेने के लिए भेज दिया। पूर्व जन्म में तुमने भगवान् गणाध्यक्ष का सुन्दर एवं भव्य मन्दिर बनवाया था, इसलिए तुम्हें सुन्दर देह की प्राप्ति हुई है। यह कहकर महर्षि भृगु कुछ रूके, क्योंकि उन्होंने देखा कि राजा को इस वृत्तान्त पर शंङ्का हो रही है। तभी महर्षि के शरीर से असंख्य विकराल पक्षी उत्पन्न होकर राजा की ओर झपटे। उनकी चोंच बड़ी तीक्ष्ण थी, जिनसे वे राजा के शरीर को नोच-नोच कर खाने लगे। उसके कारण उत्पन्न असह्य पीड़ा से व्याकुल हुए राजा ने महर्षि के समक्ष हाथ जोड़कर निवेदन किया-'प्रभो! आपका आश्रम तो समस्त दोष, द्वेष आदि से परे है और यहाँ मैं आपकी शरण में बैठा हूँ तब यह पक्षी मुझे अकारण ही क्यों पीड़ित कर रहे हैं? हे मुनिनाथ! इनसे मेरी रक्षा कीजिए।

महर्षि ने राजा के आत्र्तवचन सुनकर सान्त्वना देते हुए कहा-'राजन्! तुमने मेरे वचनों में शंका की थी और जो मुझ सत्यवादी के कथन में शंका करता है, उसे खाने के लिए मेरे शरीर से इसी प्रकार पक्षी प्रकट हो जाते हैं, जो कि मरे हुंकार करने पर भस्म हो जाया करते हैं। यह कहकर महर्षि ने हुंङ्कार की ओर तभी वे समस्त पक्षी भस्म हो गये। राजा श्रद्धावनत होकर उनके समक्ष अश्रुपात करता हुआ बोला-'प्रभो! अब उस पाप से मुक्त होने के उपाय कीजिए।

महर्षि ने कुछ विचार कर कहा-'राजन्! तुम पर भगवान् गणेश्वर की कृपा सहज रूप से है और वे ही प्रभु तुम्हारे पापों को भी दूर करने में समर्थ हैं। इसलिए तुम उनके पाप-नाशक चरित्रों को श्रवण करो। गणेश पुराण में उनके प्रमुख चरित्रों का भले प्रकार वर्णन हुआ है, अतएव तुम श्रद्धा-भक्ति पूर्वक उसी को सुनने में चित्त लगाओ। राजा ने प्रार्थना की-'महामुने! मैंने गणेश पुराण का नाम भी आज तक नहीं सुना तो उनके सुनने

का सौभाग्य कैसे प्राप्त कर सकूँगा। हे नाथ! आपसे अधिक ज्ञानी और प्रकाण्ड विद्वान् और कौन हो सकता है? आप ही मुझ पर कृपा कीजिए। महर्षि ने राजा की दीनता देखकर उसके शरीर पर अपने कमण्डल का मन्त्रपूत जल छिड़का।

तभी राजा को एक छींक आई और नासिका से एक अत्यन्त छोटा काले वर्ण का पुरूष बाहर निकल आया। देखते-देखते वह बढ़ गया। उसके भयंकर रूप को देखकर राजा कुछ भयभीत हुआ, किन्तु समस्त आश्रमवासी वहाँ से भाग गये। वह पुरूष महर्षि के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। भृगु ने उसकी ओर देखा और कुछ उच्च स्वर में बोले-'तू कौन है? क्या चाहता है? वह बोला-'मैं साक्षात् पाप हूँ, समस्त पापियों के शरीर में मेरा निवास है। आपके मन्त्रपूत जल के स्पर्श से मुझे विवश होकर राजा के शरीर से बाहर निकलना पड़ा है। अब मुझे बड़ी भूख लगी है, बताइये क्या खाऊँ और कहाँ रहूँ? महर्षि बोले-'तु उस आम के अवकाश स्थान में निवास कर और उसी वृक्ष के पत्ते खाकर जीवन-निर्वाह कर। यह सुनते ही वह पुरूष आम के वृक्ष के पास पहुँचा, किन्तु उसके स्पर्श मात्र से वह वृक्ष जलकर भस्म हो गया। फिर जब पाप पुरूष को रहने के लिए कोई स्थान दिखाई न दिया तो वह भी अन्तर्हित हो गया।

हर्षि बोले-'राजन्? कालान्तर में यह वृक्ष पुन: अपना पूर्वरूप धारण करेगा। जब तक यह पुन: उत्पन्न न हो तब तक मैं तुम्हें गणेश पुराण का श्रवण कराता रहूँगा। तुम पुराण श्रवण के संकल्पपूर्वक आदि देव गणेशजी का पूजन करो, तब मैं गणेश पुराण की कथा का आरम्भ करूँगा। मुनिराज के आदेशानुसार राजा ने पुराण-श्रवण का संकल्प किया।

उसी समय राजा ने अनुभव किया कि उसकी समस्त पीड़ा दूर हो गई है। दृष्टि डाली तो कुष्ठ रोग का अब कहीं चिन्ह भी शेष नहीं रह गया था। अपने को पूर्णरूप से रोग रहित एवं पूर्ववत् सुन्दर हुआ देखकर राजा के आश्चर्य की सीमा न रही और उसने महर्षि के चरण पकड़ लिए और निवेदन किया कि प्रभो! मुझे गणेश पुराण का विस्तारपूर्वक श्रवण कराइये। महर्षि ने कहा-'राजन्! यह गणेश पुराण समस्त पापों और संकटों को दूर करने वाला है, तुम इसे ध्यानपूर्वक सुनो। इसका श्रवण केवल गणपति-भक्तों को ही करना-कराना चाहिए अन्य किसी को नहीं।

कलियुग में पापों की अधिक वृद्धि होगी, और लागे कष्ट-सहन में असमर्थ एवं अल्पायु होंगे। उनके पाप दूर करने का कोई साधन होना चाहिए। इस विचार से महर्षि वेदव्यास ने मुझे सुनाया था। उन्हीं की कृपा से मैं भगवान गणाध्यक्ष के महान चरित्रों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त कर सका था।
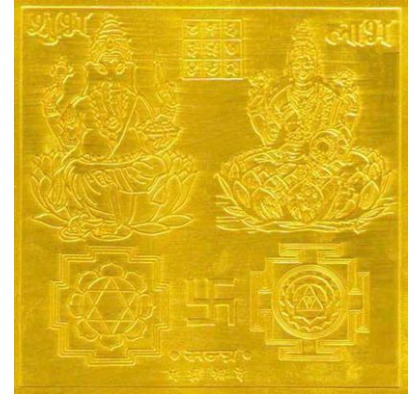
महाराज! भगवान गजानन अपने सरल स्वभाव वाले भक्तों को सब कुछ प्रदान करने में समर्थ हैं। निरभिमान प्राणियों पर वे सदैव अनुग्रह करते हैं किन्तु मिथ्याभिमानी किसी को भी नहीं रहने देते।

***

कामनापूर्ति हेतु तीन दुर्लभ गणेश साधना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हरिद्रा गणपति यन्त्र साधना

साधना हेतु सामग्री:- श्री हरिद्रा गणेश यन्त्र (हरिद्रा गणपति यन्त्र), एवं श्री गणेश जी की प्रतिमा(हल्दी की मिलजाये तो अति उत्तम), हल्दी, घी का दीप, धूपबत्ती, अक्षत

माला: मूंगे या हल्दी की

समय: प्रातःकाल

दिशा: पूर्व

आसन: लाल

वस्त्र: पीला

दिन: कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक

जप संख्या: चार लाख

प्रदाद : गुड़

मंत्र:–

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपत्ये वरद सर्वजन हृदय स्तंभय स्तंभय स्वाहा ||

Om Hum Gan Gloun Haridraganapatye Varad Sarvajan Hruday Stambhay Stambhay Swaha

विधि: प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाये। श्री हरिद्रा गणेश यन्त्र एवं गणेशजी के विग्रह को एक लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करदे। गणेशजी को हल्दी, लाल या पीले फूल गणेशजी को अर्पित करें। प्रसाद में गुड़ चढ़ाए। धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें। मन्त्र जप प्रारंभ करने से पूर्व जप का विनियोग अवश्य करलें। जप की समाप्ति पर हल्दी मिश्रित अक्षत से दशांश हवन करके ब्राह्मण भोजन कराये।

मन्त्र जप से पूर्व गणेशजी का इस मंत्र से ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र :

पाशांक शौमोदकमेक दन्तं करैर्दधानं कनकासनस्थम् हारिद्राखन्ड प्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकंरात्रि गणेश मीडे ॥

Paashank Shoumodakamek Dantam Karairdadhanam Kanakasanastham Haridrakhand Pratimam Trinetram Peetanshukanratri Ganesha Meede.

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को हल्दी का लेप शरीर पर लगाकर स्नान करें। गणेशजी का पूजन करे और ८००० मन्त्र से तर्पण करके, घी से १०१ बार हवन करे। कुंवारी कन्या को भोजन कराये और यथाशक्ति दक्षिणा देकर प्रसन्न करें। यन्त्र एवं प्रतिमा को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदे।

प्रमुख प्रयोजन: १. शत्रु मुख बंध करने हेतु। २. जल, अग्नि, चोर एवं हिंसक जीवों से रक्षा हेतु। ३. वंध्या स्त्री को संतान प्राप्ति हेतु।

विजय गणपति यन्त्र साधना

साधना हेतु सामग्री:- श्री गणेश यन्त्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित), एवं स्फटिक की गणेश की प्रतिमा, लाल चंदन, केसर घी का दीप, धूपबत्ती, अक्षत, जल पात्र, कनेर के फूल

माला: मूंगे या रक्त चंदन की

समय: दिन में किसी भी समय (प्रातःकाल उत्तम होता हैं)

दिशा: पूर्व

आसन: लाल

वस्त्र: लाल

दिन: पांच दिन में (किसी भी बुधवार से साधना प्रारंभ करें)

जप संख्या: सवा लाख

प्रदाद : गुड़

मंत्र:–

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

Om Var Varaday Vijay Ganapatye Namah |

विधि:–

प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाये।

श्री गणेश यन्त्र एवं गणेशजी के विग्रह को एक लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करदे। गणेशजी को केसर व रक्त चंदन का तिलक करे, प्रसाद में गुड़ चढ़ाए। धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें।

२१ कनेर के फूल(कनेर अप्राप्त हो तो लाल गुलाब या कोइ भी लाल फूल) गणेशजी को अर्पित करें। गणेश जी को हर पुष्प अर्पित करते समय जिस कार्य में विजय प्राप्त करनी हो उस कार्य की पूर्ति हेतु गणेश जी से श्रद्धा भाव से प्राथना करें।

फिर मन्त्र जप प्रारंभ करें। पांच दिन में सवा लाख जप पूर्ण हो जाने पर, छठ्ठे दिन पांच कुवारिकाओं को भोजन कराये और यथाशक्ति दक्षिणा देकर प्रसन्न करें। एसा करने से साधक की कामनाएं पूर्ण होती हैं। यन्त्र एवं मूर्ति को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें, जिस कार्य उद्देश्य के लिये प्रयोग किया हो उस कार्य हेतु जब आवश्यक हो तो यन्त्र को संबंधित कार्य के समय साथ लेकर जाये। कार्य उद्देश्य में विजयश्री की प्राप्ति के पश्चयात यन्त्र को बहते पानी में विसर्जित करदे। गणेश प्रतिमा का नियमित पूजन कर सकते हैं।

प्रमुख प्रयोजन:

१. कोर्ट-केश आदि विवादों में सफलता हेतु।

२. शत्रु का प्रभाव बढ़ गया हो तो उस पर विजय प्राप्त करने हेतु।

३. यदि किसी कार्य उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने हेतु ।

कल्याणकारी गणपति यन्त्र साधना

साधना हेतु सामग्री:- श्री गणेश सिद्ध यन्त्र एवं स्फटिक की गणेश की प्रतिमा, लाल चंदन, केसर घी का दीप, धूपबत्ती, अक्षत, कनेर के फूल

माला: मूंगे या रक्त चंदन की

समय: दिन में किसी भी समय (प्रातःकाल उत्तम होता हैं)

दिशा: पूर्व

आसन: लाल

वस्त्र: लाल

दिन: पांच दिन, ग्यारादिन या इक्किस दिन में (किसी भी बुधवार से साधना प्रारंभ करें)

जप संख्या: सवा लाख

प्रदाद : गुड़

मंत्र:–

गं गणपतये नमः।

Gan Ganapatye Namah |

विधि:–

किसी भी बुधवार को प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाये। श्री गणेश सिद्ध यन्त्र एवं गणेशजी के विग्रह को एक लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करदे। गणेशजी को केसर व रक्त चंदन का तिलक करे, प्रसाद में गुड़ चढाए। धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें। संभव हो तो गणेशजी को पुष्प अर्पित करें।

जितने दिनों में साधना संपन्न करनी हो उसी के अनुरुप संकल्प करके मन्त्र जप प्रारंभ करें। नियमित उसी समय में मन्त्र जप करे।

साधना सम्पन्न होने पर किसी ब्राहमण या कुमारिका कों भोजन कराये और यथाशक्ति दक्षिणा वस्त्र आदि देकर प्रसन्न करें।

यन्त्र और गणेश प्रतिमा को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें, और नियमित उक्त मन्त्र की एक माला जप करें। उक्त साधना से साधक का भविष्य में सिद्ध होने वाले कार्य बिना किसी परेशानी से निर्विध्न संपन्न हो जाये गा।

प्रमुख प्रयोजन:

१. सभी कार्य निर्विघ्न संपन्न करने हेतु।

२. महत्वपूर्ण कार्यों में आने वाली बाधा एवं विध्नों के नाश हेतु।

३. परिवार की सुख-समृद्धि हेतु।

विभिन्न पदार्थ में निर्मित गणेश प्रतिमा के लाभ

- मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों से बनी गणेश प्रतिमा का पूजन करने से धन-सम्पत्ति, स्त्री-संतान, मान-सम्मान और यश की प्राप्ति होती हैं।
- ताम्र की गणेश प्रतिमा का पूजन करने से क्रांति प्राप्त होती हैं।
- सुवर्ण की गणेश प्रतिमा का पूजन करने से शत्रु नाश होता हैं।
- रजत की गणेश प्रतिमा का पूजन करने से साधक का कल्याण होता हैं।
- स्फटिक की गणेश प्रतिमा का पूजन करने से साधक को सभी अभिष्ट कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं। स्फटिक रत्न पर उत्कीर्ण की गई गणेश प्रतिमा को दुर्लभ माना जाता हैं। क्योंकी स्फटिक सभी द्रव्यों से अतिशीघ्र फल प्रदान करने वाला रत्न है। स्फटिक की गणेश प्रतिमा मनुष्य की सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। यदि किसी साधक को सौभाग्य से स्फटिक गणेश प्रतिमा प्राप्त हो जाए तो किसी विद्वान से उसको अभिमंत्रित करवाले। स्फटिक गणेश प्रतिमा रंक को भी राजा बनाने में समर्थ हैं। विद्वानों का अनुभव रहा हैं की जिस भवन में स्फटिक श्री यंत्र के साथ स्फटिक गणेश का पूजन हो रहा हों उस भवन में निवास कर्ता को धन की कभी कमी नहीं रहती।
- पारद की गणेश प्रतिमा शास्त्रों में पारद धातु को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है। शुद्ध पारद से निर्मित पारद गणेश प्रतिमा अति दुर्लभ तथा प्रभावशाली है। धन प्राप्ति हेतु पारद गणेश-लक्ष्मी का पूजन उत्तम माना जाता हैं।

सिंह, मयूर और मूषक हैं गणेशजी के वाहन

भारतीय धर्म शास्त्रों और पुराणों में गणेश जी के वाहन सिंह, मयूर और मूषक बताये गये है।

गणेश पुराण में क्रीडाखण्ड १ में वर्णित है

- सत युग में भगवान गणेशजी का वाहन सिंह बताया गया हैं। जिसमें गणेशजी का नाम विनायक और स्वरुप तेजस्वी दस भुजा युक्त्र समस्त जीवों को वर प्रदान करने वाले हैं।
- त्रेता युग में उनका वाहन मयूर बताया गया हैं। जिसमें गणेशजी का नाम मयूरेश्वर स्वरुप श्वेत वर्णन और छः भुजाओं युक्त हैं।
- द्वापर युग में उनका वाहन मूषक बताया गया हैं। जिसमें गणेशजी का नाम गजानन स्वरुप लाल वर्णन और चार भुजाओं युक्त हैं।
- कलि युग में उनका वाहन धूम्रवर्ण है। जिसमें गणेशजी का नाम धूम्रकेतु स्वरुप घोड़े पर आरूढ़ और दो भुजाओं युक्त हैं।

भगवान गणेश के वाहनों में सबसे प्रसिद्ध वाहन मूषक माना जाता हैं, पौराणिक कथा के अनुशार एक बार गजमुखासुर नामक दैत्य से भगवान गणेश का युद्ध हुआ था जिसमें उनका एक दाँत टूट गया था। गणेश जी नें इसी दाँत से गजमुखासुर पर ऐसा तीव्र प्रहार किया की वह मूषक बनकर भागने लगा। भागते मूषक को गणेश जी ने पकड़ लिया माना जाता हैं तब से मूषक गणेशजी का वाहन बन गया।

स्वस्तिक का धार्मिक महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

स्वस्तिक संस्कृत भाषा का शब्द है।

स्वस्तिक का सरल शब्दों में अर्थ शुभ, मंगल एवं कल्याण करने वाला है। स्वस्तिक शब्द मूल रुप से सु + अस से बना है।

सु का शाब्दिक अर्थ है शुभ, अच्छा, कल्याणकारी, मंगलकारी। अस का शाब्दिक अर्थ है अस्तित्व, सत्ता।

दोनो शब्दों के संयोज से बना हैं, स्वस्तिक अर्थात शुभ, कल्याणकारी या मंगलकारी की सत्ता एवं उसका प्रतिकात्मक रुप।

स्वस्तिक व्यावहारिक रुप से हमारी पूर्णतः कल्याणकारी भावना को दर्शाता है। धर्मशास्त्रों में स्वस्तिक को देवी-देवता की शक्ति के प्रतीक रुप में शुभ एवं कल्याणकारी माना गया है। हिन्दू धर्म शास्त्रों में स्वस्तिक का वर्णन आशीर्वाद युक्त, मंगलकारी या पुण्यकारी के रुप में किया गया लिखा है, स्वस्तिक के प्रतिक चिन्ह में सभी दिशाओं में सकल लोक का कल्याण अर्थात सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना समाहित हैं।

मंगलकारी प्रतीक स्वस्तिक हिन्दू धर्म के अत्यंत पवित्र एवं शुभ धार्मिक प्रतीक चिन्हों में से एक है। अभी तक प्राप्त प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से विभिन्न प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं, पुरातन काल से ही हिन्दू संस्कृति के अलावा अन्य अनेक संस्कृति में भी स्वस्तिक अत्याधिक महत्वपूर्ण रहा हैं।स्वस्तिक का चिन्ह अपने आप में विलक्षण है, जो सृष्टि के अनेक गूढ़ रहस्यों से युक्त है।

विद्वानों का मत हैं की पौराणिक काल में हिन्दू संस्कृति में किसी भी शुभ कार्य या मंगल कार्य को आरंभ करने से पूर्व मंगलाचरण लिखने की परंपरा प्रचलित थी। लेकिन कालांतर में विद्वान ऋषि-मुनियों ने अनुभव किया की हर व्यक्ति के लिए किसी शुभ कार्य अथवा मांगलिक कार्य के आरंभ में विधि-विधान से मंगलाचरण लिखना सम्भव नहीं हैं, तब गहन चिंतन-अध्ययन से संभवत् शुभकार्यों का शुभारंभ सरलता से करने के उद्देश्य से स्वस्तिक चिन्ह का आविष्कार किया होगा! पौराणिक धर्मग्रंथों के अनुसार हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हज़ारों वर्ष पूर्व ही स्वस्तिक की आकृति को निर्मित कर, उसमें छुपे गूढ़ रहस्यों को ज्ञात कर लिया था।

मुख्यतः स्वस्तिक का निर्माण छह रेखाओं से होता है। स्वस्तिक बनाने के लिए धन (+) चिन्ह अर्थात दो सीधी रेखाएँ रेखाएं जो एक दूसरी को काटती हैं, उसकी चारों भुजाओं के कोने से समकोण बनाने वाली एक रेखा दाहिनी (दक्षिणवर्ती) ओर खींचने से स्वस्तिक बनता है। दक्षिणवर्ती में रेखाएँ हमारे दायीं ओर मुड़ती (दक्षिणवर्ती / घडी की सूई चलने की दिशा) हो, उसे दक्षिणावर्त स्वस्तिक कहते हैं। वामावर्ती में रेखाएँ पीछे की ओर मुड़ती हुई हमारी बायीं ओर (वामावर्ती/घडी की सूई चलने की दिशा से उलटी) हो, उसे वामावर्त स्वस्तिक कहते हैं। दक्षिणवर्ती एव वामावर्ती स्वस्तिक स्त्री एवं पुरुष के प्रतीक के रूप में माना जाता हैं।

हिन्दू संस्कृति में स्वस्तिक प्रबल रुप से दक्षिणवर्ती ही प्रयुक्त रहा हैं। क्योकिं, दायीं ओर मुडी भुजा वाला स्वस्तिक शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक हैं, लेकिन कुछ अपवाद अथवा विशेष परीस्थिति या विशेष संस्कृति या परंपराओं में वामावर्ती अर्थात उल्टा स्वस्तिक भी प्रयुक्त होता रहा है। लेकिन, जानकारों का मत हैं की उल्टा स्वस्तिक (वामावर्ती) विशेष शुभकारी
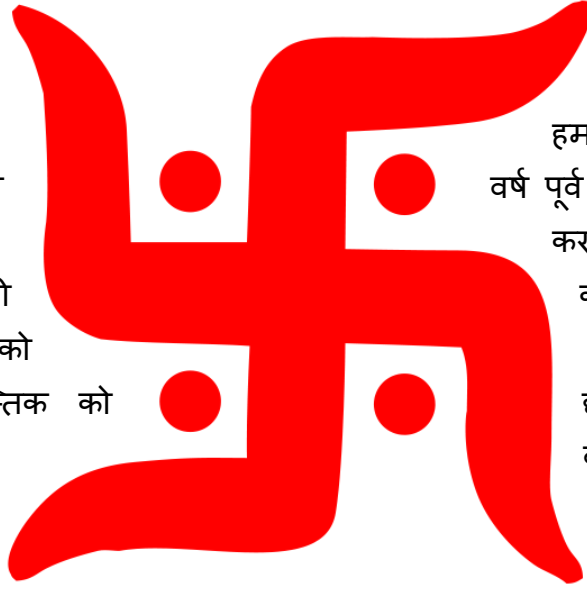
नहीं होता, अपितु यह अमांगलिक, हानिकारक हो सकता हैं। अतः एसे स्वस्तिक का चित्रांकन केवल विशेष परिस्थियों में अल्प समय के लिए हि करना चाहिए हैं।^

^(नोट: हालाकिं इसमें अनेक मत-मतांतर रहें हैं, क्योकिं कुछ संप्रदाय या संस्कृतिमें उल्टा स्वस्तिक (वामावर्त्ती) भी शुभकारी माना जाता रहा है। इसी लिए विभिन्न संस्कृतियों में सकारात्मक ऊर्जा के स्त्रोत एवं मंगल चिन्हों के रुप में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है।)

हिन्दू धर्मग्रंथों में भगवान शिव-शक्ति के रुप में ज्योतिर्लिंग को विश्व की उत्पत्ति का मूल माना है। इस विषय पर विद्वानों का गहन अध्ययन एवं चिंतन रहा हैं की जिस प्रकार दाहिना स्वस्तिक नर का प्रतीक है और बायाँ नारी का प्रतीक हैं। उसी प्रकार स्वस्तिक की खडी रेखा सृष्टि की उत्पत्ति का प्रतीक है और आडी रेखा सृष्टि के विस्तार का प्रतीक है। स्वस्तिक के मध्य बिंदु को भगवान विष्णु का नाभि कमल भी माना जाता है, जहाँ से विश्व की उत्पत्ति मानी गई है। स्वस्तिक में प्रयुक्त होने वाले 4 बिन्दुओ को 4 दिशाओं का प्रतीक माना गया है। कुछ विद्वान इसे 4 वर्णों की एकता का प्रतीक मानते हैं, तो कुछ विद्वान इसे ब्रह्माण्ड का प्रतीक मानते हैं। क्योकि, स्वस्तिक के चारों सिरों पर खींची गयी रेखाएं किसी बिंदु को इसलिए स्पर्श नहीं करतीं, क्योंकि इन्हें ब्रहाण्ड के प्रतीक स्वरूप अन्तहीन दर्शाया गया है।

वेदों में स्वस्तिक के महत्व का उल्लेख विभिन्न अर्थों मिलता है। मुख्यतः भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक चिन्ह को गणेश, विष्णु, सूर्य, सृष्टिचक्र तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतीक माना गया है। इसकी आकृति में चार बिंदु इको गौरी, पृथ्वी, (कूर्म) कछुआ और अनन्त देवताओं का वास माना जाता है। कुछ विद्वानों ने स्वस्तिक को भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र का स्वरुप माना है। जिसमें मनुष्य की शक्ति, प्रगति, प्रेरणा का उद्देश्य निहित है।

ऋग्वेद के अनुसार स्वस्तिक को सूर्य का प्रतीक है, और स्वस्तिक की चार भुजाएं चार दिशाओं को दर्शाती है। सूर्य समस्त इश्वरीय शक्तियों का केंद्र बिंदु है, जो सकल लोक में जीवन दाता माना गया है। स्वस्तिक को सूर्य का स्वरुप मान कर प्रयुक्त करने पर निरंतर शक्ति प्राप्त होती हैं। स्वस्तिक को ऋग्वेद में सूर्य मनोवांछित फलदाता सम्पूर्ण जगत का कल्याण करने वाला और देवताओं को अमरत्व प्रदान करने वाला माना गया है। वायवीय संहिता में स्वस्तिक को ब्रह्मा का ही एक स्वरूप माना है, जो आठ यौगिक आसनों में एक है।

कुछ विद्वान स्वस्तिक की चार भुजाओं को हिन्दू धर्मग्रंथों मे वर्णित चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) का प्रतिक, चार युग (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग) का प्रतिक, चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्न्यास) का प्रतिक, चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का प्रतिक, चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) की एकता का प्रतीक मानते हैं। इन भुजाओं को ब्रह्मा के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप भी माना जाता है।

जिस प्रकार सभी मांगलिक और शुभ कार्यों में सर्वप्रथम श्री गणेश का पूजन किया जाता है। उसी प्रकार सभी मांगलिक कार्य, शुभ कार्यों इत्यादि में स्वतिस्क के चिन्ह का निर्माण किया जाता है। किसी भी शुभ कार्य-क्रम, व्रत, पर्व, त्योहार, पूजा-अर्चना में घर-दुकान-ऑफिस इत्यादि की दिवारों पर, पूजन की थाली, बाजोट इत्यादि पर हल्दी, कुंकुम से स्वस्तिक का चिन्ह अंकित किया जाता हैं। इस के पीछे का मुख्य उदेश्य हमारे आसपास से नकारात्मक ऊर्जा दूर करना होता है, क्योकि स्वस्तिक को सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करने के पीछे अन्य उद्देश्य होता हैं, जिससे अपने आराध्य से यह प्राथना कि जाती हैं, कि हमारे सभी कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो। हमारे घर में सुख-शांति-समृद्धि बनी रहे।

स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना वास्तु के अनुसार भी लाभदायक सिद्ध होता है इसलिए घर-दुकान-ऑफिस इत्यादि के प्रवेश द्वार के उपर या दोनों ओर स्वस्तिक का चिन्ह अंकित किया जाता हैं, मान्यता हैं कि इससे बुरी नज़र से रक्षा होती हैं और और घर के

वातावरण से नकारात्मक उर्जा दूर होती और निरंतर सकारात्मक उर्जा का संचार होता है।

कैश बॉक्स, तिज़ोरी, अलमारी इत्यादि धन रखने के स्थान पर भी स्वस्तिक का चिन्ह अंकित करना अत्यंत शुभ होता हैं, मान्यता हैं की इससे धन की सुरक्षा और वृद्धि होती हैं, और अशुभ शक्ति से रक्षण होता है।

स्वस्तिक को धनकी देवी लक्ष्मी और बुद्धि के देवता गणेश जी का प्रतीक माना जाता है। स्वस्तिक के चिन्ह को चारों दिशाओं के अधिपति देवता क्रमशः अग्नि, इन्द्र, वरुण और सोम के पूजन हेतु एवं अन्य देवी-देवता के आशीर्वाद को प्राप्त करने हेतु प्रयोग किया जाता है। स्वस्तिक का चिन्ह केवल शुभ स्थानों पर ही करना चाहिए, शौचालय जैसे अशुभ स्थान पर बनाने या लगाने से बचना चाहिए, अन्यथा प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होते हैं।

अन्य संस्कृति में स्वस्तिक

- ❖ स्वस्तिक को ग्रीक में पूर्वकाल में गम्माडिओन (gammadion) गम्माडिओन (tetragammadion) के नाम से जाना जाता था।
- ❖ स्वस्तिक को जर्मन में हकेन्क्रुज़ या हकेनक्रेउज़ या हुकड क्रॉस (Hakenkreuz), क्रुमक्रेज़ या क्रुक्ड क्रॉस(Krummkreuz) के नाम से जाना जाता है।
- ❖ पुरातन समय से मुख्य रूप से फाईलफॉट (fylfot) में हेराल्ड्री (Heraldry) अर्थात कलात्मक रचनाएं, प्रदर्शन, रक्षक ढाल या हथियार झंडे और प्रतीकात्मकता संबंधित विषयों का अध्ययन करने की विद्या में और वास्तुकला में प्रयुक्त किया जाता था।
- ❖ मूल अमेरिकी लोगों के ऐतिहासिक संदर्भ की आयोनोग्राफी में इसे घुमावदार लॉग (Whirling Log) के रुप में पाया गया है, जिसे समृद्धि, उपचार और भाग्य की अधिकता को दर्शाया गया था।
- ❖ चीन में स्वस्तिक को एक वान(wàn) के नाम से एक विशेष संकेत के रुप में अपनाया गया है। चीन में स्वास्तिका जैसे प्रतीकों का उल्लेख नियोलिथिक स्क्रिप्ट (Neolithic scripts) में पुरातन काल के धर्म ग्रंथों में वर्णित रहा है। पुरातन काल से ही चीन की लेखन प्रणाली में 卍 और 卐) के बाएं और दाएं हाथ वाले स्वस्तिक का चिन्ह प्रचलित रहा है। चीन, जापान और कोरिया में स्वास्तिका को आमतौर पर पूर्ण सृजन का प्रतिक दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है, चीन में तांग राजवंश (Tang dynasty) के दौरान, महारानी वू ज़ेटियन (Wu Zetian) ने आदेश जारी किया था कि स्वास्तिका को सूर्य के वैकल्पिक प्रतीक के रूप में भी प्रयोग किया जाएगा।
- ❖ जापानी में स्वस्तिक के प्रतीक को मांजी (Manji) कहा जाता है।
- ❖ रेने गुएनॉन (Rene Guenon) के अनुसार, स्वास्तिक पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके आसपास की हर चिज घुमनेवाली अर्थात गतिमान हैं लेकिन वह एक केंद्र अर्थात अचल धुरी पर स्थिर होता हैं। जैसा कि यह जीवन का प्रतीक है। ब्रह्मांड के सिद्धांत में यह पूर्ण भगवान के रुप को सजीव करने वाला सर्वोच्च सिद्धांत हैं। स्वस्तिक यह विश्व के निर्माण में ब्रह्मांड के सिद्धांत की गतिविधि का प्रतिनिधित्व करता है। रेने गुएनॉन के अनुसार, स्वास्तिका अपने बुनियादी मूल्य में चीनी परंपरा के यिन और यांग प्रतीक का प्रतिक है।

जैन धर्म में स्वस्तिक

- ❖ हिन्दू धर्म की तरह ही जैन धर्म में भी स्वस्तिक को अत्यंत मांगलिक प्रतीक माना जाता हैं। क्योकि, स्वस्तिक में मंगलकामना का भाव

समाहित होता हैं। विद्वानों का मत हैं की स्वस्तिक की उत्पत्ति ऋग्वेद से भी प्राचीन हैं।

- ❖ जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकरों के मांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक एक विशेष चिह्न है। चौबीस तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर भगवान् श्री सुपार्श्वनाथजी का मांगलिक चिह्न स्वस्तिक है। जैन धर्म के 8 मांगलिक मांगलिक चिन्हों में स्वस्तिक एक मांगलिक चिन्ह माना गया हैं।
- ❖ जैन धर्म में सभी प्रकार के पूजन-अर्चन आदि में स्वस्तिक का प्रयोग को विशेश रुप से किया जाता हैं।
- ❖ जैन धर्म में किसी भी मांगलिक कार्य के शुभारंभ में हलदी, केसर, चंदन, चावल इत्यादि से स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर भगवान से अपने मंगल एवं कल्याण की कामना की जाती है।
- ❖ प्रायः सभी जैन पवित्र पुस्तकों और मंदिरों में प्रमुख व्रत-पर्व-त्यौहरों में आमतौर पर वेदी/ चौकी पर चावल से स्वास्तिका चिन्ह बनाने के साथ प्रारंभ होता है।
- ❖ जैन धर्म में 24 तीर्थंकर के सम्मुख चावल से स्वास्तिका बना के उस पर बादाम, फल, एक मीठे बतासे(पतासा) इत्यादि या सिक्के/नोट इत्यादि रख कर अर्पण किया जाता है।
- ❖ जैन धर्म में स्वास्तिक की चार भुजाएं चार स्थानों का प्रतीक मानी हैं, जो आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से पुनर्जन्म ले सकती है, उस आत्मा के मोक्ष प्राप्ति के पहले जन्म और मृत्यु के चक्र को समाप्त कर उससे सर्वज्ञता प्राप्त की जा सकती हैं।

बौद्ध धर्म में स्वस्तिक

- ❖ बौद्ध धर्म में भी स्वस्तिक चिह्न अत्याधिक शुभ माना जाता है। भगवान् बुद्ध के मांगलिक चिन्ह में स्वस्तिक का विशेष महत्त्व है। बौद्ध स्तूपों-विहारों इत्यादि धार्मिक स्थलों पर स्वस्तिक का चिन्ह विशेष रुप से मिलता है।
- ❖ बौद्ध धर्म में, स्वास्तिका को बुद्ध के शुभ पैरों के निशान का प्रतीक माना जाता है। स्वास्तिक का आकार बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांत में वर्णित शाश्वत चक्र का प्रतीक है। स्वास्तिक का प्रतीक बौद्ध धर्म में हिंदू धर्म के समान ही तंत्र की गूढ़ परंपराओं में विशेष रुप से पाया जाता है, जहां यह चक्र के सिद्धांतों और अन्य ध्यान सहायक उपकरण के साथ पाया जाता है।

इनके अलावा अन्य देशों की संस्कृति में स्वस्तिक को विशेष रुप से शुभ एवं पवित्र माना गया हैं।

स्वस्तिक के विभिन्न लाभ

आज आधुनिक युग में नई खोज-अनुसंधान व अनुभवों के आधार पर विद्वानों का अनुभव हैं, कि उचित परामर्श से विभिन्न पदर्थ से स्वस्तिक का निर्माण करने पर सरलता से विभिन्न लाभ प्राप्त किया जा सकता हैं। स्वस्तिक के उचित प्रयोग से आप भी धनवृद्धि, सुख-शान्ति, उच्च पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, कार्य में सफलता, स्वास्थ्य लाभ, वास्तुदोष निवारण, गृहक्लेश निवारण, शत्रु भय से रक्षण कर सकते है।

- ❖ व्यवसायिक प्रतिष्ठान की उत्तर दिशा में हल्दी से स्वस्तिक अंकित कर उसका पूजन विशेष लाभकारी सिद्ध होता है।
- ❖ हल्दी से अंकित किया गया स्वस्तिक शत्रु शमन करता है।
- ❖ आम की लकड़ी का स्वस्तिक घर के प्रवेश द्वार पर लगाने से सुख समृद्धि में वृद्धि होती है,
- ❖ जिस कोने में वास्तुदोष हो उस कोने में आम की लकड़ी का स्वस्तिक लगाने से वास्तुदोष मे कमी होती है।
- ❖ घर के पूजा स्थान में स्वस्तिक बनाने से घर में खुशहाली का आगमन होता है।
- ❖ घर के पूजा स्थान में या किसी मंदिर में स्वास्तिक बनाकर उस पर पांच तरह के अनाज रख के शुद्ध घी का दिपक जलाने से वांछित मनोकामना शीघ्र पूर्ण होती है।

- घर के पूजा स्थान में स्वास्तिक बनाकर उस पर इष्टदेव की मूर्ति स्थापित किया जाए तो मनोवांछित इच्छाएं शीघ्र पूर्ण होती है।
- घर के पूजा स्थान में तर्जनी अंगुली (Index Finger) से कुमकुम या सिंदूर से स्वास्तिक बनाकर पूजन करने से अनिद्रा दूर होती है, एवं दुःस्वप्न (बुरे सपने) आने बंद हो जाते हैं।
- विद्वानों के अनुसार चातुर्मास में मंदिर में अष्टदल कमल व स्वस्तिक बनाकर बना कर विधि-वत पूजन करने से स्त्री को अखंड सुहागन रहती है।
- पंच धातु से बने स्वस्तिक को प्रवेश द्वार पर लगा कर उसका पूजन करने से विभिन्न प्रकार के संकटो से रक्षा होती हैं।
- धन लाभ हेतु घर के पूजन स्थान में चांदी का नवरत्न जड़ीत स्वस्तिक स्थपित करना विशेष लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निरंतर घन लाभ हेतु चौखट की एक ओर कुमकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर चावल की ढेरी बनाकर उस पर एक सुपारी रख कलावा बांधकर नियमित पूजन करना लाभप्रद होता।
- धन लाभ के लिये स्वस्तिक से एक विशेष उपाय और किया जाता है। इस में दहलीज के दोनों ओर स्वस्तिक बनाकर उसकी पूजा करें। स्वस्तिक पर चावल की ढेरी बनाकर एक-एक सुपारी पर कलवा बांधकर उसे ढेरी पर रखें इस उपाय से भी धन में लाभ मिलता है।

***

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।
कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।
यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र		
श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> Shop Online | Order Now

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	द्वितीया तृतीया	08:31-29:40	उत्तरा फाल्गुनी	11:10	साध्य	09:31	कौलव	08:31	कन्या	-
2	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्थी	26:4	हस्त	08:32	शुक्ल	25:53	वणिज	15:30	कन्या	06:45
3	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	पंचमी	23:40	चित्रा -स्वाती	06:23-28:54	ब्रहम	22:46	बव	12:47	तुला	-
4	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	षष्ठी	21:59	विशाखा	28:07	इन्द्र	20:15	कौलव	10:44	तुला	11:40
5	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	सप्तमी	21:06	अनुराधा	28:08	वैधृति	18:23	गर	09:26	वृश्चिक	-
6	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	अष्टमी	21:00	जेष्ठा	28:57	विषकुंभ	17:09	विष्टि	08:57	वृश्चिक	-
7	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	नवमी	21:39	मूल	-	प्रीति	16:33	बालव	09:14	वृश्चिक	17:22
8	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	दशमी	22:57	मूल	06:28	आयुष्मान	16:29	तैतिल	10:14	धनु	-
9	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	एकादशी	24:45	पूर्वाषाढ़	08:35	सौभाग्य	16:52	वणिज	11:48	धनु	15:13
10	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	द्वादशी	26:54	उत्तराषाढ़	11:08	शोभन	17:33	बव	13:47	मकर	-
11	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	त्रयोदशी	29:14	श्रवण	13:59	अतिगंड	18:27	कौलव	16:03	मकर	-
12	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	-	धनिष्ठा	16:57	सुकर्मा	19:27	गर	18:26	मकर	03:29
13	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	07:39	शतभिषा	19:58	धृति	20:27	वणिज	07:39	कुंभ	-
14	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	पूर्णिमा	10:02	पूर्वाभाद्रपद	22:55	शूल	21:25	बव	10:02	कुंभ	16:12

15	रवि	आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	12:19	उत्तरा भाद्रपद	25:44	गंड	22:17	कौलव	12:19	मीन	-
16	सोम	आश्विन	कृष्ण	द्वितीया	14:27	रेवति	28:21	वृद्धि	23:00	गर	14:27	मीन	-
17	मंगल	आश्विन	कृष्ण	तृतीया	16:21	अश्विनी	-	ध्रुव	23:30	विष्टि	16:21	मीन	04:22
18	बुध	आश्विन	कृष्ण	चतुर्थी	17:57	अश्विनी	06:43	व्याघात	23:45	बालव	17:57	मेष	-
19	गुरु	आश्विन	कृष्ण	पंचमी	19:10	भरणी	08:44	हर्षण	23:40	कौलव	06:37	मेष	15:12
20	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	षष्ठी	19:54	कृतिका	10:19	वज्र	23:09	गर	07:36	वृष	-
21	शनि	आश्विन	कृष्ण	सप्तमी	20:03	रोहिणि	11:21	सिद्धि	22:10	विष्टि	08:03	वृष	22:30
22	रवि	आश्विन	कृष्ण	अष्टमी	19:33	मृगशिरा	11:45	व्यतिपात	20:39	बालव	07:53	मिथुन	-
23	सोम	आश्विन	कृष्ण	नवमी	18:22	आद्रा	11:29	वरियान	18:33	तैतिल	07:03	मिथुन	-
24	मंगल	आश्विन	कृष्ण	दशमी	16:29	पुनर्वसु	10:30	परिग्रह	15:52	विष्टि	16:29	मिथुन	04:50
25	बुध	आश्विन	कृष्ण	एकादशी	13:58	पुष्य	08:52	शिव	12:40	बालव	13:58	कर्क	-
26	गुरु	आश्विन	कृष्ण	द्वादशी	10:54	आश्लेषा -मघा	06:39 - 28:01	साध्य	09:00	तैतिल	10:54	कर्क	06:40
27	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	त्रयोदशी-चतुर्दशी	07:26-**27:43**	पूर्वा फाल्गुनी	25:4	शुभ	24:43	वणिज	07:26	सिंह	-
28	शनि	आश्विन	कृष्ण	अमावस्या	23:56	उत्तरा फाल्गुनी	22:02	शुक्ल	20:22	चतुस्पाद	13:49	सिंह	06:19
29	रवि	आश्विन	शुक्ल	प्रतिपदा	20:16	हस्त	19:06	ब्रह्म	16:06	किस्तुघ्न	10:04	कन्या	-
30	सोम	आश्विन	शुक्ल	द्वितीया	16:55	चित्रा	16:28	इन्द्र	12:03	बालव	06:32	कन्या	05:45

सितम्बर 2019 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	द्वितीया-तृतीया	08:31-29:40	बाबू दोज, हरितालिका तीज व्रत, बड़ी तीज, वाराहावतार जयंती, गौरी तृतीया व्रत, केवड़ा तीज, गौरी तीज (ओड़ीसा), त्रिलोक तीज
2	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्थी	26:4	सिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत (चं. अस्त.रा.09.03), श्रीगणेशोत्सव 11 दिन, श्वेतांबर पर्युषण समाप्त, श्रीकृष्ण-कलंकनी चतुर्थी, शास्त्रोक्त मत से आज के दिन चंद्रमा का दर्शन सर्वथा निषिद्ध, पत्थर (ढेला) चौथ, चौठ चंद्र (मिथि.), सौभाग्य चतुर्थी (प.बं), शिवा चतुर्थी, सरस्वती पूजा (ओड़ीसा), लक्ष्मी पूजा, जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) (श्वेतांबर जैन), मूलसूत्रवांचन (श्वेतांबर जैन),
3	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	पंचमी	23:40	ऋषिपंचमी-मध्याहन में सप्तर्षि पूजन, गर्ग एवं अंगिरा ऋषि जयंती, आकाश पंचमी (जैन), जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष), गुरु पंचमी (ओड़ीसा), रक्षापंचमी (प.बं), दशलक्षण व्रत 10 दिन एवं पुष्पांजलि व्रत 5 दिन (दिगंबर जैन), आकाश पंचमी (जैन),
4	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	षष्ठी	21:59	सूर्यषष्ठी व्रत, लोलार्क षष्ठी (काशी), बलदेव छठ-श्रीबलराम जयंती महोत्सव (ब्रज), ललिता षष्ठी, मंथन षष्ठी (प.बं), स्कन्द कुमार षष्ठी व्रत, सोमनाथ व्रत (ओड़ीसा), गौरी का आवाहन, चंदनषष्ठी (जैन), कालू निर्वाण दिवस (जैन) मोरयाई छठ,
5	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	सप्तमी	21:06	मुक्ताभरण सप्तमी व्रत, संतान सप्तमी व्रत, ललिता सप्तमी (प.बं-ओड़ीसा), नवाखाई, अपराजिता पूजा, ज्येष्ठागौरी का पूजन, महालक्ष्मी व्रत-अनुष्ठान प्रारंभ (चंद्रोदय कालीन अष्टमी में), निर्दोष-शीलसप्तमी (दिगंबर जैन),
6	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	अष्टमी	21:00	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव (बरसाना-मथुरा), दुर्वाष्टमी व्रत, दधीचि जयंती, ज्येष्ठागौरी का विसर्जन, नि:शल्य अष्टमी (दिग.जैन), दुबली आठम (श्वेत.जैन),
7	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	नवमी	21:39	श्रीमद्भागवत जयंती-सप्ताह प्रारंभ,नन्दानवमी, अदुख नवमी, श्रीचंद्र जयंती, तल नवमी (प.बं- ओड़ीसा),
8	रवि	भाद्रपद	शुक्ल	दशमी	22:57	दशावतार व्रत, तेजा दशमी, सुगन्ध दशमी (जैन), महारविवार व्रत

9	सोम	भाद्रपद	शुक्ल	एकादशी	24:45	जल झूलनी एकादशी, पद्मा एकादशी, पार्श्व परिवर्तनी एकादशी, धर्मा-कर्मा एकादशी, डोल ग्यारस (म.प्रदेश),
10	मंगल	भाद्रपद	शुक्ल	द्वादशी	26:54	श्रवण नक्षत्रयुता द्वादशी व्रत, श्रीवामन अवतार जयंती, भुवनेश्वरी महाविद्या जयंती, श्यामबाबा द्वादशी, गोवत्स द्वादशी, बछवारस (राज.), श्रवण द्वादशी, इन्द्रपूजा प्रारंभ, वामन जयंती,
11	बुध	भाद्रपद	शुक्ल	त्रयोदशी	29:14	ओणम (द.भारत), प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्र व्रत प्रारंभ, रत्नत्रय व्रत 3 दिन (दिगंबर जैन)
12	गुरु	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	-	अनन्त चतुर्दशी, 10 दिन का श्रीगणेशोत्सव पूर्ण, पार्थिव गणेश प्रतिमा विसर्जन (महाराष्ट्र), इन्द्र गोविन्द पूजा (ओड़ीसा),
13	शुक्र	भाद्रपद	शुक्ल	चतुर्दशी	07:39	स्नान-दान हेतु उत्तम भाद्रपदी पूर्णिमा (07:39 बजे पश्चयात), गोत्रिरात्र व्रत पूर्ण, श्रीमद्भागवत सप्ताह पूर्ण, श्रीसत्यनारायण पूजा कथा, लोकपाल पूजा पूर्णिमा, शिव परिवर्तनोत्सव महालय आरंभ पूर्णिमा का श्राद्ध (07:39 बजे पश्चयात), अम्बाजी का मेला,
14	शनि	भाद्रपद	शुक्ल	पूर्णिमा	10:02	स्नान-दान हेतु उत्तम भाद्रपदी पूर्णिमा (10:02 बजे बजे पूर्व), संन्यासियोंका चातुर्मास पूर्ण, शास्त्रोक्त मत से चातुर्मास के व्रतधारी के लिए आश्विन में दूध वर्जित हैं। पितृपक्ष का तर्पण प्रारंभ, प्रतिपदा का श्राद्ध 10:02 बजे पश्चयात, अशून्य शयन व्रत, क्षमावाणी पर्व (दिगंबर जैन)
15	रवि	आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	12:19	प्रतिपदा का श्राद्ध 12:19 बजे पूर्व, द्वितीया का श्राद्ध, दूज का श्राद्ध, 12:19 बजे पश्चयात, दूज का श्राद्ध, षोडषकारण व्रत पूर्ण
16	सोम	आश्विन	कृष्ण	द्वितीया	14:27	द्वितीया का श्राद्ध, दूज का श्राद्ध 14:27 बजे पूर्व, तृतीया श्राद्ध, तीज का श्राद्ध 14:27 बजे पश्चयात,
17	मंगल	आश्विन	कृष्ण	तृतीया	16:21	संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, अंगारक गणेश चतुर्थी (चं.उदय. रा. 08:26 पर) विश्वकर्मा पूजा, भौम विश्वकर्मा पूजा, सूर्य की कन्या संक्रान्ति 13:09 बजे, तृतीया श्राद्ध, तीज का श्राद्ध (तृतीया 16:21 तक)
18	बुध	आश्विन	कृष्ण	चतुर्थी	17:57	चतुर्थी का श्राद्ध, चौथ का श्राद्ध,
19	गुरु	आश्विन	कृष्ण	पंचमी	19:10	पंचमी का श्राद्ध

20	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	षष्ठी	19:54	षष्ठी का श्राद्ध, छठ का श्राद्ध, कपिला षष्ठी, चंद्र षष्ठी व्रत,
21	शनि	आश्विन	कृष्ण	सप्तमी	20:03	सप्तमी का श्राद्ध, सातम का श्राद्ध, भानु सप्तमी पर्व (विद्वानों के मत से सूर्य ग्रहण तुल्य फलप्रद), साहिब सप्तमी, जीवित्पुत्रिका व्रत (चंद्रोदय व्यापिनी), जीउतिया व्रत,
22	रवि	आश्विन	कृष्ण	अष्टमी	19:33	अष्टमी का श्राद्ध, आठम का श्राद्ध, कालाष्टमी व्रत, महालक्ष्मी अष्टमी,महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, गयामध्याष्टमी, गजगौरी अष्टमी, जीउतिया व्रत, जीवित्पुत्रिका व्रत (सूर्योदय व्यापिनी), जीवित्पुत्रिका व्रत का पारण (चंद्रोदय व्यापिनी),
23	सोम	आश्विन	कृष्ण	नवमी	18:22	नवमी का श्राद्ध, नोम का श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती स्त्रियों (सुहागिनों) का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत का पारण (सूर्योदय व्यापिनी)
24	मंगल	आश्विन	कृष्ण	दशमी	16:29	दशमी का श्राद्ध,
25	बुध	आश्विन	कृष्ण	एकादशी	13:58	इंदिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध, ग्यारस का श्राद्ध 13:58 बजे पूर्व,, **13:58 बजे** पश्चयात द्वादशी का श्राद्ध, बारस का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, संन्यासियों-यति व वैष्णवों का श्राद्ध, रेंटिया बारस,
26	गुरु	आश्विन	कृष्ण	द्वादशी	10:54	10:54 बजे पूर्व द्वादशी का श्राद्ध, बारस का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, संन्यासियों-यति व वैष्णवों का श्राद्ध, रेंटिया बारस, 10:54 बजे पश्चयात त्रयोदशी का श्राद्ध, तेरस का श्राद्ध, योदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत
27	शुक्र	आश्विन	कृष्ण	त्रयोदशी-चतुर्दशी	07:26-27:43	मासिक शिवरात्रि व्रत, दुर्मरण श्राद्ध, (आज के दिन शस्त्र, विष, अग्नि, जल, दुर्घटना आदि से अकाल मृत्यु में मरे व्यक्ति का श्राद्ध), चतुर्दशी का श्राद्ध,
28	शनि	आश्विन	कृष्ण	अमावस्या	23:56	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम आश्विनी अमावस्या, पितृविसर्जनी अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, आज अज्ञात मरण तिथिवाले पूर्वजों का श्राद्ध अमावस्या में किया जाना शास्त्रोचित रहेगा, नाती द्वारा नाना-नानी का श्राद्ध, शनि अमावस्या, महालया समाप्त
29	रवि	आश्विन	शुक्ल	प्रतिपदा	20:16	शारदीय नवरात्र प्रारंभ, प्रथम नवरात्र कलश स्थापना, घट स्थापना 06:13 बजे से 07:40 बजे तक (01 घण्टा 27 मिनट), महाराज अग्रसेन जयंती, ध्वजारोपण
30	सोम	आश्विन	शुक्ल	द्वितीया	16:55	द्वितीय नवरात्र, नवीन चंद्र दर्शन, रेमन्त पूजन,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‍भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‍भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

सितम्बर 2019 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग		द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)	
01	सुबह 11:12 अगले दिन सूर्योदय तक	21	दोपहर 11:23 से रात 08:21 तक
05	प्रातः 04:08 अगले दिन 05:24 तक	29	रात 08:14 से अगले दिन 06:13 तक
08	सुबह 06:03 से 06:29 तक	विघ्नकारक भद्रा	
15	सुबह 06:06 से रात 01:44 तक	02	दोपहर 03:21 से रात 01:54 तक (पाताल)
17	सुबह 06:06 से अगले दिन प्रात: 06:44 तक	05	रात 08:49 से अगले दिन 08:40 तक (स्वर्ग)
21	सुबह 05:28 से अगले दिन 11:22 तक	09	दोपहर 11:41 से रात 12:31 तक (पाताल)
29	सुबह 05:31 से अगले रात 07:07 तक	13	सुबह 07:35 से रात 08:49 तक (पृथ्वी)
त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)		17	रात 03:36 से संध्या 04:33 तक (स्वर्ग)
01	सुबह 05:23 से सुबह 08:21 तक	20	रात 08:11 से अगले दिन सुबह 08:21 तक (स्वर्ग)
10	सुबह 06:03 से दोपहर 11:09 तक	24	सुबह 05:45 से संध्या 04:42 तक (पृथ्वी)
		27	सुबह 07:32 से संध्या 05:40 तक (पृथ्वी)

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach	3250	शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach	1050

वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10)	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10)	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person)	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga)	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person)	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person)	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person)	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach	820

वाणी पुष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire **Bangkok**	**(बैंकोक** पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- ❖ पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ❖ लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- ❖ नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ❖ पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- ❖ प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- ❖ प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ❖ अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ❖ ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ❖ पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- ❖ यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ❖ हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ❖ पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- ❖ अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

सितम्बर 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

SEP -2019